संस्कृतकाव्यकौमुदी

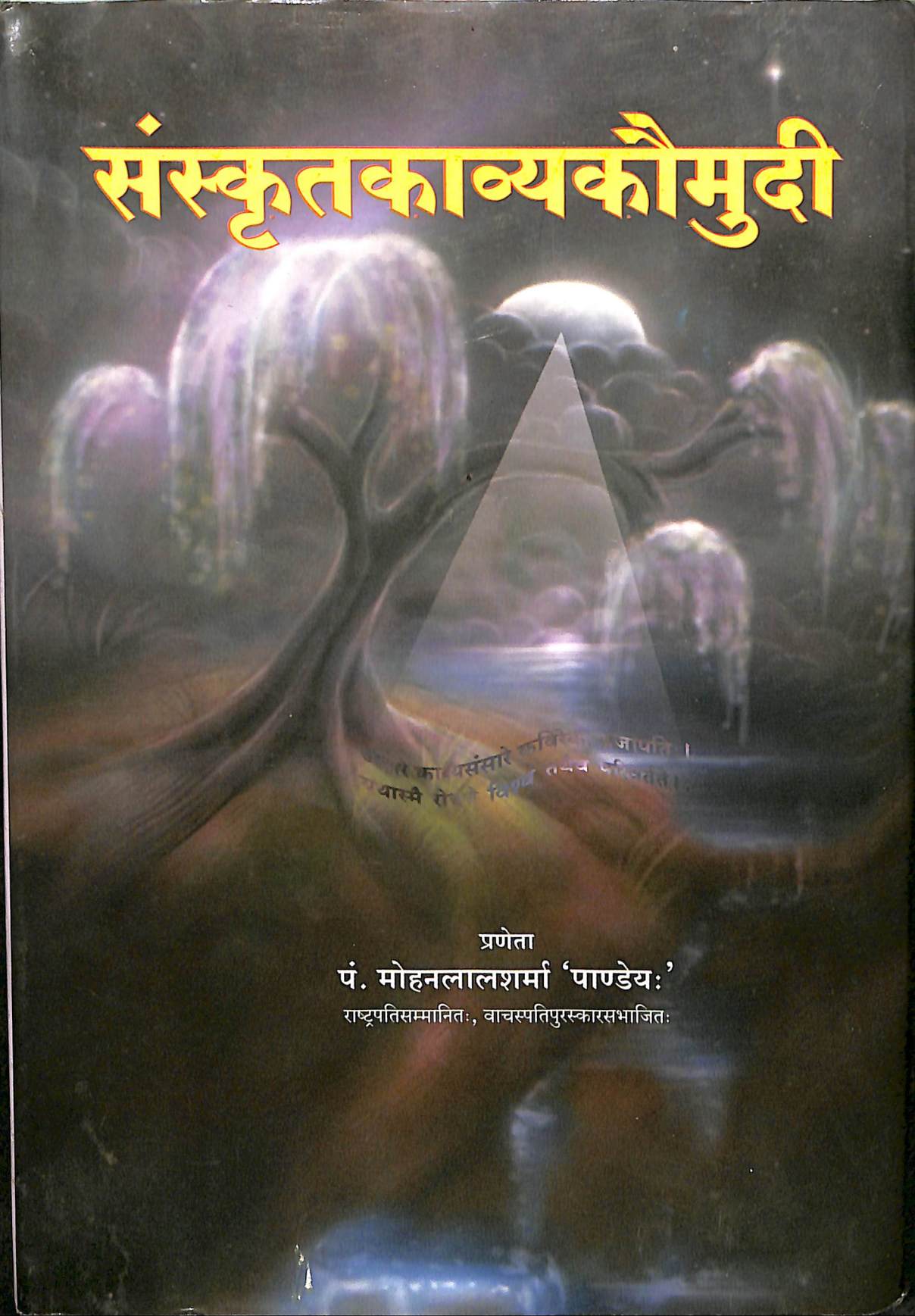

प्रणेता

पं. मोहनलालशर्मा 'पाण्डेयः'

राष्ट्रपतिसम्मानितः, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजितः

संस्कृतकाव्यकौमुदी

प्रणेता

पं. मोहनलालशर्मा 'पाण्डेयः'

राष्ट्रपतिसम्मानितः, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजितः

संस्कृतकाव्यकौमुदी

प्रणेता

पं. मोहनलालशर्मा 'पाण्डेयः'

राष्ट्रपतिसम्मानितः, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजितः

सम्पादकः

डॉ. ताराशंकरशर्मा 'पाण्डेयः'

प्रोफेसर एवं अध्यक्षः साहित्यविभागः

ज.रा.राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालयः, जयपुरम्

राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर

ISBN : 978-81-88741-36-6

© : लेखकाधीन

प्रकाशक : **राष्ट्रिय संस्कृत साहित्य केन्द्र**
222, 'सरस्वती सदन'
बिहारी जी की गली, सोंखियों का रास्ता,
किशनपोल बाजार, जयपुर-1

संस्करण : 2010 (प्रथम)

मूल्य : 250/-

टाईप सैटिंग : आइडियल कम्प्यूटर सेन्टर,
3580, जौहरी बाजार, जयपुर

मुद्रक : शीतल प्रिन्टर्स, जयपुर

युगल किशोर मिश्र
कुलपति
Yugal Kishor Mishra
Vice-Chancellor

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
मदाऊ, भांकरोटा, जयपुर - 302 026
JAGADGURU RAMANANDACHARYA
RAJASTHAN SANSKRIT UNIVERSITY
Madau, Bhankrota, Jaipur - 302 026
Phone : 0141 - 5132001 (O)
0141 - 5132002 (R)
Website : jrrsanskrituniversity.ac.in

शिवसङ्कल्पः

विदन्त्येव विद्वांसो यद् गीर्वाणवाण्यामृग्वेदादारभ्याद्य यावत् स्तुतिभणितीनां वैपुल्यं विराजते। संस्कृतवाङ्मये न खलु देवादीनामपितु भूमि-नद-नदी-गिरि-वन-राष्ट्रप्रभृतिनैसर्गिकस्वरूपभावानां, लोकनायकानां, विभूतिमत्सत्त्वानाञ्च रसभरिताः स्तुतयः समुपलभ्यन्ते। काव्यात्मकस्तुतिसाहित्यस्य चरमं प्रयोजनं स्थावरजङ्गमात्मके सृष्टिप्रपञ्चे भगवद्विभूतिदर्शनं तन्महिमवर्णनमुखेन च भगवदुपासनमेव। अनयोपासनया चित्तं निर्मलं सञ्जायते, निर्मले च चित्ते भगवद्रूपं प्रतिबिम्बत्वमाप्नोति।

अतश्च भगवद्भावुकानां देववाण्यां पद्यनिर्माणे आशुकविरूपेण प्रख्यातानां पण्डितवरेण्यश्रीमोहनलालपाण्डेयानां काचन विशिष्टा कृतिः **'संस्कृतकाव्यकौमुदी'**ति नामधेया प्रकाशपथमानीयत इति महत्प्रमोदास्पदं भगवद्विभूतिसमुपासकानां सहृदयानां काव्यरसिकानाम्। अत्र दर्शनपारद्रष्टृत्वं, काव्यसौष्ठवं, शास्त्रैश्वर्यञ्च पदे-पदे स्फुटितमस्ति। विद्या-ज्ञानानुभूति-श्रवण-मनन-चिन्तन-निदिध्यासन-साधनासम्पन्ना आचार्यश्रीपाण्डेयवर्या अस्मिन् चरमे वयस्यप्येतादृशानां काव्यानां विरचनं कुर्वन्तोऽस्माकं गौरवं वर्द्धयन्तीति हर्षप्रकर्षविषयः। आचार्यवर्येभ्यः सश्रद्धं स्वीयं सद्भावकुसुमाञ्जलिं समर्प्य संस्कृतकाव्यकौमुदीयं परमात्मनः प्रीतये स्यादिति वाग्देवीमभ्यर्थये।

जयपुरम्

युगलकिशोरमिश्रः
(युगलकिशोरमिश्रः)
कुलपतिः
ज.रा.राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य

डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी
आचार्य

संस्कृत विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी-221002

शुभाशंसनम्

सरसं काव्यमास्वाद्य मोहनलालशर्मणः।
भृङ्ग इवाब्जलग्नोऽपि तृप्तिं नो लभते मनः॥

अनिर्वचनीयां काम्यभिख्यां बिभर्ति सेयं **'संस्कृतकाव्यकौमुदी'** वस्तुतो राष्ट्रपतिपुरस्कृतस्याऽऽचार्यप्रवरस्य श्रीमोहनलालशर्म-पाण्डेयमहाभागस्य **'कविकीर्तिकौमुदी'**। संस्कृतसाहित्यसुधासिन्धौ ये विराजन्ते नित्यमम्लानविकचपद्मनिकराः कविवरास्तेषु सश्रीकोऽयं नितरां शोभते कवितल्लजोऽग्रजो महाकवीनां विकिरति च दिशिं-दिशि नन्दनवने पारिजात इव यशोऽनुबन्धिकाव्यसुगन्धिं पण्डितमोहनलालशर्मपाण्डेयः।

नेत्रोत्सवं वितन्वतीयं 'संस्कृतकाव्यकौमुदी' मया सादरं सुनिपुणं सहृदयधियाऽवलोकिता। यथावसरं विभिन्नकालेषु पाण्डेयवर्येण विरचितानां संस्कृतकवितानामिदं सङ्कलनम्। अत्र सङ्कलितानि पद्यानि नैकवर्णविच्छित्तिमयानि विभिन्नशीर्षकान्तर्गतानि विद्योतन्ते। 'प्रणतयः', 'प्रशस्तिका', 'समस्यासौहित्यम्', 'राष्ट्रियम्', 'वैदुषीवैभवम्', 'लोकनायकाः' इत्येते सन्ति सङ्कलनवर्गाः। एतेषु प्रायशः त्रिषष्टिमिताः कविताः सुललितछन्दोविधानतो विरचय्य संस्कृतकाव्योद्यानवीथिषु नवपल्लविताः सुमनोभरविलासिता मधुमधुरगन्धभरिता लता इव महता स्नेहेन कविहृदयेन संयोजिताः।

विषयानुरूपा भाषाऽनवद्या रसानुरोधि च छन्दो निर्दोषमित्येतद्वैशिष्ट्यं काव्यस्य कवेर्बिभर्ति सर्वत्र। अत्र मनोहरं काव्यं न

केवलं पुष्णाति वैदुष्यं कविवर्यस्याऽपित्वाविष्करोति च सहृदयत्वं तस्य। साहित्यसौहित्य-सौन्दर्यमण्डितासु कवितासु न केवलं कवेः कल्पनाः समुच्छलन्ति, अपितु राष्ट्रं प्रति, समाजं प्रति, पूज्यचरितानि प्रति हार्दिकः सद्भावः यथार्थं समुदेति। रससिद्धः प्रसिद्धोऽयं कविः सूत्रधार इव यथा रमते तथैव कवितापुत्तलिका रुचिरं नृत्यति। किमधिकं, 'संस्कृतकाव्यकौमुदी'यं सहृदयानां सुहृदये पदं निदधातु, काव्यरचनाप्रवृत्तानां नवकवीनां कृते आदर्शतां विदधातु संस्कृतकवितानुरागिणां कृते श्रोतृपेयतां सन्दधातु, अपि च कृतकाव्यकलाकौतुकाय कविप्रजापतये श्रीमोहनलालशर्मपाण्डेयमहाभागाय यशोभरमुपायनमक्षुण्णमजस्रं प्रददात्विति शम्॥

प्रो. प्रभुनाथद्विवेदी
वाराणसेयः।

पुरोवाक्

भारत की अमूल्य सांस्कृतिक निधि, विश्व की भाषाओं में प्राचीनतम एवं समृद्धतम भाषा संस्कृत के साहित्य का इतिहास सर्वाधिक सुदीर्घ है। यह विश्वजनीन मान्यता निर्विवाद रूप से स्थापित हो गई है कि मानव के पुस्तकालय की सर्वप्रथम पुस्तक है 'ऋग्वेद' जो पद्यबद्ध है। छान्दस भाषा संस्कृत का उद्गम स्रोत है। वेद उसी में लिखी कविता है अतः विश्व की प्राचीनतम कविता इस देश में गूँजी यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। तब से आज तक संस्कृत में कविता लिखी जा रही है। वेद के ऋषि से लेकर आदिकवि वाल्मीकि से होते हुए आज तक चला आ रहा काव्य-रचना का इतिहास संस्कृत को सही अर्थों में अमरगिरा सिद्ध करता है। काव्य-सर्जन में प्रत्येक युग में परिलक्षित होने वाला नवोन्मेष जो कवि-प्रतिभा की कसौटी है, संस्कृत की कविता को युग-युग में नवीकृत करता रहता है, वह संस्कृत भाषा को **'निर्जरगिरा'** भी बनाता है। यह इस नवोन्मेष शालिनी काव्य-रचना की निरन्तरता के कारण भी चिरयुवती बनी रहती है उसे सचमुच **'पुराणी युवतिः'** कहा जा सकता है। इसी विशेषण से वेद के ऋषि ने उषा को संबोधित किया था-**'पुराणी देवी युवतिः पुरन्धिः।'** संस्कृत कविता भी जरारहित है, अमर है।

संस्कृत काव्य रचना के इतिहास ने अनेक युग देखे हैं, अनेक मोड़ लिए है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन भी हुए हैं, युगानुरूप कथा और

शिल्प की नवीनता भी इसमें दृष्टिगोचर हुई है किन्तु अनेक ऐसे घटक हैं जो सहस्राब्दियों से इसमें यथावत् बने हुए हैं। कथ्य की दृष्टि से देखें तो यह स्पष्ट होगा कि वेदकालीन ऋषि जिस प्रकार इन्द्र, वरुण या अर्यमा की प्रशस्ति में स्तोत्र लिखता था उसी प्रकार की स्तोत्र रचना मध्यकाल से होते हुए आज तक चली आ रही है चाहे उन स्तोत्रों के वर्ण्य कभी मध्यकालीन राजवंश हो जाते हों, या जननायक हो जाते हों। ऋतुवर्णन अथवा अलंकृत शैली में युद्धवर्णन प्रत्येक युग में संस्कृत कवि द्वारा लिखे जाते रहे हैं। शिल्प की दृष्टि से देखें तो अनुष्टुप् जैसे छन्द जो सहस्राब्दियों पूर्व वेद में प्रयुक्त हुए, आज भी काव्य रचना के वाहक बने हुए हैं। छन्दःशास्त्र ने अनेक नई करवटें लीं, जयदेव जैसे कवियों ने गीत रचना भी की, आज के युग के कवि सरस गजलें भी लिख रहे हैं किन्तु प्राचीन छन्दों का वैभव भी यथावत् बना हुआ है। क्लासिकल या श्रेण्य प्राचीन भाषाओं में ही यह विशेषता पाई जाती है कि उनमें कालान्वय या युगपरिवर्तन के फलस्वरूप अनेक परिवर्तन अवश्य आते हैं किन्तु प्राचीन परम्पराएँ लुप्त नहीं होती, वे भी समानान्तर रूप से बनी रहती हैं।

अंग्रेजी जैसी आधुनिक भाषाओं में ग्रीक या लैटिन की तरह मध्यकाल में महाकाव्य अर्थात् एपिक लिखने की गरिमामय परम्परा सुविदित है। मिल्टन जैसे महाकवियों को कौन नहीं जानता जो होमर और दांते जैसे महाकवियों की परम्परा की अविभाज्य कड़ी हैं किन्तु जब युगपरिवर्तन हुआ और नई काव्य विधाओं का उद्भव हो गया तो महाकाव्य लिखने की परिपाटी भी समाप्त हो गई। आज अंग्रेजी जैसी आधुनिक भाषाओं में कोई एपिक लिखे तो उसे संग्रहालय या म्यूजियम में परिरक्षणीय अजूबा ही माना जाएगा। इसके विपरीत संस्कृत जैसी भाषाओं में (संस्कृत परिवार की हिन्दी, मैथिली आदि अन्य भाषाओं में भी) महाकाव्य लिखने वाले कविवर नगर-नगर में मिलेंगे। यह है संस्कृत के कालजयी साहित्य की परम्परा के सातत्य का एक विशिष्ट आयाम।

यह भी सौभाग्य की बात है कि यह सातत्य मध्यकालीन युगों की विपरीत स्थितियों में भी बना रहा, उन अंचलों में भी बना रहा जिनमें संस्कृत भाषा को विशेष प्रश्रय नहीं था। इस देश की जो श्रद्धा, संस्कृति और संस्कृत के प्रति रही है उसके कारण संस्कृत सर्जन का यह सातत्य आज तक बना हुआ है। राजस्थान जैसे राज्यों में तो जहाँ के राजवंशों ने संस्कृत विद्वानों, कवियों, पुरोहितों, ज्योतिषियों, राजगुरुओं आदि को विशेष सम्मान देकर सांस्कृतिक परम्परा को अक्षुण्ण रखने का व्रत-सा ले रखा था, संस्कृत का अध्ययन और उसमें शास्त्र लेखन और काव्य रचना की अनवरत धारा बनी रहनी ही थी। यही कारण है कि राजस्थान की उन सभी रियासतों में संस्कृत के विद्वान्, कवि, लेखक, अध्यापक आदि पिछली सदियों में भी होते रहे, शिष्यों को विद्या-दान करते रहे। इसके फलस्वरूप ही इस प्रकार की जनश्रुतियाँ आज तक अक्षुण्ण हैं, कि जयपुर जैसी नगरी को अपरा काशी कहा जाता था, बूंदी जैसी नगरी को छोटी काशी आदि।

जयपुर में तो इसके स्थापना काल से ही संस्कृत काव्य रचना का अविरल इतिहास उपलब्ध है। सवाई जयसिंह (1727-1736 ई.) ने जब जयपुर बसाया तो भारत के विभिन्न अंचलों से विद्वानों को यहाँ बुलाकर बसाया गया चाहे वे जयसिंह द्वारा किए गए अश्वमेध यज्ञ (1734) के प्रसंग में आएं हों या अन्य कार्यों के लिए। दक्षिण भारत (आन्ध्र प्रदेश) से आए एक तैलंग भट्ट परिवार के एक विद्वान् (जिनके वंश में मेरे पिता स्व. भट्टमथुरानाथ शास्त्री कवि शिरोमणि भी हुए) देवर्षि श्रीकृष्ण भट्ट कवि– कलानिधि अश्वमेध यज्ञ में भी सहयोगी बने और जयपुर राजवंश के इतिहास को अमर बनाने वाले महाकाव्य **'ईश्वरविलास'** तथा अन्य अनेक कालजयी काव्यों के प्रणेता भी रहे। उन्होंने जयपुर बसने का आँखों देखा वर्णन अपने काव्यों में किया है। तभी से जयपुर संस्कृत विद्वानों, कवियों, नाटककारों आदि की विहारस्थली रही है।

जयपुर को संस्कृत के सर्जनात्मक साहित्य में अनेक युगान्तरकारी नवोन्मेषों के श्रीगणेश का श्रेय भी जाता है। यहाँ के श्रीकृष्णराम भट्ट जैसे कवियों ने विभिन्न भारतीय भाषाओं का रंगारंग मिश्रण कर स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडित आदि छन्दों की रचना की, भट्टमथुरानाथ शास्त्री ने कविता, दोहा, चौपाई आदि छन्दों में काव्यरचना का तथा गजलों की जीती जागती सर्जना का प्रवर्तन कर युगान्तर उपस्थापित किया। यहाँ स्थापित किए गए आकाशवाणी केन्द्र ने रेडियो रूपकों के रूप में प्रसारणार्थ न केवल प्राचीन नाटकों के रेडियो रूपान्तर किए अपितु नये कथ्यों पर अनेक विद्वानों ने प्रसारणार्थ नये रेडियो रूपक लिखे। आज भी जयपुर में संस्कृत शिक्षा, संस्कृत-वैदुष्य, संस्कृत काव्य सर्जना, संस्कृत पत्रकारिता आदि की वह परम्परा अक्षुण्ण है। अब तो उसे प्रश्रय देने हेतु राजस्थान संस्कृत अकादमी, ज.रा. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय आदि अनेक राजकीय, अर्धराजकीय संस्थान भी कार्यरत हैं जिनमें आधुनिक संस्कृत पीठ जैसी इकाइयाँ भी संस्कृत के सातत्य की देखरेख हेतु स्थापित हैं।

इसी अपरा काशी जयपुर नगरी के सुप्रथित विद्वद्रत्न राष्ट्रपति-सम्मानित पं. मोहनलालपाण्डेय जो राजस्थान शासन के अधीन चल रहे संस्कृत महाविद्यालयों में प्राचार्य आदि पदों पर कार्य कर सेवानिवृत्त हुए हैं, संस्कृत में गद्य और पद्य के उत्कृष्ट सर्जक के रूप में समादृत हैं। इनके लिखे **'पद्मिनी'** नामक उपन्यास को वाचस्पति पुरस्कार और श्रीवाणीअलङ्करण प्राप्त हो चुका है। **'रसकपूरम्'** नामक उपन्यास भी इनकी कृति है जो आचार्य उमेश शास्त्री के हिन्दी उपन्यास का अनुवाद है किन्तु पाण्डेय जी की मौलिक प्रतिभा और प्रौढता उसमें स्पष्ट परिलक्षित होती है। इन्होंने खाडी युद्ध की विषय वस्तु लेकर दूतकाव्य के रूप में एक खण्डकाव्य **'पत्रदूतम्'** भी लिखा है जिसमें आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों का भी वर्णन है। ये स्वयं कर्मकाण्ड में भी परिनिष्ठित हैं।

अतः देवस्तुतियाँ, पूजापद्धतियाँ आदि भी इन्होंने प्रणीत कर प्रकाशित करवाई है जिनमें ध्यान, पूजन आदि के स्वप्रणीत पद्य सम्मिलित हैं।

इस प्रकार प्रौढ़ और उत्कृष्ट गद्यलेखन और काव्य रचना के लिए पाण्डेय जी अनेक दशकों से सुप्रथित हैं। यह हर्षप्रद है कि विभिन्न प्रसंगों में विभिन्न विषयों को लेकर समय समय पर लिखी गई इनकी संस्कृत पद्य रचनाओं का यह संग्रह प्रकाशित हो रहा है जिसमें देवस्तुतियाँ भी सम्मिलित हैं, महापुरुषों की प्रशस्तियाँ भी। जयपुर के वरिष्ठ मनीषियों को सम्मानार्घ्य समर्पित करने हेतु इन्होंने समय-समय पर जो प्रशस्ति पद्य लिखे वे इस संग्रह का विशेष आकर्षण हैं। समस्यापूर्ति की परम्परा संस्कृत जगत् में अनेक शताब्दियों से प्रचलित हैं जिसमें कवि एक पद्यांश को अन्त में समाहित कर पद्यरचना करता है। पाण्डेयजी द्वारा की हुई ऐसी अनेक समस्या पूर्तियाँ भी विभिन्न छन्दों में और विभिन्न विषयों पर **'समस्या-सौहित्यम्'** शीर्षक से इसमें संकलित हैं।

जैसा प्रारम्भ में बताया जा चुका है शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा आदि छन्द अनेक शताब्दियाँ से संस्कृत पद्य रचना के वाहक रहे हैं जो संस्कृत काव्य की विशिष्ट पहचान हैं, उनके गुम्फन में पाण्डेय जी कितने सिद्धहस्त हैं यह इस संकलन को देखकर कोई भी पाठक सहज ही समझ जाएगा। ऐसे छन्दों में इन्होंने विष्णु के चौबीस अवतारों या दत्तात्रेय के चौबीस गुरुओं, शिव की आठ मूर्तियों, नौ दुर्गाओं, नव ग्रहों या रामानन्द के द्वाराचार्यों की जो प्रशस्तियाँ लिखी हैं वह सहस्राब्दियों पुरानी उस स्तोत्र लेखन परम्परा का ओजस्वी प्रतीक है जिसका सन्दर्भ ऊपर दिया गया है। पाण्डेयजी ने इन विषयों पर तो पद्यरचना की ही है, कश्मीर समस्या, करगिल युद्ध, आतंककारियों के विस्फोटों और पिछले दिनों हुए घोटालों आदि समसामयिक विषयों पर भी पद्य लिखे हैं जो इस संग्रह में आपको मिलेंगे।

इस प्रकार विविधवर्णी, विविधविषयक पद्य रचनाओं का यह संकलन पाण्डेयजी की प्रौढ और परिनिष्ठित रचना शैली का प्रमाण तो है ही, सभी तरह के पाठकों के लिए, पद्य रचना के प्रशिक्षुओं और जिज्ञासुओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा और विद्वानों के लिए भी,इसमें कोई सन्देह नहीं। इसके अवतरण के उपलक्ष्य में कविवर पाण्डेयजी को मैं शतशः बधाइयाँ समर्पित करता हूँ।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

भूतपूर्व अध्यक्ष,
राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा
निदेशक संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग,
राजस्थान सरकार
अध्यक्ष, आधुनिकसंस्कृत पीठ,
ज.रा. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर

अध्यक्ष,
मञ्जुनाथ स्मृति संस्थान,
सी/४, पृथ्वीराज रोड़,
जयपुर

अवतरणिका

इस सतरंगी सृष्टि में नाना प्रकार के अद्भुत पदार्थों की सत्ता है जहाँ अन्तरिक्ष से तल, रसातल एवं पाताल तक सूक्ष्म से सूक्ष्मतम और विशाल से विशालतम चराचर तत्त्व अपनी अलौकिकता के लिए ख्यात हैं। इसी प्रकार काव्य-संसार भी अपनी चमत्कारिता लिए हुए समस्त ब्रह्माण्ड में **'शब्दार्थौ'** के रूप में व्याप्त है जिसका एकमात्र प्रजापति कवि ही है जिसके मानस-सागर में पतित काव्यबीज से अलौकिक काव्य-सृष्टि की उद्भावना होती है–

अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्तते।।

इस काव्य-सृष्टि में एक ओर जहाँ अन्तरिक्ष जैसी व्यापकता लिए वेद-वाङ्मय है तो दूसरी ओर सागर जैसी गम्भीर गहराई लिए हुए रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्य हैं। इसी के साथ मेरु, सुमेरु के समान अपनी गगनचुम्बी उत्तुङ्गता के लिए बृहत्त्रयी परिगणित माघ, किरात, नैषध प्रसिद्ध हैं और लघुत्रयी-समाविष्ट कुमारसम्भव, रघुवंश और मेघदूत हैं तथा अरावली-पर्वतमाला सदृश शृंखला-बद्ध अन्य काव्य हैं जहाँ अङ्गाङ्गित्व व्यपेक्षया काव्यवाक्यों का महावाक्यत्व सिद्ध है ही। ऐसे ही शृंखला-बद्ध अन्य महाकाव्यों एवं लघुकाव्यों की सत्ता भी है चाहे वे किसी भी गद्य-पद्य चम्पू आदि विविध विधाओं में रचित हैं।

काव्यों की ऐसी परम्परा में लघुकाव्य की अपनी अलग ही महत्ता है चाहे वह मुक्तक, युग्मक, सान्दानितक, कलापक या कुलक रूप में निबद्ध हो या फिर शतकादि रूप में अथवा मुक्तक काव्य संग्रहादि

रूप में, सर्वत्र ही रसानुभूतिरूप चमत्कार सहृदयों के हृदय की कोमलता को कमलकलिकावत् प्रस्फुटित कर किञ्जल्क-कणों से स्पृष्ट करता हुआ अलौकिक आनन्दानुभूति करवाता है।

युगानुरूप निर्माण–

प्राचीन काल से लेकर आज तक काव्यों के रूप में पञ्चक, अष्टक, दशक, विंशतिका, नक्षत्रमालिका तथा पञ्चाशिका आदि भेदों की काव्य-परम्परा प्रसिद्ध ही रही है। लघु मुक्तक-काव्यों का संग्रह-रूप नवीन प्रकल्प सम्भवतः इस शताब्दी के प्रारम्भ में सामने आया है।

इसमें रचनाकार समय समय पर विविध पक्षों, विषयों और विधाओं में रचित अपने लघुकाव्य, कविता, कथा, लघुकथा, एकांकी आदि को संग्रह कर प्रस्तुत करते हुए प्रकाश में लाता है। यह सब वर्तमान युग की अपेक्षा-जन्य है जहाँ आज का मानव अल्पसमय में कुछ अधिक पाना चाहता है चाहे वह भौतिक उपलब्धि हो या फिर आत्मिक-सुखोपलब्धि। ऐसे में साहित्यकार समाज एवं समय की माँग को ध्यान में रखकर रचना करता है नहीं तो इस भौतिकवाद की अन्धी दौड़ में साहित्य और साहित्यकार के लिए जगह कहाँ ? अतः आज वही साहित्यकार जीवित है जो नपे-तुले न्यूनतम शब्दों में सूत्रात्मक शैली से अपने भावों की सरसता वर्तमान के कार्य-भाराक्रान्त निष्ठुर सहृदय तक अल्प समय में पहुँचा दे। यही कारण है कि आधुनिक काल में लघुकाव्य, लघुकथा, लघुनाटक अत्यधिक प्रचलन में आये और शनैः शनैः संग्रह का रूप लेते चले गये।

आज यह प्रथा बहुतायत से दृष्टिगोचर हो रही है- ऐसे संग्रहों में एक विधा में रचित कविताओं, कथाओं, रूपकों को पृथक्-पृथक् रूप से संकलित करना काव्यदृष्टि से और सहृदय पाठकों की अभिरुचि से उपयुक्त सिद्ध होता है। इसमें एक लाभ वर्तमान काल में यह हो रहा है कि ऐसे काव्य-संग्रह विधा की दृष्टि से विभिन्न विश्वविद्यालयों,

शिक्षा- बोर्डों द्वारा विविध पाठ्यक्रमों में निर्धारित किये जा रहे हैं जिसमें छात्रों, जिज्ञासुओं को नवीन विषयों के घटनाक्रमों की अद्यतन जानकारी होना है तथा नवप्रतिभाशाली रचनाकारों को नये प्रकल्प सहज सुलभ हो गये हैं। अत एव आज नव युवा रचनाकार साहित्य को अपनी शैली से नवीन दिशा प्रदान कर रहा है।

नवीनकाव्य संग्रह–

'भारवेरर्थगौरवम्' कहें या **'गागर में सागर'** सूक्ति की चरितार्थकता के दोनों ही सन्दर्भ में विविध विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत साहित्य काव्य, कथा, लघुकथा तथा एकांकी आदि के संग्रह रूप में सहज प्राप्य हैं। इस प्रकार वर्तमान संस्कृत जगत् के शीर्षस्थ साहित्यकारों के भी अनेक काव्यसंग्रह दृष्टिगोचर हो रहे हैं। प्रसिद्ध काव्य-संग्रह के अन्तर्गत **तदेव गगनं सैव धरा**- डा.श्रीनिवासरथ, **आयतिः**- डा. राधावल्लभ त्रिपाठी, **आहुतिः स्वातन्त्र्ययज्ञे** - डा. रामशंकर अवस्थी, **आर्यासहस्रारामम्** - डा. जगन्नाथ पाठक, **आसीच्च मे मनसि** - डा. हर्षदेव माधव, **ईशा**- डा. केशवचन्द्र दाश, **उल्लासिनी**- डा. रामकृष्ण शर्मा, **कोमलकण्टकावलि**- डा. प्रशस्यमित्र शास्त्री, **अग्निशिखा** - डा. पुष्पा दीक्षित, **गगनवाणी**- डा. रामकरण शर्मा, **संस्कृतकवितावल्लरी** - देवर्षि कलानाथ शास्त्री, **मधुच्छन्दा**- डा. हरिराम आचार्य, **विविधपद्यपुष्पावलिः**- डा. कृष्णचन्द्र चतुर्वेदी, **ज्योतिर्ज्वालनम्, उद्बाहुवामनता एवं जीवातुरसमाध्वीकम्**– प्रवीण पण्ड्या आदि प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार संस्कृत कथासंग्रह के रूप में **कथानकवल्ली** एवं **आख्यानवल्लरी** (पुरस्कृत)- देवर्षि कलानाथ शास्त्री, **अनाघ्रातपुष्पम्** - डा. प्रशस्यमित्र शास्त्री, **अपराजिता** - डा. वीणापाणी पाटनी, **अभिनवसंस्कृतकथा** - डा. नारायण शास्त्री कांकर, **इक्षुगन्धा**- डा. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, **कथाकौमुदी एवं श्वेतदूर्वा** - डा. प्रभुनाथ द्विवेदी, **आन्ध्रदेशहास्य-कथासन्निधानम्**– सूर्यनारायण शास्त्री, **उवाच**

कण्डुकल्याणः (व्यंग्यकथासंग्रहः) - प्रमोद कुमार, **ऊर्मिचूडा एवं एकदा** (बालकथासंग्रह) - केशव चन्द्र दास, **एकादशी** - डा. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव', **कथासप्तकम्**- डा. नलिनी शुक्ला, **विश्वकथाशतकम्**- पद्मशास्त्री आदि ख्यात हैं। रूपक संग्रह की श्रेणी में **अवरोहणम्** - केशव शर्मा, **एकांकचमत्कृतिः** - रामकिशोर मिश्र, **एकांकिसंस्कृत-नवरत्नसुषमा एवं एकांकिसंस्कृतनवरत्नमंजूषा** - डा. नारायण शास्त्री कांकर, **चमत्कारः** - कृष्ण लाल, **चतुष्पथीयम्** (प्रहसनसंग्रहः) - डा. राजेन्द्र मिश्र, **नवनाट्यसंवादसुधा** - लक्ष्मीकान्त शर्मा, **पूर्वशाकुन्तलम्** (सप्तध्वनिरूपकम्) - डा. हरिराम आचार्य, **संस्कृतनाट्यवल्लरी** - देवर्षि कलानाथ शास्त्री, **एकांकिसप्तकम्** - मेवाराम कटारा 'पंक', **नाटककदम्बकम्**– डा. वैकुण्ठनाथशास्त्री आदि उल्लेखनीय हैं। प्रो. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय' का **'सारस्वतसौरभम्'** पद्य, गद्य एवं नाट्य का समन्वित संग्रह है।

संस्कृतकाव्यकौमुदी–

इसी परम्परा में ऐसा ही एक काव्य-संग्रह है राष्ट्रपतिसम्मानित वाचस्पति-पुरस्कार सभाजित पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय' की रचनाओं का, जिन्हें हाल ही में **'पद्मिनी'** उपन्यास की रचना के आधार पर दिल्ली के रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्रीवाणी न्यास द्वारा वर्ष 2009 के **श्रीवाणी अलंकरण** के लिए चयनित किया गया है। प्रस्तुत काव्य संग्रह, जिसे **'संस्कृत-काव्यकौमुदी'** की अभिख्या दी गई है, में पं. पाण्डेय द्वारा समय समय पर रचित कविताएँ संकलित हैं जो विभिन्न देवों की स्तुतिरूप, राष्ट्रिय सन्दर्भों से ओतप्रोत तथा संस्कृत विद्वानों के सम्मानार्थ अभिनन्दन स्वरूप प्रशस्तियों के आदर्श रूप हैं। इन कविताओं के विषय की दृष्टि से छः विभाग करते हुए देवों के लिए **'प्रणततितयः'**, विभिन्न काव्यपूरक समस्याओं की तृप्ति स्वरूप **'समस्या-सौहित्यम्'**, देश के प्रति समर्पित भावनाओं की श्रद्धा में

'राष्ट्रियम्', संस्कृत विद्वानों एवं जनसेवकों के अभिनन्दन में **'वैदुषी-वैभवम्'** तथा **'लोकनायकाः'** शीर्षक निर्धारित किये गये हैं जहाँ पं. पाण्डेय ने समसामयिक लोकोपकारक प्रस्तुति के साथ अपनी चिर परिचित प्रौढ शैली में काव्य-सर्जन प्रस्तुत किया है।

यह काव्य संग्रह जहाँ एक ओर देवों के विभिन्न स्वरूपभेदों को प्रस्तुत करता है वहीं समस्यापूरक प्राचीन काव्य-कला को नवीन आयाम के साथ प्रकट करता है। कहीं कवि पाण्डेय राष्ट्र में व्याप्त विभीषिकाओं से व्यथित होकर रचना करते हैं तो अन्यत्र संस्कृत विद्वानों के वैदुष्य से प्रभावित हो मनोगत हर्ष को उनके अभिनन्दन-स्वरूप काव्य में अवतरित करते हैं, इस अभिनन्दनावतरण में लोकनायक भी स्वतः ही स्थान पा जाते हैं। इस प्रकार **संस्कृतकाव्यकौमुदी** नामक यह काव्य-संग्रह संस्कृत जगत् में रचना धर्मिता से जुड़े सर्जकों को एक नवीन चेतना की स्फूर्ति देगा इसी आशा के साथ आपके कर कमलों में यह प्रस्तुत है–

प्रो. (डॉ.) ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'

सम्पादक

॥ श्रीः ॥

का लि दा स सं स्था न म्

वा रा ण सी

२८, महामन:पुरी, वाराणसी -५

दूरभाषः- (०५४२) २५७०६८२

दिनाङ्कः 20|9|15

संस्थापकः
महामहोपाध्यायो
रेवाप्रसाद-द्विवेदी
संस्कृत इमरीटसप्रोफेसर,
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः

राष्ट्रपतिपुरस्कार-
सम्मानम् १९७८त:

साहित्यअकादमी-
पुरस्कारः
१९९१

कल्पवल्लीपुरस्कारः
१९९३

वाचस्पतिपुरस्कारः
१९९७

श्रीवाणीअलंकरणम्
१९९९

विशिष्टपुरस्कारः
उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थानम्
लखनऊ २००२

महामहोपाध्यायः
तिरुपतिसंस्कृतविद्यापीठम्
१९९९

अभिनवकालिदासः
पश्चिमोत्तराम्नायशङ्कराचार्याः
श्रीस्वरूपानन्दसरस्वतीपादाः
२१ सितम्बर, २००३

ऑनरेरीफैलो
एशियाटिकसोसायटी
मुम्बई, १९९५

इमरीटसफैलो
यूजीसी, दिल्ली ९१-९३

संपादयिता संपूर्णस्य
कालिदाससाहित्यस्य
नाट्यशास्त्रस्य २३ अध्यायानाञ्च

संप्रवर्तकः
अलंकारात्मवादस्य

प्रत्यादेष्टा ध्वनिवादस्य

कवयिता
महाकाव्यत्रिकादेः
नाट्यानुशासनस्य

'पद्मिनी'-कवीश्वराय प्रतिनवबाणभट्टाय
पं० श्री मोहनलालशर्मणे पाण्डेयाय प्रणामाः।
भवतां मुक्तमौक्तिका गद्यकृतिः पद्मिनी
अनेकवारेनाद्य यत्र तत्रान्वशीलि प्रापि च
प्रसत्त्यतिशीतिः। अस्त्यत्र प्रवाहः प्रसादमयः,
अनुभूयते तामस्य द्वन्द्वसङ्घर्षः (स्त्रीपुंसयो-
र्मनीतिकः) चित्रत्रयोज्ज्वलवपुष्यत्र ज्योति-
श्चित एव पठिकमानत्तम्। एतस्याः कृते निब-
न्धाय प्रकाशनाय च भवतामभिनन्दनशतानि।

प्रवाहस्त्वत्र मया कालीर्थं प्राप्ते
मुद्रणे श्रुतिमन्त्रकधिकृत्य भवतामिति पश्चात्
पुनरपि सम्यगनुशीलिताहे।

भवाद्दृशेभ्यः वैदग्ध्यप्रतिमाभूतेभ्यः
काशीश्वरौ प्रार्थ्येते सौख्याय मङ्गलाय
च सर्वविधाय काश्यपेन द्विवेदिना
प्रणतेनेन रेवाप्रसादेन

सेवायां पं० मोहनलालशर्मपाण्डेयानाम्
२३८१ बजाने वालों का रास्ता
जयपुर

अपनी कृतियों के आलोक में

पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'

प्रो. (डॉ.) ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'

दृश्य जगत् के भौतिक पदार्थों की विवेचनात्मक-बुद्धि से सूक्ष्मतम बिन्दु तक पहुँचना जितना सरलतम कार्य है उससे कोटिशः प्रगुणित दुष्कर कर्म है चिन्तन के सूक्ष्मतम बिन्दु - जहां विगलित वेद्यान्तर स्पर्शशून्यता का साम्राज्य हो, से पुनः रसानुभूतिजन्य उद्गारोद्वेलित अर्थ से शब्दमय ब्रह्म का साक्षात्कार किया जाना। ऐसी स्थिति में वह अर्थ शब्द- स्पन्दन के रूप में स्वतः प्रादुर्भूत हो किसी सहृदय कवि के मानस समुद्र को आलोडित कर शाब्दिक स्फोटरूप काव्य शरीर धारण करता है। इस ध्रुव सत्य का प्रतिफलन आदिकवि वाल्मीकि तथा उनके काव्य रामायण के रूप में हुआ। इसी सत्य का अनुभव आचार्य आनन्दवर्धन ने इन शब्दों में स्पष्ट किया है -

काव्यस्यात्मा स एवार्थस्तथा चादिकवेः पुरा।
क्रौञ्चद्वन्द्वियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः॥

ईश्वर द्वारा सृष्ट इस जगद्रूप महद् उपवन में दृष्टिपात के प्रारम्भ से **'पद्मिनी'** उपन्यास की रचना के पूर्व तक रमणीयता के बासठ वासन्तिक पर्व **'पत्रदूत'** खण्डकाव्य के प्रणेता कविहृदय पं. मोहन लाल शर्मा पाण्डेय के इस जीवघट में मधुरता का अमृत घोल चुके थे कि अकस्मात् काल के अकाण्ड ताण्डव जन्य शोक-कोक की कर्कश ध्वनि ने इधर कंकर का सा काम किया और उधर जीवनघट से माधुर्य का निस्यन्द बह निकला।

कहते हैं- आह्लादस्वरूप माधुर्य गुण सम्भोग शृङ्गार से अधिक करुण रस में, उससे अधिक विप्रलम्भ में तथा सबसे अधिक शान्त रस में प्राप्त होता है, यही कारण है कि मार्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्री राम जैसा चरित्र भी सीता

के वियोग में उन्मत्तवत् प्रलाप करता है तो आम आदमी की तो बिसात ही क्या ?

ध्वन्यालोक में उल्लिखित - **'निहतसहचरीविरहकातरक्रौंचा-ऽऽक्रन्दजनितः शोक एव श्लोकतया परिणतः'** यह वाक्य पाठान्तर अथवा औचित्यानौचित्य की दृष्टि से चर्चा का विषय भले ही रहा हो परन्तु पं. पाण्डेय के अर्धांग का लोप होना उनके अनुभूत जीवन की सच्चाई को तात्त्विक दृष्टि से प्रकट करने का आधार अवश्य ही बन गया है। संस्कृत साहित्य में **'पद्मिनी'** की रचना उसी का प्रतिफलन है जिसे संस्कृत काव्यजगत् के समालोचक प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र गद्यकाव्य की आख्यायिका श्रेणी में रखें चाहे उपन्यास विधा की श्रेणी में, इससे इस रचना के महत्त्व पर कोई फर्क नहीं पड़ता।

निःशब्द, शान्त, गभीर मानस-सागर के अन्तस्तल में सूक्ष्मतम चिन्तन के बुद्बुदरूप में अवस्थित रस सत्त्व, रज, तम, तीनों में से प्रधान भूत एक तत्त्व की भांति अन्य सभी को गौण कर जलतुम्बिका न्याय से शृंगार आदि किसी एक के रूप में प्रकट हो अनुभूति का विषय बनता है तथा अन्यान्य सभी रस कमल को उर्ध्वगति देने में जलसत्तावत् अपनी स्थिति बनाये रखते हैं।

ऐसी ही स्थिति में साहित्यकार का अन्तर्मन रचना के लिए प्रवृत्त होता है और एक नवीन सर्जन प्रकाश में आता है। श्री पाण्डेय की रचनाओं का श्रीगणेश भी इसी रूप में हुआ।

रचनाओं का वस्तुतत्त्व -

किसी भी कवि की रचनाधर्मिता का प्रेरणास्पद बीज देवता, गुरु आदि के कृपा-फल से ही पल्लवित और पुष्पित होता है। पं. पाण्डेय के गुरु जयपुर के प्रसिद्ध तान्त्रिक शिरोमणि एवं आशुकवि श्री हरिशास्त्री की प्रेरणा ने ही आपको काव्य रचना में छात्र जीवन से ही प्रवृत्त किया, परिणामतः अध्ययन काल में पाठ्य-विषय बिन्दुओं पर काव्य रचना प्रारम्भ की। लगभग अध्ययन समाप्ति के बाद आजीविका के लिए पौरोहित्य कर्म में संलग्न पं. पाण्डेय ने विभिन्न देवों की स्तुति के निमित्त अनेक पद्यों की रचना की।

मुक्तक काव्यों की रचना के लम्बे अन्तराल के बाद आपका प्रथम उपन्यास **'रसकपूरम्'** अनूदित रचना के रूप में सामने आया जिसका मूल

हिन्दी उपन्यास आचार्य उमेश शास्त्री की निर्मिति है जो अब तक अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी आदि आठ भाषाओं में प्रकाशित हो चुका है। उपन्यास की नायिका रसकपूर जो कि एक गणिका रही, ने इतिहास प्रसिद्ध नूरजहाँ के समान जयपुर राज्य के शासक महाराज जगत् सिंह के दिल पर राज करते हुए शासन की बागडोर संभाली और अन्त में षड्यन्त्रों का शिकार हो मृत्युदण्ड प्राप्त किया। पन्द्रह विरामों में विभक्त 217 पृष्ठों का यह 'रसकपूर' उपन्यास अनूदित भले ही हो परन्तु 'शिवराजविजय' की तरह अपनी मौलिकता पृथक् से प्रतिष्ठापित करता है। न जाने कौन से कारण रहें कि पं. पाण्डेय के कविहृदय को ऐतिहासिक घटनाओं ने ही काव्यरचना के लिए प्रेरणा दी। आपकी दूसरी रचना **'पत्रदूत'** शृङ्गार से वीर रस की ओर उन्मुख हो गद्य से पद्य के रूप में प्रकट हुई जिसका कथ्य विश्वप्रसिद्ध ईराक के खाड़ी युद्ध से सम्बद्ध है। इस रचना का सूत्रपात तब हुआ जब 17 जनवरी 1991 को विश्व के मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने ईराक देश पर आक्रमण कर दिया।

आपने कथ्य के तथ्य जुटाने के लिए तत्कालीन प्रमुख समाचार पत्रों से सामग्री संकलित की और कालिदास की दूतकाव्य परम्परा में एक नवीन काव्य 'पत्रदूतम्' ने जन्म लिया। काव्य का नामकरण भले ही प्राचीनता की पृष्ठभूमि से किया गया है परन्तु नवीन कथानक और नये शस्त्रास्त्रों के लिए नवीन शब्दों की निर्मिति ने काव्य साहित्य में युद्ध विद्या के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए नव सर्जन को गति दी है। सम्भवतः यही कारण रहा कि राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा वर्ष 1993 में इस 'पत्रदूत' काव्य को **'माघ पुरस्कार'** के लिए चयनित किया गया। दूतकाव्यों में प्रायः शृङ्गार रस के दोनों पक्षों को स्थान दिया जाता रहा है परन्तु इसके विपरीत पत्रदूत में वीर-रस को आधार बनाकर नवीन कथ्य प्रस्तुत किया गया है इसमें किसी प्रकार का वाद उपस्थापित करना औचित्यपूर्ण नहीं है। इस सन्दर्भ में आचार्य आनन्दवर्धन ने अपना मत पूर्व में ही स्पष्ट कर दिया है–

प्रतायन्तां वाचो निमितविविधार्थामृतरसा।
न वादः कर्त्तव्यः कविभिरनवद्ये स्वविषये॥

-ध्वन्यालोक 4/121

कुछ वर्षों के अन्तराल पश्चात् कवि हृदय ने एक बार फिर करवट बदली और वह पद्य से गद्य के प्रति आकृष्ट होते हुए 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' के सूक्तिशाण पर अपनी परीक्षा देने की ओर उन्मुख हुआ। परिणामतः उपरि उल्लिखित 'पद्मिनी' उपन्यास गद्यकाव्य की रचना हुई यहाँ भी पं. पाण्डेय ने कथावस्तु इतिहास सम्मत ही स्वीकार की है।

16 वीं सदी में मलिक मुहम्मद जायसी ने अपना प्रसिद्ध महाकाव्य 'पद्मावत' जिस पद्मिनी पर लिखा उसके अप्रतिम सौन्दर्य, चरित्र तथा आत्मबलिदान ने भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को अपनी लेखनी चलाने को सदा ही प्रेरित किया, भले ही इतिहासकारों में इस कथा पर मतभेद रहे हों।

राजस्थान में एक मुहावरा अत्यधिक प्रचलित है– **'पूगल देश की पद्मणी'**। इसका आधार है कि पश्चिमी राजस्थान में स्थित पूगल प्रदेश नारी सौन्दर्य की दृष्टि से सदा से ही सर्वातिशायी रहा। इस देश की राजकुमारी पद्मिनी से चित्तौड़ नरेश रत्नसिंह रावल का विवाह हुआ। पं. मोहन लाल पाण्डेय द्वारा इसी पद्मिनी को नायिका बनाकर बारह अध्यायों में विभक्त करते हुए उपन्यास लिखा गया। यह **'पद्मिनी'** उपन्यास तेरहवीं सदी के अन्त और चौदहवीं सदी के प्रारम्भ में चित्तौड़ की वीरभूमि के शासक रावल रत्नसिंह की पट्टमहिषी पद्मिनी के अप्रतिम सौन्दर्य, साहस, प्रेरणाप्रद उत्सर्ग और बलिदान की कथा का प्रस्तुतीकरण है। पद्मिनी के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर ही अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया, यह वही शासक है जिसका उल्लेख साहित्यदर्पण में मिलता है-

सन्धौ सर्वस्वहरणं विग्रहे प्राणनिग्रहः।
अल्लावुद्दीननृपतौ न सन्धिर्न च विग्रहः॥

अल्लाउद्दीन के साथ सन्धि करने का मतलब सर्वस्व-हरण करवाना तथा युद्ध करना प्राणों को संकट में डालना था फिर भी गोरा और बादल जैसे परमवीर योद्धाओं के बल पर ही रावल रत्नसिंह ने युद्ध किया और अन्त में वीरगति प्राप्त की ।

पद्मिनी उपन्यास के रचयिता पाण्डेय ने एक वर्ष के निरन्तर

अध्यवसाय से इस रचना में सभी प्रकार के काव्य गुणों, रसों, अंलकारों तथा अन्यान्य शास्त्रों के विभिन्न पक्षों का जो प्रयोग किया है उसी से के. के. बिरला फाउण्डेशन, नई दिल्ली द्वारा वाचस्पति पुरस्कार के लिए प्रकाशित स्मारिका में पद्मिनी उपन्यास के वैशिष्ट्य को स्वीकार करते हुए इसे इस शताब्दी की एक विशिष्ट रचना माना है।

आपकी चतुर्थ रचना **'नतिततति'** विभिन्न देवों की स्तुतिरूप में विविध छन्दों में रचित है। प्रत्येक पद्य एक वर्ण के प्रयोग से निर्मित है। वर्णमाला की संख्या के अनुसार रचना के कारण इसमें तैंतीस पद्य हैं।

इसके अतिरिक्त आपने गणेश, शिव, कृष्ण, राम एवं हनुमान् की विधि विधान से पूजा के लिए छः पूजा-पद्धतियों की रचना की जिसमें वैदिक मन्त्रों के साथ ही स्वरचित स्तुति-पद्यों का निवेश किया गया है। इन्हें प्रकाशित कर पौरोहित्य कर्म संलग्न विद्वानों एवं श्रद्धालुओं को जनता जनार्दन की सेवार्थ निःशुल्क वितरण किया गया है।

अन्य अप्रकाशित कृतियों में 'अभिनन्दनपत्र-पारिजात', 'समस्यासौहित्यम्', तथा 'लघुकथा-संग्रहः' (जो समय-समय पर आकाशवाणी से प्रसारित हुई) हैं।

भाषा शैली–

भावों की अभिव्यंजना के दृष्टिकोण से प्रत्येक रचनाकार की अपनी एक अलग ही शैली होती है जिसे प्राचीन आचार्यों ने रीति, संघटना आदि नामों से अभिहित किया है। आचार्य वामन ने तो **'रीतिरात्मा काव्यस्य'** कहते हुए उसे आत्मतत्त्व के रूप में ही स्वीकार कर लिया है। यहाँ हम इस आत्म-विषयक विवाद में न पड़ते हुए केवल यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि यदि रचना, पात्र, रस आदि के अनुसार रचनाकार अपनी पद रचना करता है तो वह रचना पाठक पर अपना प्रभाव अधिक छोड़ती है। 'रसकपूर' उपन्यास को लें तो रचनाकार ने नायिका एवं उपन्यास के नाम 'रस-कपूर' को सार्थकता प्रदान करते हुए 'रसक-पूर' माना है तथा इसका मंगलाचरण रसराज शृङ्गार के देवता विष्णु की वन्दना से किया है-

रसाधरं रासरसैकसारं
सरोजनेत्रं रसिकैकगम्यम् ।
कविं रसज्ञोऽनुसरामि शौरिं
पूरं रसानां रसराजराजम्॥

(रसकपूर-प्रथमविरामः)

इस पद्य का दूसरा अर्थ नायिका रसकपूर पर घटित होता है। यहां रसाभिव्यक्ति के लिए अनुप्रास का सार्थक प्रयोग स्पष्ट है। इसी उपन्यास में आत्मकथ्य में जगत् का स्वरूप अनुप्रास से ही प्रकट हुआ है-

'अहन्तु विबोधविलोलालका बालिका वर्ते पुनरियं सवित्रीशिष्टिशिक्षिता जगत्यां जाल्मकजालैर्जागरूकास्ति।'

पद्मिनी के सौन्दर्य में जहां समस्त साधन एकजुट प्रतीत होते हैं वहीं रचनाकार की पदसंरचना भी नायिका के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति में रसिकों के हृदय को आवर्जित करती है -

श्रूयतां सावधानमनसा तद्रूपलावण्यम्। शोशुभ्यते तदीयमिन्दिन्दिरवृन्दसदृशं श्यामलं कोमलं केशजालम्, रराज्यते नलिनासनलावण्यलेखनफलकमिव लोकनीयं ललितं ललाटपटलम्, तत्र देदीप्यते कोकिलकोमलकलेवरकृष्णकज्जलान्वितं जगज्जेतृमनसिजस्य जयध्वजायमानजायायुतमीनाभिरामं कमलदलायतं कमनीयं कामुकवृन्दाकर्षकमीक्षणयुगलं चाकाश्यते।

(पद्मिनी चतुर्थविकासः पृ. 75)

यहां अनुप्रास के साथ ही रूपक, उपमा आदि का प्रयोग अत्यन्त मनोरम बन पड़ा है।

पद्मिनी उपन्यास का मंगलाचरण भी नायिका नाम की अन्विति के साथ सानुप्रास श्लेष के रूप में लक्ष्मी देवी की स्तुति के रूप में किया गया है-

परोपकारप्रवणैः सुखापा, पापात्मभिर्या पुरुषैरनापा।
पद्मापरा पावकदीप्तदेहा, सा पद्मिनी पूरयतादभीष्टम्॥

(पद्मिनी-प्रथमविकासः)

ऐसी ही रचना अनुष्ठान में संलग्न आचार्यों के वर्णन में मिलती है –

तत्र मण्डपे भूयांसो विद्वासः स्थूलस्थूलरुद्राक्षवलय-मालालंकृतकण्ठभुजदण्डमणिबन्धाः, परिधृतसिन्दूरारुणकौशेय-परिधानाः, ललितकौंकुमबिन्दु-राजितमध्यभागभसितत्रिपुण्ड्रविलसित-भालप्रभाप्रभासितवसुन्धराः स्नानसन्ध्यारताः शौचाचारपरायणाः, वेदशास्त्रार्थकोविदाः पुराणतत्त्वज्ञा व्याकरणादिषु सर्वेषु विषयेषु लब्धप्रतिष्ठाः तेजोगरिष्ठाः श्रीसप्तशतीपाठसंरताः शतचण्डीप्रयोगसमाराधनविधानवृत्ताः शोभन्ते स्म।

(पद्मिनी-द्वितीयविकासः पृ. 33)

कथा के लिए उपयुक्त पात्रों के संवाद में सरल एवं प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया जाना रचनाकार की सावधान चित्तता को प्रकट करता है।

पद्मिनी और भ्रमरिका का एक संवाद व्यग्रता प्रकट करता है -

भ्रमरिका - महाराजेन तु स्वयं भणितं यदद्यतनीया त्रियामा पद्मिन्या साकं यापयिष्यामि।

पद्मिनी - पुनः का समस्या समागता? किमर्थन्नायातः? यामंद्वयं व्यतीतम्।

भ्रमरिका - न कापि सूचना, न कोऽपि सन्देशः, न कोऽपि संवादः।

पद्मिनी - किं पुनरपि काप्यघटितघटना घटिता ?

(पद्मिनी-नवमविकासः पृ. 190)

रसकपूर उपन्यास में नायक जगत्सिंह और नायिका रसकपूर का प्रेमालाप सहज और स्वाभाविक समर्पण की भावना का एक आदर्श कहा जा सकता है -

नैव, नैव, किञ्चित्तु कथनीयम्, जिता त्वं पराजितश्चाहम्।
आनन्दावसरेऽस्मिन् किञ्चित्तु दास्यते मयावश्यम्।
स्वयमेव पराजिता सञ्जाताहम्।
कथमेतत् ?
अद्य प्रभृति भवदीयपादपद्मसेविकाऽहं वर्ते।
रसवति ?
आम्, मम प्राणेश्वर !

त्वत्प्राप्त्या सर्वमपि विस्मृतं मया।
मयापि नावशिष्टं किञ्चित् स्मरणीयम्।
का त्वम् ?
महाराजचरणारविन्देरेणुः।
अहञ्च ?
निकृष्टदास्याः शिरोमुकुटम्।
नैव, अनृतमुच्यते त्वया।
नो स्वामिन्!
रसबाले! वर्तसे मे हृदयमौक्तिकमाला।
अन्नदातुरियमवर्णनीयाऽनुकम्पा।

(रसकपूरम् पृ. 92)

पद्मिनी उपन्यास के चतुर्थ विकास में सहज सरल शब्दों में हास्य व्यङ्ग्य कितने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है -

अत्रान्तरे हा हा रे हा! कुत्र गतो मे कृष्णः कुक्कुटः, कुत्र यामि? क्व गवेषयामि तमिति वदन् मध्येमार्गं जनसम्मर्दकोलाहलमाकर्ण्य कलहस्थानमागतवान् करीमः। दर्शकवृन्दे विद्यमानं भ्रातरं भूरेखानमपृच्छत् - रे रे! किं भवता विलोकितो मे कुक्कुटः? तद्वचनमाकर्ण्य भूरेखानः प्राब्रवीत् -

भूरेखानः - आम्, आम्, विविधेन्द्रजालकौतुकं प्रदर्शयता कापालिकेनानेनैकः कृष्णकलेवरः कुक्कुटः कवलीकृतः। पश्यतु तावदत्र पतितानि तत्पत्राणि, अवश्यमेवासीत्स तवैव कुक्कुटः।

करीमः - रे रे मे भ्रातरः! हन्यताम्, हन्यताम्, सत्वरमेष मेष इव दुष्टः कापालिकः।

(पद्मिनी चतुर्थो विकासः पृ. 63)

पत्रदूत काव्य में वीररस की अभिव्यक्ति के लिए अन्त्यानुप्रास एवं समासबहुलता देखी जा सकती है जो ओजोगुण के अनुरूप ही है -

राष्ट्राध्यक्षस्ततस्त्यो विपुलवसुपतिर्देशविस्तारकामो
लोभेनाकृष्टचेताः प्रमुखरणगतिर्नीतिकार्यातिवामः।

सामर्थ्येनाभ्यमित्र्यो विहितरिपुनतिर्वस्त्रभूषाभिरामः
श्रीसद्दामो 'हुसैनो' विविधविधिमतिर्भासते द्विड्विरामः॥

पत्रदूतम्-30

रसव्यञ्जना -

किसी भी काव्य की प्रतिष्ठा सहृदयों को रसपाक तक ले जाने पर निर्भर करती है, यही कारण है कि आचार्य आनन्दवर्धन ने इसके लिए सावधान रहने को कहा है। समालोच्य रचनाकार पं. पाण्डेय ने इस विषय में अत्यधिक सजगता से विषयवस्तु को गति प्रदान की है। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य में प्रमुखरूप से एक रस ही अंगी माना गया है - **एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा**। इस सिद्धान्त को प्रतिफलित करते हुए पाण्डेय ने **'रसकपूर'** में शृङ्गार रस को तथा **'पद्मिनी'** एवं **'पत्रदूत'** में वीर रस को प्रधानता दी है। पद्मिनी उपन्यास में भी शृङ्गार रस का परिपाक प्रासंगिक रूप से अपने चरम पर है, यथा-

अभ्यन्तरावतरत्कमलकमनीयः कमलाशयसंजातकम्बुकण्ठः सलालसं लोलोच्यते लोकलोचनैः, मारापारपारावारतरणार्थमिव तरुणजनाश्रयीभूतौ प्रियतागुणानुबद्धौ परस्परसंसक्तौ मत्तेभकुम्भाविव चाकाङ्क्ष्येते कमनैः कुचकुम्भौ, कन्दर्पकोदण्डज्यायमानं मृणालसूत्रमृदुलं बेभ्रेज्यते बाहुयुगलम्, मदनसदनगमनार्थं शैवलवल्लरीविरचितेव शृङ्गारिभिः शेश्रियते रोमराजिसरणिः, जगज्जननबीजाधारं विफलीकृत-वामदेवादियोगीश्वरमनोरथं मनीषिणामपि मानसं मामथ्यते मन्मथमन्दिरम्, स्मरनगरतोरणस्तम्भभूतरम्भायमाणं रम्भयाप्याशंशस्यते सौवर्णं सुन्दरमूरुयुगलम्, मदनमार्गणधारणदक्षं तूणीरायमाणं काञ्चनवर्णं वर्तुलाकारं जंघाप्रकाण्डद्वयं स्कन्धोपरि देधीयते धीरैरपि रतिवीरैः, आतपत्रसहस्रपत्ररथकुञ्जरध्वजपताकाप्रभृतिप्रतीकान्वितं चञ्चलावास-कोकनदकमनीयं चरणद्वयं नंनम्यते सुरनरमुनिनिकरैर्नितान्तम्, प्रणतिसमये पादपतितेन मनसिजेनापि चरणाङ्गुलिनखदर्पणेषु दरीदृश्यते स्वकीयं प्रतिबिम्बम्।

(पद्मिनीचतुर्थविकासः पृ. 76)

इसी उपन्यास में ठीक इसके विरोधी वीररस के लिए सेना का घेराव, आक्रमण आदि का वर्णन ओजोगुम्फ शैली में सार्थक पदों के प्रयोग से किया गया है जैसे–

एकतो गजसन्निभकल्पान्तघोरसघनघनघटाभिराच्छादितन्नभः, इतरतश्चाजिराजिराजितराजपुत्राणां यवनानां च पृतनाभिः परितः परीतं पृथिवीमण्डलम्। नानाप्रहरणोद्यता यवनाः क्षत्रियैः सार्धं पर्वताः पर्वतैरिव संजाताः संघट्टिताः। यवनपदातयः स्वहस्तमुक्तैः प्रासैः करालकृपाणप्रहारैश्च सेनाध्यक्षपुरोगमान्नैकान् क्षत्रियपदगान् जघ्नुः, अन्ये च बहवो वीरास्तेषां शस्त्रजालैः प्रमथिताः, करवालप्रहारभिन्नावयवाः, बाणप्रहारभिन्नोरस्काः संजातव्रणैर्बहु रक्तं वेमुः। क्षणं यावत्तैः क्षत्रियाणां बलं मन्त्रशक्तिसंस्तम्भितमिव शवसदृशाकृति निष्प्रयत्नायुधं विहितम्। एतदवलोक्य तुरगारूढो बादलवीरः सादिभिः साकं घोरं यवनबलं विवेश, करद्वयचालितचञ्चच्चन्द्रहासप्रहारैः सम्मुखस्थितन्तद् यवनबलं हत्वा स्वीयपत्तिसैन्यानां कृते मार्गन्निष्कण्टकं चकार।

(पद्मिनी-एकादशविकासः पृ. 220)

पत्रदूत काव्य पर यदि दृष्टिपात करें तो नायक को युद्ध के लिए प्रेरणा देनेवाली माता ने अपने मातृत्व को चार प्रकार से प्रतिपादित किया है यथा–

शौर्यात्ते 'वीरमाता' रिपुदमनवशाद् 'देशमाता' भवेयं
नो स्तन्यं गर्हितं स्यात्समरभुवि सदा पृष्ठभागावलोकात् ।
'स्वर्माता' प्राणदानाद् रणगमनफलं याच ईसामसीहं
गर्वात् स्यां 'राष्ट्रमाता' भुवि तव विजयात्प्राप्तधन्यास्पदं च॥

पत्रदूतम् - 12

ऐसे मातृत्व की परिकल्पना सार्थकता के साथ अन्यत्र देखने को शायद ही मिले जहां वीरमाता, देशमाता, स्वर्माता और राष्ट्रमाता की कल्पना की गई हो। भारत वर्ष में राष्ट्रपिता की परिकल्पना तो गांधी के रूप में मिलती है परन्तु माता के ऐसे विविध रूपों की परिकल्पना प्रथमवार देखी गई है। वीर रस के

साथ करुण न हो यह हो ही नहीं सकता अतः कवि ने युद्ध के बाद की स्थिति का करुण रस के रूप में वर्णन किया है

विक्रान्तास्तत्र केचित् प्रयुयुधुरपरे प्राद्रवन् भीतभीता रक्षार्थं जन्मभूमेः कतिचन मुमुचुर्जीवनन्ते च धन्याः। जाता जाता विताताः प्रियपतिरहिताः शून्यचित्ताश्च कान्ताः पुत्रैर्हीना विनाथा अतिशयमरुदन् मातरो मुक्तकण्ठम्॥

पत्रदूतम् - 32

युद्ध की बिभीषिका का गद्यमय वर्णन पद्मिनी में प्राप्त होता है जहां लेखक ने कुत्ते, गीदड, गिद्धों को लाशों के ढेर में घूमते बताया है जिसमें स्पष्टतः बीभत्स रस की अभिव्यञ्जना होती है -

तत्र कलितकलकले कीलालकल्लोलिनीकूले काक-कङ्कातापिगोमायुप्रभृतयो विदधते प्रीतिभोजम्। एष गृध्रराजो निजखरतरनखरविवरेषु कस्यचित्प्रत्यग्रव्यापादितमनोज्ञ-षोडशवर्षकल्पस्य विलोलालकस्य बालकस्य मृदुमसृणमांसलं प्रस्रवद्रुधिरं शरीरं दृढयत्नस्यामेव गोष्ठ्यां सम्मिलितुं जवनगरुद्भ्यामुड्डीयमानोऽभियाति। अन्यत्रापि जन्याजिरे परःसहस्राः कुक्कुरफेरुवृन्दानि कबन्धेभ्यः समुत्कृत्यामिषशकलानि कवलीकुर्वन्ति। अहह! अन्यत्र संख्याङ्गणे प्रमोदेन नृत्यन्त्यः प्रोच्छलन्त्यः शाकिन्यः, डाकिन्यः, योगिन्यश्च नवीनहतवीरवर-कोष्णशोणितैः स्वस्वकरस्थकपालचषकाणि सानन्दमापूर्य पिपासातुरा यथेच्छं पिबन्ति। अन्यत एतेऽतिभैरवा भैरवाः शोणितासवं पिबन्तः समराङ्गणपतितमुण्डैः कन्दुककेलिं कुर्वन्ति।

(पद्मिनी-एकादशविकासः पृ. 221)

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि पाण्डेय की समस्त रचनाओं में, चाहे वे गद्य की हों या पद्य की, सर्वत्र रसों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि उभयविध अलंकार स्वाभाविक आनुप्रासिक शैली में अहंपूर्विकया दृष्टिगोचर होते हैं।

रचनाओं में अन्यशास्त्रों का समावेश -

किसी भी रचना में प्रासंगिक रूप से आये विविध प्रकरणों के वर्णन

के लिए रचनाकार की वैसी ही शास्त्रज्ञता होना आवश्यक है अन्यथा हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। पाण्डेय ने अपनी रचनाओं में यथावसर तत्तत् प्रसंगों में उन शास्त्रों के सिद्धान्तों का निर्वहण बड़ी कुशलता से किया है। पाण्डेय ने अब तक लगभग पैंतीस बड़े प्राण-प्रतिष्ठा, यागादिक अनुष्ठान सम्पन्न करवाये हैं जिसके लिए वेद मन्त्रों की शिक्षा गुरु श्री ग्यारसीलाल जी वेदाचार्य एवं पौरोहित्य कर्म का प्रायोगिक ज्ञान गुरु श्री रामकृष्ण जी चतुर्वेदी से प्राप्त किया। अन्य शास्त्रों का अध्ययन भी तत्तत् शास्त्र-निष्णात गुरुओं के सान्निध्य में हुआ। इसी कारण से रचनाओं में यत्र तत्र विविध प्रसंगों का वर्णन शास्त्रानुकूल हुआ है। 'पद्मिनी' उपन्यास में तान्त्रिक राघवचेतन के मुख से तन्त्रशास्त्रसम्मत अनेक कथ्य प्रस्तुत करवाये गये हैं जहाँ एक स्थान पर पञ्च मकार को मुक्तिदायक बताया गया है तो दूसरी जगह मद्य, सुरा, मद्यपायी आदि की सलक्षण प्रस्तुति की है। इसके लिए पूरे चार पृष्ठों की सामग्री विभिन्न तन्त्रग्रन्थों से प्रस्तुत की गई है -

ब्रह्मस्थानसरोजपात्रलसिता, ब्रह्माण्डतृप्तिप्रदा।
या शुभ्रांशुकला सुधाविगलिता सा पानयोग्या सुरा॥

(पद्मिनी चतुर्थ विकास पृ. 59)

अन्यत्र पशुबलि का प्रयोग-विधान भी स्पष्ट किया है -

'' ॐ ह्रां ह्रां खड्ग आं हुं फट्'' इति खड्गं सम्पूज्य -

''ॐ कालि कालि यज्ञेश्वरि लौहदण्डायै नमः'' इति देव्यै निवेद्य, ततो माषपिष्टमयं शत्रुं कृत्वा खड्गेन च्छेदयित्वा स्कन्दाय विशिखाय च दत्त्वा बलिशेषं रक्षोभ्यो हरति स्म ''ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर, कुम्भ कुम्भ, सूनु सूनु, गुलु गुलु, धुनु धुनु, मारय मारय, विद्रावय विद्रावय, विदारय विदारय, कम्पय कम्पय, कम्पातय कम्पातय, पूरय पूरय ''ॐ ह्रीं ॐ फट् हुं मर्दय हुम्।''

(पद्मिनी द्वितीय विकास - पृ. 35)

इसी तरह कामशास्त्रानुसार पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी तथा हस्तिनी चार प्रकार की नायिकाओं का वर्णन भी किया गया है।

राजन् ! साहित्यशास्त्रे नैके नायिकाभेदा निरूपिताः, परं

कामशास्त्रदृष्ट्या विश्रुता लोके विलोक्यते नायिकाचतुष्टयी। रतिमञ्जर्यादिग्रन्थानुसारं विवेच्यते क्रमशस्तत्स्वरूपम् -

(पद्मिनी द्वितीय विकास - पृ. 30)

यहाँ विभिन्न प्रकार की रतिक्रीड़ाओं का वर्णन यथास्थान औचित्यानुसार किया गया है।

पाण्डेय की रचनाओं में प्रौढि की पराकाष्ठा **'नतितति'** खण्डकाव्य के रूप में प्रकट हुई है जहाँ एक एक पद्य एक वर्णविशेष को आधार बनाकर निर्मित किया गया है जिसका प्रथम पद्य क-वर्णाश्रित है-

कालिन्दीकूलकेलिः कुरुकुलकदनः कानने काम्यकुञ्जे
केकाभिः कीर्त्यमानः कलितकरुणया कुञ्जरं कान्तकायम्।
कुर्वन् क्रीडन् कदम्बे कनककटककृत्किङ्किणीक्काणकान्तः
कृष्णः कल्याणकारी कलयतु कुशलं केशवः कंसकालः॥

शास्त्रकारों ने ऐसे क्लिष्ट पद्यों को शब्दचित्र काव्य के रूप में स्वीकार किया है परन्तु जहाँ भावध्वनि की सत्ता हो वहाँ श्रद्धा से उत्तमकाव्य ही स्वीकार किया गया है। सम्पूर्ण 'नतितति' काव्य की निर्मिति के मूल में देव-स्तुति ही परम प्रयोजन माना गया है। इस दृष्टि से कवि का अपना रचना सामर्थ्य प्रस्तुतीकरण गौणता को प्राप्त हो जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पाण्डेय की रचनाओं में विविध प्रकार की विभिन्न अवस्थाओं में शास्त्रसम्मत वर्णन मिलते हैं जो उनके अन्यान्य शास्त्रों के वैदुष्य को प्रकट करते हैं।

रचनाओं का वैशिष्ट्य–

पाण्डेय की रचनाओं के उपर्युक्त समीक्षण से स्पष्ट है कि उनकी रचनाएँ गुण, अलंकार, रीति तथा वर्णन की दृष्टि अपना एक अलग स्थान रखती हैं। रसकपूर उपन्यास में जहाँ एक ओर उर्दू फारसी के नज़ाकत, झाडफानूस, पीकदान आदि शब्दों के लिए व्याकरण सम्मत सर्जना से नवीन शब्दों की परिकल्पना की गई है वहीं पद्मिनी में प्रौढि की प्रतीति है। पद्मिनी उपन्यास के मंगलाचरण में संकेतित तथा उसमें होने वाली हृदयावर्जक रसाभिव्यञ्जना के सन्दर्भ में पण्डितराज जगन्नाथ की यह उक्ति अत्यधिक सार्थक प्रतीत होती है -

रम्यहासा रसोल्लासा रसिकालिनिषेविता।
सर्वाङ्गशोभासम्भारा पद्मिनी कस्य न प्रिया॥

(रसगंगाधर द्वितीयानन-उभयशक्त्युत्थव्यङ्ग्योदाहृति)

पद्मिनी उपन्यास अपने वैशिष्ट्य से ही राष्ट्रिय स्तर पर विभिन्न संस्थाओं से तीन बार पुरस्कृत हुआ है जिनमें अखिलभारतीय पुरस्कार, वाचस्पति पुरस्कार तथा श्रीवाणी अलंकरण (जो इसी वर्ष घोषित हुआ) है।

'पद्मिनी' उपन्यास की भाषाशैली और वैदुष्य से प्रभावित होकर ही देश के लब्धप्रतिष्ठ वाराणसीवास्तव्य आचार्य रेवाप्रसाद जी द्विवेदी ने अपने पत्र में पं. पाण्डेय को **'प्रतिनवबाणभट्ट'** के रूप में सम्बोधित किया है।

'पत्रदूतम्' को राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर से वर्ष 1993 का सर्वोच्च पुरस्कार **'माघ पुरस्कार'** मिला है। पुरस्कारों के सन्दर्भ में वरिष्ठ पत्रकार और फिल्मकार प्रीतीश नन्दी के इन शब्दों को यहाँ उद्धृत करना चाहता हूँ - **पुरस्कार न केवल सफलता पर ठप्पा लगाते हैं, बल्कि कई अन्य विशेषताओं जैसे दक्षता, संघर्ष, प्रयास और श्रेष्ठता को भी मान्यता प्रदान करते हैं।** (दैनिक भास्कर, दि. 04 फरवरी 2010)

कवि-संस्तव -

राष्ट्रपति-सम्मान प्राप्त पं. श्री पाण्डेय का जन्म 23 सितम्बर, 1934 को जयपुर में हुआ। आपके प्रपितामह पं. गंगाबक्ष शर्मा जयपुर के सुप्रसिद्ध गालवाश्रम (गलता तीर्थ) पीठ के महन्तों के पूज्य पण्डित (जोशी) के रूप में सम्मानित थे। पितामह पं. शिवदत्त शर्मा एवं पिता पं. दुर्गाप्रसाद (दुर्गालाल) शर्मा भी उसी परम्परा में सम्मान प्राप्त करते रहे। गालवाश्रम महन्तों के सभी पौरोहित्य कर्मों में आपकी प्रधानता रहती थी। आपकी माता सूरज देवी अत्यन्त धार्मिक एवं आस्तिक विचारों से ओतप्रोत रहीं। फलतः धार्मिक वातावरण से पं. श्री पाण्डेय की संस्कृत के प्रति विशेष रुचि रही।

आपने अपना परिचय नतिति काव्य में कवि-संस्तव के रूप में इस प्रकार दिया है -

श्रीगङ्गाबक्षशर्मा जनकगुरुगुरुः कर्मकाण्डप्रवीणः,
जोशी श्योदत्तशर्मा पितृवरजनको गालवर्षेः सुधाम्नः।

पूज्यो दुर्गाप्रसादः पितृवरचरणः सूरजाख्या च माता,
राजन्तां पूर्वजा मे हरिपदरसिकाः कीर्तिशेषाः प्रपूज्याः ॥2॥
राजस्थाने सुराज्ये जयपुरनगरे चन्द्रपोलाख्यहट्टे,
कोषाध्यक्षस्य मार्गे विहितवसतिना गौडविप्रान्वयेन।
रम्यं श्रीमोहनेन प्रणतिविषयकं निर्मितं चित्रकाव्यं,
श्रीवाग्देवीप्रसादाद् गुरुपदकृपया जायतां प्राज्ञतुष्ट्यै ॥5॥

आपकी अध्ययन-अभिरुचि, परिश्रम व श्रेष्ठ प्रतिभा से गुरुजन भी अत्यन्त प्रसन्न रहते थे। अध्ययन काल में ही आपने कविता रचना प्रारम्भ कर दिया। आपकी कविताओं को देखकर आशुकवि श्री हरिशास्त्री ने कहा था कि– 'तुम अच्छे कवि बनोगे'।

पौरोहित्य कार्य के सन्दर्भ में एकदा अपने गुरु पं. रामकृष्ण जी चतुर्वेदी के साथ श्री पाण्डेय ने स्वनिर्मित पौराणिक श्लोकों से देवार्चन करवाते हुए राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. सम्पूर्णानन्द को भाव विभोर कर दिया। इस प्रकार आप शनैः शनैः बड़े बड़े यज्ञों का आचार्यत्व करने लगे। आपने भारत पाक सीमा के पास जिला गंगानगर में 'बकायन वाला' में सन् 1956 में एक बृहद् यज्ञ करवाया। निरन्तर तीन वर्ष से वर्षा के अभाव में अकाल की मार झेलते हुए ग्रामवासी आप द्वारा सम्पादित यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ ही प्रचुर मात्रा में वृष्टि होने से अत्यन्त आल्हादित हुए।

पश्चाद्वर्ती समय में आपने आचार्य के रूप में रामपुरा डाबड़ी, धानोता, बिहारीपुरा, कालाडेरा आदि स्थानों पर भी बड़े-बड़े यज्ञ (जिनमें अष्टोत्तरशत कुण्डीय भी हैं) सम्पन्न करवाये। अध्यापन करवाते हुए ही आपने महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर से सन् 1964 में साहित्य विषय से आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने पं. सूर्यनारायण शास्त्री एवं पं. रामेश्वर प्रसाद दाधीच एवं प्रोफेसर श्री दुर्गादत्त मैथिल से व्याकरण शास्त्र का अध्ययन किया। राष्ट्रपति सम्मानित पं. श्री जगदीश शर्मा 'साहित्याचार्य' तथा राष्ट्रपति सम्मानित पं. श्री गंगाधर द्विवेदी से साहित्य विषय तथा पद्मश्री पं. श्री पट्टाभिराम शास्त्री एवं पं. श्री नन्दकिशोर दाधिमथ से मीमांसा तथा न्यायशास्त्र का अध्ययन किया।

सन् 1964 में आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आपने राजकीय सेवा में व्याख्याता 'साहित्य' के पद पर नियुक्ति प्राप्त की तथा क्रमशः पदोन्नति प्राप्त कर संस्कृत शिक्षा विभाग के राजकीय संस्कृत कॉलेज, अजमेर में प्राचार्य पद पर सेवा पूर्ण करते हुए 30 सितम्बर, सन् 1992 को राज्य-सेवा से निवृत्त हुए।

डॉ. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, साहित्य विभाग
ज. रा. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय,
मदाऊ, भांकरोटा, जयपुर-26
अध्यक्ष,
संस्कृत भाषा परिषद्, जयपुर

2381, 'पाण्डेयभवन'
खजाने वालों का रास्ता,
जयपुर-1 (राज.)

पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'

राष्ट्रपतिसम्मानित, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजित

जीवन-वृत्त

नाम	– पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'
पितृमातृनाम	– स्व. श्री दुर्गालाल शर्मा पाण्डेय, माता- स्व. श्रीमती सूरज देवी
जन्मतिथि	– 23 सितम्बर, 1934 ई.
जन्मस्थान	जयपुर (राजस्थान)
निवास-सङ्केत	– 2381, 'पाण्डेय भवन', खजाने वालों का रास्ता, जयपुर (राज.) दूरभाष– 0141-2321151, मो. 09829271351
योग्यता	– साहित्याचार्य 1964, शिक्षास्थान– महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर (राज.)
मानद उपाधि	– शास्त्रमहोदधि, विद्यासागर, याज्ञिक-सम्राट्
प्राचार्यचर	– राजकीय संस्कृत महाविद्यालय अजमेर (राजस्थान)
अध्यक्ष	– अखिल भारतीय वेद वेदाङ्गज्योतिष स्वाध्याय संस्थान, जयपुर
अध्यक्ष	– श्री वैदिक संस्कृति प्रचारक संघ, जयपुर
उपाध्यक्षचर	– राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
प्रमुख गुरुजन	– पद्मश्री पं. पट्टाभिराम शास्त्री (राष्ट्रपति पुरस्कृत) – श्री जगदीशशर्मा साहित्याचार्य (राष्ट्रपति पुरस्कृत) – श्री गङ्गाधर द्विवेदी (राष्ट्रपति पुरस्कृत) – श्री वृद्धिचन्द शास्त्री, धर्मशास्त्र विशेषज्ञ
विशेष अध्ययन	– राजब्रह्मा पं. श्रीरामकृष्ण चतुर्वेदी तथा पं. श्री ग्यारसीलाल वेदाचार्य से वेदाध्ययन कर कर्मकाण्ड में प्रवीणता प्राप्त की।

शैक्षणिक सेवा

(क) अराजकीय – **वरिष्ठाध्यापक** : गौड विप्र हायर सैकण्डरी विद्यालय, जयपुर (राज.) (22.7.1957 से 04.10.1967 तक)

(ख) राजकीय – **कनिष्ठ व्याख्याता** : राजकीय संस्कृत कॉलेज, कोटकासिम, अलवर (सन् 1967 से 1971 तक)

– **व्याख्याता** : राजकीय संस्कृत कॉलेज, जोधपुर एवं कालाडेरा, जयपुर (सन् 1972 से 1981 तक)

– **प्राचार्य** : राजकीय संस्कृत कॉलेज, अजमेर (सन् 1982 से 1992 तक)

सेवानिवृत्ति – इस प्रकार अराजकीय एवं राजकीय महाविद्यालयों में 35 वर्ष तक संस्कृत शिक्षा जगत् की सेवा करते हुए 30 सितम्बर, 1992 को 58 वर्ष की अधिवार्षिकी आयु प्राप्त कर राज्यसेवा से सेवानिवृत्त।

कृतित्व

(क) लेखन –

❊ **रसकपूरम्** – अनूदित ऐतिहासिक संस्कृत गद्यकाव्य/उपन्यास। जयपुर रियासत से सम्बद्ध। प्रकाशित 1993, अब तक अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी आदि आठ भाषाओं में अनूदित।

कथावस्तु– रसकपूर के नाम से विख्यात नृत्यांगना जिसने जयपुर के राजा जगत्सिंह की प्रेयसी बनकर महिषियों में प्रमुख स्थान प्राप्त किया तथा इतिहास प्रसिद्ध नूरजहाँ के समान शासन की बागडोर संभाली। अन्त में षड्यन्त्र का शिकार हो जाने से उसे आजीवन कारावास की सजा दी गई।

विशेष– भावानुवाद, नूतन शब्दों का सर्जन, उर्दू की कोमलता को संस्कृतनिष्ठ शब्द देना, वर्णन में दण्डी शैली के प्रभाव का कहीं-कहीं दर्शन, श्रेष्ठ अनुवाद की श्रेणी, णिजन्त धातुओं का ललित प्रयोग, संवादों के प्रयोग में पात्रों की भावानुकूलता, भाषा के लिए समुचित शब्दों का प्रयोग।

पारीक कॉलेज, जयपुर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष एवं हिन्दी के इस उपन्यास के लेखक **आचार्य उमेश शास्त्री** ने भूमिका भाग में अपने विचार प्रकट किये हैं– **'रसकपूर के अनुवाद में मौलिकता**

है। ऐसा अनुवाद देखने में नहीं आया है। संस्कृत साहित्य के गद्य क्षेत्र की अनूदित कृतियों में सहज रूप से शीर्ष स्थान को प्राप्त करना ही इस शैली की विशेषता और अनुवादक की मौलिकता कही जाएगी।

* **पद्मिनी (पुरस्कृत)**– अम्बिकादत्त व्यास शैली में रचित ऐतिहासिक संस्कृत गद्यकाव्य/उपन्यास। प्रकाशित 1999

कथावस्तु– यह पद्मिनी नामक संस्कृत गद्यकाव्य ऐतिहासिक है। इतिहास-सम्मत कल्पनामिश्रित होने से मौलिकता लिए हुए है। मध्यकालीन राजपूत संस्कृति एवं सभ्यता का परिचायक तथा मुगलवंश के पूर्व बादशाह खिलजी वंश के शासकों की नारी के प्रति सम्मोहन दृष्टि का आकांक्षित स्वरूप की अभिव्यक्ति का कुशल चित्रण है। रानी पद्मिनी का अप्रतिम सौन्दर्य विश्व सम्मोहन का रूप रहा। तान्त्रिक की वासनाग्नि ने अलाउद्दीन ख़िलजी को प्रेरित कर एक संस्कृति को मूल से मिटाना चाहा। युद्ध की विभीषिका, क्षत्रिय का धर्म तथा नारी के त्याग का अनुपम आदर्श इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। कथा का योजनाबद्ध स्वरूप, पात्रों का आदर्श, समसामयिक सभ्यता एवं संस्कृति के आदर्श के साथ प्राञ्जल भाषा जो कि अनुप्रास के लालित्य से ललित, उपमाओं से उपमित तथा नूतन उत्प्रेक्षाओं से अभिव्यंजित है।

पिछले 200 वर्षों में संस्कृत साहित्य में गद्य-रचनाएँ प्रचुर रूप में हुई हैं किन्तु ऐतिहासिक रचना का सर्वथा अभाव रहा है। द्वासुपर्णा, कुसुमलक्ष्मी, चण्डमहीपति, बिल्वमंगल तथा शशिप्रभा आदि अनेक रचनाएँ आई हैं किन्तु अनुभूति एवं अभिव्यक्ति की नूतन प्रस्तुति **'पद्मिनी'** में ही है। सभी रचनाओं में कला एवं शैली पक्ष की दृष्टि से यह रचना शीर्ष स्थान पर ठहरती है।

विशेष– डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी - राष्ट्रपतिसम्मानित मनीषी ने पद्मिनी उपन्यास पढ़ कर अपने पत्र में उद्गार यों प्रकट किये हैं –**'पद्मिनीकवीश्वराय प्रतिनवबाणभट्टाय पं. श्रीमोहनलालशर्मणे पाण्डेयाय प्रणतिः।'**

डॉ. हरिराम आचार्य – राष्ट्रपतिसम्मानित मनीषी ने पद्मिनी उपन्यास

की शैली को नवीन 'मारवाणी' शैली कहा है–'.....**न प्राचीना काव्यशास्त्रोक्ता 'पांचाली' अपितु नवीना प्रसादगुणभूषिता मरुधरोत्था मनोरमा 'मारवाणी' शैलीति कथयितुं शक्यते।'**

❊ **पत्रदूतम् (पुरस्कृत)** – खण्डकाव्य। विश्वप्रसिद्ध ईराक के खाड़ी युद्ध की घटना पर आधारित। प्रकाशित 1999

कथावस्तु– दूतकाव्य परम्परा में एक और कड़ी 'पत्रदूतम्'। 1990 में होने वाले खाड़ीयुद्ध में एक ओर ईराक और उसके राष्ट्राध्यक्ष सद्दाम हुसैन तो दूसरी ओर कुछ खाड़ी देश तथा उनके पीछे महाशक्तिसम्पन्न कुछ देश। सम्पूर्ण विश्व को हिलाकर रख देने वाले इस युद्ध को वर्ण्य विषय बनाकर रचा गया है 'पत्रदूतम्'। इस खाड़ी युद्ध की घटनाओं की जानकारी सेनाध्यक्ष द्वारा अपनी पत्नी को लिखे पत्र के माध्यम से दी गई है। आज के युद्ध में प्रयुक्त टैंक, राडार, बम, बुलडोजर, एरोड्रम आदि नवीन शब्दों के लिए संस्कृत के भाषिक आयामों को विस्तार दिया गया है।

❊ **श्रीरामचरिताब्धिरत्नम्–** महाचित्रकाव्य (आशुकवि पं. नित्यानन्द शास्त्री विरचित) की 'रत्नप्रभा' हिन्दी अनुवाद। प्रकाशित 2004

लगभग 800 पृष्ठों में मुद्रित व्याकरण की प्रौढशैली में 14 सर्गों में रचित इस महाचित्रकाव्य का पाण्डेय द्वारा हिन्दी अनुवाद।

कथावस्तु- राजस्थान के जोधपुर नगर वास्तव्य आशुकवि पं. नित्यानन्द शास्त्री द्वारा 14 सर्गों में विभक्त 'श्रीरामचरिताब्धिरत्नम्' चित्रमहाकाव्य के श्लोकों के प्रत्येक चरण के आदि में वाल्मीकीय मूल रामायण के एक-एक अक्षर को संयोजित किया गया है। व्याकरणशास्त्र के दुरूह प्रयोग तथा उनकी उपमाएं देने के साथ ही अन्यान्य शब्दों का गुम्फन जिनका अवगम प्रचलित अप्रचलित कोशों की सहायता से ही सम्भव है।

*राष्ट्रपति सम्मानित देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने हिन्दी व्याख्या के लिए भूमिका भाग में अभिव्यक्ति की है – 'इस काव्य के व्याख्या कार्य को जिस श्रम, लगन और वैदुष्य के साथ जयपुर के जाने माने

कवि, विद्वान्, राष्ट्रपतिसम्मान प्राप्त पं. मोहनलालशर्मा पाण्डेय ने किया है और जिस सावधानता के साथ उन्होंने प्रूफशोधन किया है, जिस स्पष्टता और विशदता के साथ हिन्दी व्याख्या कर उन्होंने इसे संस्कृतज्ञेतर पाठकों के लिए सुग्राह्य बनाया है, साथ ही उसकी विशेषताओं का विवरण भी दिया है उसके लिए वे संस्कृतजगत् की श्लाघा और कृतज्ञता के सर्वात्मना पात्र बन गये हैं'।

* **नतिततति** – वर्णैकप्रधान मुक्तकचित्रकाव्य। विभिन्न देवताओं की स्तुति। प्रकाशित 2007

  विषयवस्तु– स्तोत्र साहित्य में एक सुन्दर कड़ी जोड़ने वाले इस नतिपरक मुक्तक-संग्रह की यह विशेषता है कि इसका प्रत्येक पद्य नागरी वर्णमाला के एक एक वर्ण को नायक बनाकर लिखा गया है और उस पद्य का प्रत्येक शब्द उस वर्ण से ही प्रारम्भ होता है। इस प्रकार एक पद्य एक ही अक्षर में पूरा गुम्फित होने से 'एकाक्षरचित्रम्' कहा जाता है। यह काव्य इस दृष्टि से चित्रकाव्य भी है, स्तोत्र काव्य भी है और मुक्तक काव्य भी। विभिन्न आराध्यों के प्रति प्रणति समर्पित करने से इसका नतिततति नाम सार्थक है।

* **संस्कार सोपान** – भारतीय जीवन पद्धति के आधार 16 संस्कार। प्रकाशित 2007

  विषयवस्तु– भारतीय संस्कृति में प्रचलित जीवन के सोलह संस्कारों की सटीक वैज्ञानिक प्रस्तुति।

* **पूजा-पद्धतियां** – विभिन्न देवताओं की पाँच पूजा-पद्धति ग्रन्थ रचित, जिनमें वेद मन्त्रों के साथ-साथ स्वरचित पद्यों का संयोजन किया गया है–

  – **'श्रीहनुमत्पूजा-पद्धतिः'**– स्वरचित पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा विधि। प्रकाशित 2007

  – **'श्रीरामपूजा-पद्धतिः'**- स्वरचित पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा विधि। प्रकाशित 2007

  – **'श्रीगणेशपूजा-पद्धतिः'**- स्वरचित पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा विधि। प्रकाशित 2007

– **'श्रीकृष्णपूजा-पद्धतिः'**– स्वरचित पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा विधि। प्रकाशित 2008

– **'श्रीशिवपूजा-पद्धतिः**- स्वरचित पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा विधि। प्रकाशित 2009

– **'श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः**- स्वरचित पद्यों सहित साङ्गोपाङ्ग पूजा विधि। प्रकाशित 2010

✲ **शीघ्र प्रकाश्य–**

– **संस्कृतकथासंग्रहः**– विभिन्न विषयों पर स्वरचित कथाओं का संग्रह।

– **समस्यासौहित्यम्**– समस्यापूर्ति विधा को लेकर स्वनिर्मित लगभग 250 पद्यों का संग्रह।

– **अभिनन्दनपत्र-पारिजात,** लब्धप्रतिष्ठ - विद्वानों के सम्मानार्थ रचित अभिनन्दन पत्र।

(ख) सम्पादन–

✲ **'स्वातन्त्र्यसहयोगिनः'** राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ – 1999

✲ **'राजस्थानगौरवम्'** राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ – 2001

✲ **'स्वरमंगला'** राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा प्रकाशित त्रैमासिकी संस्कृत पत्रिका–1997-1999

सम्मान तथा पुरस्कार–

✲ **'राष्ट्रपतिसम्मान'**– सन् 2000, द्वारा महामहिम राष्ट्रपति, भारत सरकार, नई दिल्ली।

✲ **'श्रीवाणी अलंकरण'**– सन् 2009, 'पद्मिनी' उपन्यास पर द्वारा रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्रीवाणी अलंकरण न्यास, नई दिल्ली।

✲ **'वाचस्पति-पुरस्कार'**– सन् 2002, 'पद्मिनी' उपन्यास पर द्वारा के. के. बिड़ला फाउन्डेशन, नई दिल्ली।

✲ **'हारीतऋषिसम्मान'**– 2000-2001, द्वारा महाराणा मेवाड़ फाउन्डेशन, उदयपुर (राजस्थान)।

- **'अखिल भारतीय पुरस्कार'**– सन् 2000, 'पद्मिनी' उपन्यास पर द्वारा राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
- **'माघ-पुरस्कार'**– 1992-1993, 'पत्रदूतम्' खण्डकाव्य पर द्वारा राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
- **अखिलभारतस्तरीयविद्वत्सम्माननम्'**– 1999-2000, द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।
- **'प्रथम पुरस्कार-अखिल भारतीय समस्यापूर्ति स्पर्धा'** मार्च 2001, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जयपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रिय संस्कृत सम्मेलन के अवसर पर।
- **'राज्यस्तरीय विद्वत्सम्मान एवं पुरस्कार'**– संस्कृत दिवस पर सन् 1995, राजस्थान सरकार द्वारा संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट सेवा एवं योगदान के उपलक्ष्य में।
- **'भट्ट मथुरानाथशास्त्रिसाहित्यसम्मान'**– वर्ष 2004-05, विशिष्ट वैदुष्य के लिए, द्वारा राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर।
- **'विशिष्ट विद्वत्सम्मान'**– सन् 2004-05, द्वारा राजगङ्गा चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर।
- **'विशिष्ट विद्वत्सम्मान'**– सन् 2000, द्वारा जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समारोह समिति, जयपुर।
- **'योग्यता पारितोषिक'**- 1998-99 'पद्मिनी' उपन्यास पर द्वारा संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा पुरस्कार।
- **'योग्यता पारितोषिक** – 2009, संस्कृत शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर द्वारा **'नतितति'** एकवर्णप्रधान चित्रकाव्य के लिए।
- **'महर्षि पुरस्कार'**– 11 अप्रेल 2007, द्वारा व्यास बालाबक्ष शोध संस्थान, जयपुर।
- **'सम्मान-पत्र'**– 18 मार्च 2007, द्वारा राजस्थान गौड़ ब्राह्मण महासभा, मालवीय नगर संभाग, ज़यपुर।
- **पं. नित्यानन्दशास्त्रिस्मृतिसम्मान–** वर्ष 2008 द्वारा अखिल भारतीय साहित्य परिषद् एवं संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

सम्मानोपाधियाँ–

* **'शास्त्रमहोदधि उपाधि'**– सन् 1995, श्री वैदिक संस्कृति प्रचारक संघ, जयपुर के द्वारा प्रौढ शास्त्रीय पाण्डित्य के लिए महामहोपाध्याय पं. श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी की स्मृति में सम्मानित एवं पुरस्कृत।
* **'विद्यासागर'**– 29 अगस्त, 2006, बदरिकाश्रमस्थ-ज्योतिर्मठ एवं द्वारकास्थ-शारदापीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा जयपुरीय चातुर्मास के अवसर पर पदवी से अलंकृत।

संस्कृत भाषा के लिए योगदान–

– विभिन्न रचनाधर्मिता प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षण।
– अनेक यज्ञीय प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षण।
– अखिल भारतीय वास्तुविज्ञान तात्त्विक संगोष्ठी का आयोजन।

प्रसारण–

दूरदर्शन तथा आकाशवाणी केन्द्र, जयपुर के कार्यक्रमों में परिचर्चा, काव्यपाठ, कथा आदि का अनेक बार प्रसारण।

कविसम्मेलन–

राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा अन्य संस्थानों द्वारा विभिन्न अवसरों पर आयोजित संस्कृत कविसम्मेलनों में काव्यपाठ।

पत्र-पत्रिका–

भारती, स्वरमङ्गला, विप्रकीर्ति, वयम् आदि पत्र-पत्रिकाओं में मुक्तक काव्य, कथा, आलेख, शोध लेखों का प्रकाशन।

धार्मिक कार्य–

राजस्थान राज्य तथा अन्य राज्यों में समय-समय पर आयोजित यज्ञादि का अनुष्ठान, देव प्राण-प्रतिष्ठा आदि लगभग 50 कार्यक्रमों में आचार्य, उपाचार्य तथा ब्रह्मा के पद पर कार्य सम्पादन, जिनमें 108 कुण्डीय यज्ञ का आचार्यत्व उल्लेखनीय है।

विशेष–

वंश परम्परा के पूर्वज जयपुर के गालव ऋषि- तपस्यातीर्थ (गलतातीर्थ) के महन्त-परिवार के पुरोहित (जोशी) रहे हैं।

पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'

राष्ट्रपतिसम्मानित, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजित

कवि-संस्तवः

(नतिततिकाव्यगतः)

वेदस्यार्थविदः षडङ्गसहितुः सद्व्याकृतिं सञ्जुषः
शिक्षासारबुधो निरुक्तवचसो ज्योतिर्महाज्योतिषः।
छन्दोभिर्नवकल्पकल्पनरुचो वेदान्तसारस्पृहो
नम्यन्ते जगदीशशर्मगुरवः साहित्यविद्यार्णवाः ॥1॥

श्रीगङ्गाबक्षशर्मा जनकगुरुगुरुः कर्मकाण्डप्रवीणो
जोशी श्योदत्तशर्मा पितृवरजनको गालवर्षेः सुधाम्नः।
पूज्यो दुर्गाप्रसादः पितृवरचरणः सूरजाख्या च माता
राजन्तां पूर्वजा मे हरिपदरसिकाः कीर्तिशेषाः प्रपूज्याः ॥2॥

मुन्नी मे सहधर्मिणी सुगृहिणी याता दिवं राजते
ताराशङ्करकाव्यवित्सुमनसौ रूबी तथा सौरभः।
जामाता गिरिधारिलालविबुधः पुत्री सरोजाह्वया
बाला मे मधुसंज्ञिता रवियुता जीवन्तु सर्वे मुदा ॥3॥

पद्यिन्यां हृद्यगद्ये नवरसरुचिरा पात्रभाषानुबद्धा
उत्कृष्टा खण्डकाव्ये प्रहरणविषया पत्रदूते च पद्ये।
दिव्या गोष्ठ्यां कवीनां विविधरसकपूरे च पाण्डित्यपूर्णा
प्राज्ञानां हर्षदात्री विलसति सततं मञ्जुपाण्डेयवाणी ॥4॥

राजस्थाने सुराज्ये जयपुरनगरे चन्द्रपोलाख्यहट्टे
कोषाध्यक्षस्य मार्गे विहितवसतिना गौडविप्रान्वयेन।
रम्यं श्रीमोहनेन प्रणतिविषयकं निर्मितं चित्रकाव्यं
श्रीवाग्देवीप्रसादाद् गुरुपदकृपया जायतां प्राज्ञतुष्ट्यै ॥5॥

□

पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'

राष्ट्रपतिसम्मानित, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजित

वंश–वृक्ष एवं परिवार

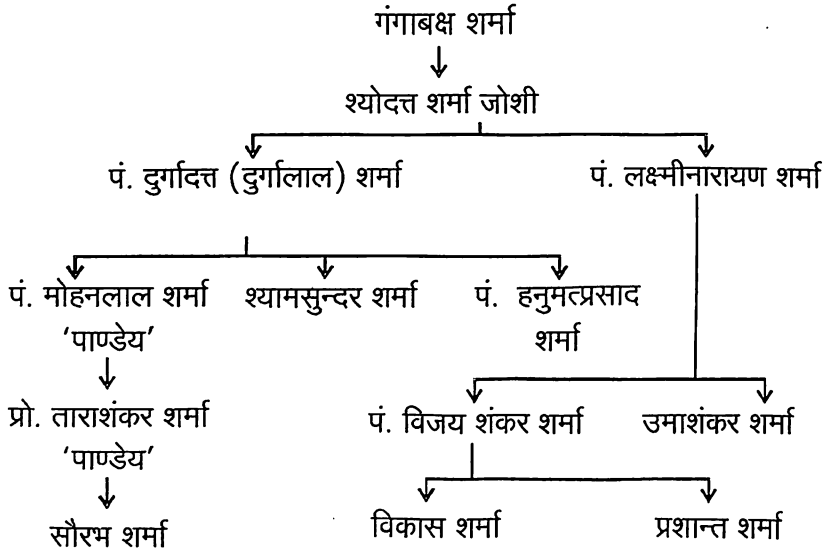

परिवार

पत्नी : स्व. श्रीमती मुन्नी देवी

पुत्र : डॉ. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष – साहित्य विभाग
ज.रा. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

पुत्रवधू: श्रीमती सुमन शर्मा

पुत्री : 1. श्रीमती सरोजबाला शर्मा, शिक्षिका, शिक्षा विभाग, राजस्थान
2. डॉ. मधुबाला शर्मा, स्कूल व्याख्याता, संस्कृतशिक्षा, राजस्थान

पौत्र : सौरभ शर्मा, विद्यार्थी – बी.सी.ए.

अनुक्रमणिका

प्रणतित्रयः ४९-८२

विविधरूपगणपतिस्तवनम् ४९

वागीश्वरी - वन्दना ५२

शिवाष्टमूर्तिस्तुतिः ५३

द्वादशज्योतिर्लिङ्गध्यानानि ५५

नवदुर्गास्तवनम् ५८

दश महाविद्याः ६०

चतुर्दशमन्वन्तरावतारवन्दनम् ६३

विष्णोश्चतुर्विंशत्यवतारस्तवः ६५

लक्ष्मीनारायणनुतिः ६८

महालक्ष्मीस्तवनम् ६९

नवग्रहस्तवः ७१

अरुन्धतीसहितसप्तर्षिसंस्तवनम् ७२

चतुर्विंशतिगुरुस्तवनम् ७४

श्रीराम-परिवारः ७९

स्तुतिप्रकीर्णकम् ८१

प्रशस्तिका ८३-९२

सेव्यतां देववाणी ८३

राजन्तां कालिदासाः ८५

शङ्कराचार्यसंस्तवः ८६

जगद्गुरु-श्रीरामानन्दाचार्य-शिष्यपरम्परा ८९

श्रीनारायणदासगौरवम् ९२

समस्यासौहित्यम् ९३-१०७

सृष्टिरेषा विचित्रा ९३

चातुरी ९५

दक्षिणा ९६
मान्यो न होलोत्सवः ९७
साधना ९८
समस्यापूर्तयः १००
समस्यासौहित्यम् १०३

राष्ट्रियम् १०८-१२२
श्रीयोगिराजोऽरविन्दः १०८
बङ्गजनमुक्तिः ११०
कश्मीरं भारताङ्गम् ११२
करगिल-विजयः ११४
राजस्थान - गौरवम् ११७
मास्तु विस्फोटकाण्डम् ११९
बेअन्तोऽप्यन्तयुक्तः १२१
महामोष-काण्डम् (घोटालाकाण्डम्) १२२

वैदुषीवैभवम् १२३-१५८
जगद्गुरवः श्रीनिरञ्जनदेवाचार्याः १२३
जगद्गुरवः 'श्रीजी'महाराजाः १२४
राजवैद्याः श्रीकृष्णरामभट्टाः १२६
आशुकविश्रीनित्यानन्दशास्त्रिप्रशस्तिः १२८
पीयूषपाणयः स्वामिलक्ष्मीरामाः १३०
महामहोपाध्यायाः श्रीगिरिधरशर्मचतुर्वेदाः १३१
कविवरमथुरानाथभट्टाः १३२
वेदान्तविदः श्रीपुरुषोत्तमचतुर्वेदाः १३३
साहित्यमर्मज्ञाः श्रीनन्दकिशोरनामावलाः १३५
पद्मश्री-पट्टाभिरामशास्त्रिणः १३७
विजयतां श्रीहरिः १३८
साहित्यविद्यार्णवाः श्रीजगदीशशर्माणः १३९

विद्वच्चतुष्टयी-नुतिततिः १४१
कविवराः श्रीनवलकिशोरकाङ्कराः १४३
ज्योतिर्विदः कल्याणदत्तशर्माणः १४५
पद्मश्री-मण्डनमिश्र-मण्डनम् १४६
विद्वन्मूर्धन्याः श्री कालूराममहोदयाः १४८
प्रो. रामचन्द्रद्विवेदाः १४९
वैयाकरणशिरोमणयः श्रीगङ्गाधरभट्टाः १५०
प्राणाचार्याः स्वामिरामप्रकाशाः १५१
देवर्षि-कलानाथशास्त्रिणः १५३
याज्ञिकसम्राजः शिवदत्तजोशिनः १५४
भाषाविशेषज्ञाः श्रीराजेन्द्रशङ्करभट्टाः १५५
वैद्यवर्याः श्रीफूलचन्द्रशर्माणः १५६
ब्रह्मर्षयः श्रीहरिकृष्णाः (छङ्गाणी) १५८

लोकनायकाः १५९-१६७
श्रीमाधवानन्द-गौरवम् १५९
यशस्वी भैरोंसिंहः १६१
प्रतापी भैरोंसिंहः १६२
विभातु कैलाशपतिर्मनीषी १६३
न्यायपालाः श्रीवेदपालत्यागिनः १६४
न शोको नामधेये १६५
शिक्षामन्त्री श्रीघनश्यामतिवाडी १६६

प्रणतिततयः

विविधरूपगणपतिस्तवनम्

(वन्दारुवृन्दारकवृन्दवन्दितचरणारविन्दस्य सच्चिदानन्दात्मनः पार्वतीपरमेश्वरनन्दनस्य विघ्नविनाशनस्य श्रीगजाननस्य महिमा न केवलं भारतवर्षे अपि तु वेविद्यते विश्वस्मिन् विश्वे विश्रुतः। सर्वेषु ग्रामेषु नगरेषु राज्येषु राष्ट्रेषु च यत्र तत्र सर्वत्र शोशुभ्यन्ते गणपतिमन्दिराणि। तत्र विविधरूपेण विराजमानोऽयं सर्वसुराग्रपूज्यो गणपतिः स्वीयसाध्यसिद्ध्यै ब्रह्मर्षिदेवर्षिराजर्षिभिः साधकसङ्घैः सततं संस्मर्यते, नोनूयते, पोपूज्यते च नितान्तम्। मोदकदूर्वाङ्कुररसालप्रियोऽयं मूषकवाहनो गणपतिर्मोदकादिविभिन्न-मिष्टान्नप्रदानैर्मोदयति भक्तजनमानसानि। ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रैः सर्वेषु माङ्गलिककार्येषु प्रत्यूहापनोदनार्थं सर्वप्रागस्यैव गणपतेः समर्चनं विधीयते। विधिकार्यसाधनार्थमसौ गणपतिर्विविधरूपाणि धारयति। कविनामुना तेषामेव विविधरूपाणां स्तवनमत्र प्रस्तुतम्।)

बालगणपतिः

आम्रं रम्भां रसालं पनसमथ करैर्धारयन्तं वरेण्य-
ङ्कुर्वन्तं बालखेलां सह मुनिबटुकैर्मोदकान् भक्षयन्तम्।
बालार्काभं त्रिनेत्रं गिरिशगिरिसुताहस्तदत्तान्नपुष्टं
वन्दे बालं गणेशं प्रखरमतिजुषं सर्वविघ्नोपशान्त्यै॥१॥

द्विजगणपतिः

पुस्तं पालाशदण्डं श्रुतिकरकमलैः कुण्डिकामक्षमालां
बिभ्राणं यज्ञसूत्रं युगगजवदनैः शोभमानं गणेशम्।
वेदानुच्चारयन्तं वसुविकृतियुतान् त्रिस्वरैरोम्प्रपूर्वं
संस्कारैर्धूतपापं द्विजनिगणपतिं शुक्लवर्णं समीडे॥२॥

तरुणगणपतिः

पाशाञ्जम्बूङ्कपित्थं सृणिमथ दशनं शाल्यपूपौ रसालं
वामे दक्षे विशालैर्वसुकरकमलैर्धारयन्तं मनोज्ञम्।
मध्याह्नार्कप्रभासं प्रमथगणयुतं सर्वदेवाग्रपूज्यं
विद्यावार्धिं वदान्यं तरुणगणपतिन्नौमि बोधोपलब्ध्यै॥३॥

शक्तिगणपतिः

एकान्ते स्वीयहर्म्ये कुसुममणिचयैर्भूषिते भव्यचित्रैः
सिद्ध्याश्लिष्टं सुतल्पे मृदुलतमपटे वासिते दिव्यगन्धैः।
सम्भोक्तुं स्वानुकूलं प्रियतमकथनैश्चाटुकारन्नितान्तं
सन्ध्याभ्राभं समीडे सफलमनसिजं शक्तियुक्तङ्गणेशम्॥४॥

वीरगणपतिः

खड्गं चक्रं त्रिशूलं सृणिपरशुशरान् कार्मुकं शक्तिपाशौ
वेतालं मुद्गरञ्च ध्वजनिशितगदे कुन्तखट्वाङ्गसर्पान्।
दोर्दण्डैर्धारयन्तं समरभुवि सदा दातदैतेयदर्प
वन्दे वीरङ्गणेशं प्रमथगणयुतं रक्तगन्धानुलिप्तम्॥५॥

सिद्धगणपतिः

रम्ये कैलाशशृङ्गे कुशदलनिचयैः शोभमाने कुटीरे
वेद्यां पद्मासनस्थं यमनियमयुतं ब्रह्मबीजञ्जपन्तम्।
कुर्वन्तं ब्रह्मयज्ञङ्गुडतिलरचितान् मोदकान् भक्षयन्तं
वन्दे सिद्धङ्गणेशं मुनिनिकरनुतं स्वर्णवर्णं द्विपास्यम्॥६॥

भक्तगणपतिः

रम्भाग्रे नालिकेरं मधुरगुडमथो पायसं भक्षयन्तं
श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं शशिशकलधरं मालयालिप्तभालम्।
देवं दर्भासनस्थं जितकरणचयं भक्तवृन्दैकगम्यं
भक्त्याधारं गणेशं शिवमनुनिरतं भक्तहेरम्बमीडे॥७॥

उच्छिष्टगणपतिः

नीलाब्जङ्काकचिञ्चां मृदुकलमकणान् दाडिमीमक्षमालां
वीणां दोर्भिर्दधानं ललितभगरसास्वादलुब्धं प्रकम्रम्।
उच्छिष्टास्यैः सुभक्तैः शुभमनुपठने व्यापृतैः सेव्यमान-
मुच्छिष्टं वारणास्यं स्मरहरतनयं श्यामवर्णं समीडे॥८॥

विघ्नगणपतिः

शङ्खश्चक्रङ्कुठारं सृणिमथ दशनं मञ्जरीं बाणचापौ,
इक्षुं पाशं सुमेषुं ध्वजनिशितगदे कुन्तखट्वाङ्गसर्पान्।
दोर्दण्डैरुद्वहन्तं दितदितिजदलं विघ्ननाशैकहेतुं
विघ्नेशं हस्तिवक्त्रङ्कनकसमरुचिं पार्वतीपुत्रमीडे॥९॥

क्षिप्रगणपतिः

यो भक्तेभ्योऽष्टसिद्धीर्नवनिधिविभवं पुत्रपौत्रप्रपौत्रान्
साङ्गं वेदं सबोधं वितरति सततं क्षिप्रमेव प्रसन्नः।
तं दन्तङ्कल्पवल्लीं सृणिमथ निशितं रत्नकुम्भञ्च पाशं
बिभ्राणं रक्तवर्णङ्गणपतिमनघं क्षिप्रसंज्ञं समीडे॥१०॥

हेरम्बगणपतिः

पाशं दन्ताक्षमाले परशुफलवरान् मुद्गरं मोदकञ्च
दोर्दण्डैरुद्वहन्तं ह्यभयमपि सृणिं सिंहपृष्ठाधिरूढम्।
श्वेताङ्गं शुक्लवस्त्रं धवलसुमचयैरर्च्यमानं स्वभक्तै-
र्देवं हेरम्बमीडे सुरमुनिनुतं पञ्चमातङ्गवक्त्रम्॥११॥

लक्ष्मीगणपतिः

खड्गं माणिक्यकुम्भं शुकनिशितसृणी कल्पवल्लीञ्च पाशं
नीलाब्जं बीजपूरं शुभवरदकरैर्धारयन्तं वरेण्यम्।
दक्षे वामे च देवीद्वयलसिततनुं भालचन्द्रं त्रिनेत्रं
वन्दे लक्ष्मीगणेशङ्गजपतिवदनङ्गौरवर्णं वदान्यम्॥१२॥

महागणपतिः

रक्ताब्जं बीजपूरं निजरदनगदे रत्नकुम्भञ्च पाशं
व्रीह्यग्रञ्चक्रचापौ पृथुलवरकरैरिक्षुभारं वहन्तम्।
आश्लिष्टं सिद्धिदेव्या सकमलकरया सानुरागञ्च बुद्ध्या
वन्दे देवं महान्तं शशिशकलधरं रक्तवर्णङ्गणेशम्॥१३॥

□

वागीश्वरी - वन्दना

वेदानुच्चारयन्ती प्रमुदितवदना कच्छपीं वादयन्ती
शुक्लाङ्गी शुक्लवस्त्रा सितसरसिरुहे या स्थिता शुक्लहारा।
जिह्वाग्रे पण्डितानां रचयति सततं सर्वविद्याप्रनृत्यं
भाषाणां मातृरूपा जगति विजयते सा हि गीर्वाणवाणी॥१॥

या विद्याधीश्वराणां विमलमतिमतामेकपूज्या सदैव
हर्षान्मोमुद्यमाना कविकुलकलितस्तोत्रमाकर्ण्य तूर्णम्।
भव्या भूरिप्रभावा किसलयचरणा राजहंसोपविष्टा
वन्द्या हृद्याऽनवद्या विलसतु वदने सा हि गीर्वाणवाणी॥२॥

या वृन्दारकवृन्दवन्दितपदा कारुण्यवारांनिधि-
र्भक्तानुग्रहणैकविग्रहवती भोगापवर्गप्रदा।
अज्ञानान्धतमोहरी सुखकरी कर्पूरकुन्दप्रभा
पायान्नः शरदिन्दुसुन्दरमुखी सा सारदा शारदा॥३॥

वेदाङ्गैर्व्यासवाक्यैः कविवरवचनैर्या पुपोषात्मदेहं
रम्यैः स्तोत्रैर्मुनीनां विमलमतिमतां या हि जाता प्रसन्ना।
शास्त्रे वादे कवित्वे वितरति सततं शेमुषीं सेवकेभ्यः
सा पूर्णानन्ददात्री विलसतु वदने शारदा सत्कवीनाम्॥४॥

श्रौतीशिक्षास्वरूपा सरसिजजसुता सामसङ्गीतसक्ता
शान्तस्वान्ता सुरम्या सितसरसिरुहे संस्थिता सर्वशुक्ला।
स्तुत्या स्तोमैः सुराणां सदसि सहचरैः सेवकैः साध्यसङ्घैः
शुद्धा शीतांशुसौम्या सुखयतु सरसा शारदा शास्त्रसारा॥५॥

□

शिवाष्टमूर्तिस्तुतिः

पृथ्वीमूर्तिः (शर्वस्य)

काञ्च्यां शम्भोरमीलत् कुतुकपरवशा पार्वती नेत्रयुग्मं
तस्माज्जातेऽन्धकारे जगति पतिगिरा मार्तिकं शर्वलिङ्गम्।
प्राच्यांभूद्दोषमुक्ता तिमिरगिरिनिभां मालतीतैललिप्ता–
मेकाम्रेशस्य मुक्त्यै बहुविधवरदां भूमिमूर्तिं समीडे॥१॥

जलमूर्तिः (भवस्य)

लूताजम्बूकरीन्द्रैर्विहितनतिततिं विश्ववन्द्यां प्रसन्नाम्
जम्बूपत्राभिषिक्तां सततजलमयीं विप्रजम्बूकनाथाम्।
श्रीरङ्गस्थानपार्श्वे भवजभयभिदः शूलपाणेर्भवस्य,
वन्देऽहं नीरमूर्तिं सकलशुभकरीं जीवनाधारभूताम्॥२॥

अग्निमूर्तिः (रुद्रस्य)

चक्षुर्मीलप्रसङ्गे कुतुकपरवशे ध्वान्तनाशाय भूय-
स्तेजोलिङ्गं सिषेवे गिरिपतितनया दोषनाशाय यत्र।
तस्मिन् दिव्यारुणाद्रौ कनकगिरिनिभां रुद्रदीप्तिप्रदीप्ताम्
वन्देऽहं वह्निमूर्तिं विधिहुतहविषा मोदमानां प्रपूज्याम्॥३॥

वायुमूर्तिः (उग्रस्य)

नाम्ना श्रीकालहस्तीश्वर इति विदितां नामवाच्यैः प्रवन्द्याम्
कण्णप्पेनार्चिताक्षीं स्वनयनयुगलोपायनैर्मोक्षदात्रीम्।
दीपोद्योतावलोक्यां तिमिरततिगृहामुग्रदेवस्य दिव्याम्
वन्देऽहं वायुमूर्तिं सततगतिमयीं स्वर्णमुख्याः प्रतीरे॥४॥

आकाशमूर्तिः (भीमस्य)

अब्धेः पार्श्वे चिदाकाशपुरभुवि सदा मन्दिरे शून्यरूपाम्
कावेरीकूलभूमौ कनकमयतनुं ताण्डवे भीमरूपाम्।

स्वर्णस्रग्भाप्रदीप्तां तपनकवचयुग् - दक्षिणावर्तशङ्खाम्
भीमस्याकाशमूर्तिं प्रलयविधिवरां शूलिनो नौमि नित्यम्॥५॥

सूर्यमूर्तिः (ईशानस्य)

तेजोराशेर्निधानां मुनितुरगरथे राजमानां वरेण्याम्
गायत्र्यावासभूतां भुवनजनहितां वेदभाभिः प्रदीप्ताम्।
प्रत्यक्षां प्राणदात्रीं तिमिरगिरिपविं ब्रह्मविष्णुप्रवन्द्याम्
ईशानस्यात्मरूपां सकलसुरनुतां सूर्यमूर्तिं समीडे॥६॥

चन्द्रमूर्तिः (महादेवस्य)

शान्तस्वान्तां सिताभां डमरुकनिनदैः शब्दशास्त्रप्रवीणाम्
गङ्गानीराभिषिक्तामृतमयतनुं भेषजेशां द्विजेशाम्।
रम्ये बङ्गप्रदेशे चटनिकटगिरौ राजमानां त्रिनेत्राम्
वन्देऽहं चन्द्रमूर्तिं चतुरजननुतां श्रीमहादेवशम्भोः॥७॥

यजमानमूर्तिः (पशुपतेः)

नेपाले काठमाण्डूनगरसुरपुरे वागमत्याः प्रतीरे
पश्चास्यां विश्वबीजां सुरभिजपयसा सिच्यमानां प्रदिव्याम्।
देवेभ्यो हव्यदात्रीं मणिचयजटितां स्वर्णदेहां त्रिनेत्राम्
वन्देऽहं होतृमूर्तिं सकलपशुपतेर्ब्रह्मविष्णुप्रवन्द्याम्॥८॥

□

द्वादशज्योतिर्लिङ्गध्यानानि

सौराष्ट्रे सोमनाथः

सर्पक्ष्वेडावसिक्तं शुभसुरसरिता-शीतलं यस्य शीर्षम्
शुक्लं शुक्लांशुभाभिः सिततरवृषभे संस्थितं शान्तमूर्तिम्।
सिन्धोः पार्श्वे प्रभासे शशिविहितनतिं शङ्करं शङ्करन्तम्
सौराष्ट्रे सोमनाथं शुचितरवपुषं स्वान्तशान्तं स्मरामि॥१॥

श्रीशैले मल्लिकार्जुनः

गोपैः सार्धं वसन्ती यमनियमवती चन्द्रगुप्तस्य पुत्री
शुश्रूषां यस्य चक्रे निजधनरचिते मन्दिरे शङ्करन्तम्।
मद्रासप्रान्तकृष्णाशुभतटवसुधाराजमाने विशाले
वन्दे श्रीशैलशृङ्गे नुतममरचयैरर्जुनं मल्लिकाद्यम्॥२॥

उज्जयिन्यां महाकालः

हुङ्कारेणैव दैत्यो विधिवरबलवान् मारितो दूषणाख्यो
येन त्रातो हि विप्रः सुतजनसहितः शङ्करन्तं प्रसन्नम्।
शिप्राम्भःक्षालिताङ्घ्रिं सकलशुभकरं भस्मना भूषिताङ्गं
श्रीमत्यामुज्जयिन्यां मदनमदभिदं श्रीमहाकालमीडे॥३॥

मान्धातृशैले ओङ्कारेशः, अमलेश्वरः

रेवानीराभिषिक्तं प्रणवमयतनुं दीपदीप्तं महेशं
तुष्टं विन्ध्याद्रिभक्त्या नृपवरतपसा भ्राजमानं विशाले।
भव्ये मान्धातृशैले सलिलपरिवृतं प्राकृतं लिङ्गमेकम्-
ओङ्कारेशं समीडे पशुपतिममलेशं त्रिनेत्रं द्वितीयम्॥४॥

हिमवत्पृष्ठे केदारनाथः

सन्तुष्टश्चौपमन्यौ दितिजसुरनुतं पूजितं पाण्डुपुत्रै-
र्मन्दाकिन्यां नृनारायणवरतपसा मोदिनं वर्तमानम्।
कान्ते केदारशृङ्गे गिरिपतिहिमवत्पृष्ठदेशाधिरूढे
वन्दे केदारनाथं पशुपतिमनघं नैकजन्माघनाशम्॥५॥

डाकिन्यां भीमशङ्करः

मूर्तेः श्च्योतज्जलाच्छं मिहिरकुलजनौ भीमभूपे प्रसन्नं
भीमानद्यच्छपाथोविहितपदनतिं प्रेतभूतादियुक्ते।
सह्याद्रेः शोभमानं पृथुतरशिखरे डाकिनीनामधेये
वन्दे देवं महेशं प्रमथगणनुतं शङ्करं भीमपूर्वम्॥६॥

वाराणस्यां विश्वनाथः

सृष्ट्यादौ स्थापिता कौ प्रलयनसमये येन शूलोद्धृता या
वाराणस्याश्च तस्यां बुधनिकरमुदे ज्ञानवाप्यां वसन्तम्।
गङ्गानीराभिषिक्ते पुनरपि रचिते शङ्कराचार्यहस्तै-
र्वन्देऽहं विश्वनाथं मुनिनिकरनुतं मन्दिरे मोक्षबीजम्॥७॥

गौतमीतटे त्र्यम्बकेश्वरः

मुम्बाप्रान्तेऽतिरम्ये क्षितिरुहगहने मण्डले नासिकाख्ये
ब्रह्माद्रेर्भव्यशृङ्गे प्रखरमतिमता पूजितं गोतमेन।
गोदाधाराभिषिक्तं सकलसुरनुतं विष्णुधात्रीशरूपं
गर्ते स्थाणुं त्रिलिङ्गं त्रिगुणमयतनुं त्र्यम्बकेशं समीडे॥८॥

चिताभूमौ वैद्यनाथः

ग्रीवादानापचित्या निशिचरपतये येन दत्तं स्वलिङ्गं
लङ्कायां स्थापनार्थं स्थितिपणसहितं मार्गमध्ये त्रिनेत्रम्।
तन्मूत्रोत्सर्गकाले शिशुकरपतितं भस्मभूमौ चिताया
वन्दे तं वैद्यनाथं शिशिरजलमुदं रावणाङ्गुष्ठमुद्रम्॥९॥

दारुकावने नागेश्वरः

येन ध्वस्ताः समुद्रे दितिजबलपतेर्दारुकस्य प्रयोधा
भक्तश्रेष्ठश्च त्रातः कलितकरुणया सुप्रियः सार्थवाहः।
गौरीप्रेम्णा वसन्तं बहुविभवयुते दारुकारण्यभागे,
नागेशं नागहारं नगपतितनयाप्राणनाथं नमामि॥१०॥

सेतुबन्धे रामेश्वरः

मूढोऽसि त्वं विनार्चां पिबसि जलमिति व्योमवाणीं निशम्य,
श्रीरामः सिन्धुतीरे दशमुखहतये सैकतं भर्गलिङ्गम्।
संस्थाप्यार्चां विधाय प्रचुरशुभकरीं प्राप साम्राज्यलक्ष्मीम्,
रामेशं सेतुबन्धे सकलनरनुतं मोक्षदं नौमि नित्यम्॥११॥

शिवालये घुश्मेश्वरः

देवाद्रेर्भव्यदेशे विमलकुलजनिर्विप्रवर्यः श्रुतिज्ञः,
पुत्राभावात् सुधर्मा चरमदयितया घुश्मया सार्धमीशम्।
सूनुं लेभे प्रपूज्य प्रथमदयितया घातितोऽसौ हि पुत्रः,
प्राप्तप्राणो हि येन प्रमथगणपतिं नौमि घुश्मेश्वरन्तम्॥१२॥

□

नवदुर्गास्तवनम्

(दुर्गैव सृष्टेराद्या शक्तिः, अदसीयानुपमानुग्रहवशादेव स्रष्टा सृष्टेः सर्जनम्, पुरुषोत्तमः प्रजानां परिपालनम्, शम्भुः संसारस्य संहारं विदधाति। अन्येऽपि सेन्द्राः समे सुमनसः स्वस्वनियोगं समाचरन्ति भगवतीशक्त्या शक्तिमन्तो भूत्वा नितान्तम्। भक्तजनमानसनिकुञ्जविहारिण्याः, सिद्धमुनिजनमनोमन्दिरलास्यविधायिन्याः, यमनियमदमशमोपदेशिन्याः, घनविपदुपशमिन्याः, कलिमलहारिण्याः, भवजलनिधितारिण्याः, त्रिविधतापनिवारिण्याः, स्मरहररमण्याः, दनुजदलदलिन्या अस्या एव दुर्गायाः शैलपुत्रीप्रभृतिनामधेयानि नवस्वरूपाणि नवरात्रसमारोहे सर्वैरपि साधकैः प्रतिदिनं नोनूयन्ते पोपूज्यन्ते जोहूयन्ते बोभुज्यन्ते तरीतृप्यन्ते मरीमृज्यन्ते च स्वाभीष्टसिद्धये नितान्तम्। श्रीनवदुर्गाणामासामनुग्रहेणैव समेऽपि सिद्धिकामाः साधकाः संसारसागरं समुत्तीर्य बोभूयन्ते तदीयपरमपदभाजः। श्रीनवदुर्गाकृपामभिलषता विश्वकल्याणकामेन कविनामुना विश्वेश्वरीप्रसन्नतायै निर्मितानीमानि नव पद्यानि।)

शैलपुत्री

शम्भोः पत्नी सती या जनककृतमखे मानहानेः स्वपत्यु-
र्योगेन त्यक्तदेहा पुनरपि जनने प्राप तस्यार्धदेहम्।
तां देवीं देववन्द्यां कमलसुमधरां शूलहस्तां सिताङ्गीं
सेवेऽहं शैलपुत्रीं सिततरवृषभे संस्थितां चन्द्रचूडाम्॥१॥

ब्रह्मचारिणी

या वर्षाणां सहस्रं व्रतनियमवती बिल्वपत्राण्यखादीत्
तानि त्यक्त्वा च पश्चाद् दृढतमतपसे नाम चासीदपर्णा।
वामे हस्ते च कुण्डीं तदितरसुकरे याऽक्षमालां दधाति
वन्दे तामीशपत्नीं बहुविधवरदां ब्रह्मचारिस्वरूपाम्॥२॥

चन्द्रघण्टा

दन्तिद्वेष्योपविष्टां प्रबलदशभुजैश्चण्डशस्त्रास्त्रधर्त्रीं
तप्तस्वर्णाभदेहां रणकरणपरां दुष्टदैत्येन्द्रहन्त्रीम्।
घण्टाकारार्धचन्द्रं स्वशिरसि दधतीं रक्तवस्त्राभिरामां
वन्देऽहञ्चन्द्रघण्टां दितिकुलभयदां स्वीयघण्टानिनादैः॥३॥

कूष्माण्डा

ब्रह्माण्डं निर्ममौ या मिहिरनिभविभा मन्दहासेन पूर्वं
कुण्डीश्चापश्च बाणं कमलमथ सुधापूर्णकुम्भश्च चक्रम्।
कौमोदीमक्षमालां रुचिरवसुभुजैरुद्वहन्तीं शरण्यां
कूष्माण्डां तां प्रवन्दे बहुविधवरदां सिंहपृष्ठाधिरूढाम्॥४॥

स्कन्दमाता

यस्या अङ्के कुमारो विलसति नितरां देवसेनाग्रयायी
हस्ताब्जैः पद्मयुग्मं वरमथ तनयं या हि धत्ते सिताङ्गी।
भक्तेभ्यो या प्रदत्ते निजपरमपदं कोटिसूर्यप्रकाशा
पायान्नः स्कन्दमाता स्मरहररमणी सा मृगेन्द्राधिरूढा॥५॥

कात्यायनी

पुत्रीरूपे प्रजाता यमनियमवतो या हि कात्यायनस्य
यां भेजुर्गोपबालाः पतिमभिलषितं लब्धुकामाश्च कृष्णम्।
उत्तप्तस्वर्णगात्री वरमभयमसिं नीरजं या दधाति
पायात् कात्यायनी सा सुरमुनिमनुजान् रम्यसिंहासनस्था॥६॥

कालरात्रिः

गाढध्वान्ताभकाया चरणकरगलाबद्धशम्पाभमाला
विद्युत्तेजस्त्रिनेत्रा हुतवहकणमुक्श्वासनिःश्वासवाता।
हस्तैर्धत्ते चतुर्भिर्वरमभयमसिं कण्टकं लोहलं या
तां वन्दे कालरात्रिं शिथिलशिरसिजां तैललिप्तां खरस्थाम्॥७॥

महागौरी

चतुर्हस्तैर्धत्ते वरमभयमुद्राश्च डमरुं
त्रिशूलं या देवी हिमशशिसिताङ्गी सुखकरी।
तपःपूता दिव्या हिमगिरिसुता सा भगवती
महागौरी पायात् सितवृषभरूढा शरणदा॥८॥

सिद्धिदात्री

गन्धर्वैः सिद्धसङ्घैरदितिदितिसुतैर्मानवैः सेव्यमाना
सिद्धीरष्टौ प्रदत्ते धृतकमलगदाशङ्खचक्राभिरामा।
यस्या एव प्रसादान्मदनमदहरोऽप्यर्धनारीश्वरोऽभूत्
पायात् सा सिद्धिदात्री जननभयहरा विश्वकल्याणकर्त्री॥९॥

□

दश महाविद्याः

काली

आद्या शक्तिस्त्रिनेत्रा वसति हिमगिरौ देववृन्दैः स्तुता या
युद्धे चोग्रस्वभावाऽसुरकुलहनने जायते कालकाया।
विद्यानां मूलतत्त्वा सुरमुनिनुता कालतत्त्वप्रतीका
काम्या कल्याणकर्त्री कलयतु कुशलं कालिका कृष्णमूर्तिः॥1॥

तारा

भक्तानां तारिका या भवसलिलनिधेर्नम्यते सा हि तारा
शक्तिः सौम्यस्वरूपा सकलजनकृते सद्गतिं या प्रदत्ते।
उग्रापत्तारिणी या समरभुवि सदा हन्ति दैत्यान् प्रचण्डान्
[1]अक्षोभ्येनार्चिता सा प्रमुदितमनसा तारिका पातु भक्तान्॥2॥

षोडशी

या शक्तिर्विद्यमाना विधिहरिहरतः पूर्वमेव त्रिवेदान्-
नष्टे लोके लये या सृजति करुणया सर्वलोकं पुनश्च।
बालार्काभा त्रिनेत्रा प्रहरणविलसच्चारुहस्ता भवानी
सम्पूर्णाभिः कलाभी रुचिरतमतनूः शोभते षोडषी सा॥3॥

भुवनेश्वरी

या शक्तिर्भुवने यदा शिवमयी कल्याणकर्त्री तदा
रौद्री संहरते च राक्षसकुलं दीप्यद्दिनेशद्युतिः।
लोकानां जननात्पुनश्च भरणात् संहारकार्यात् सदा
सा भक्तैर्भुवनेश्वरीति कथिता सौख्यप्रदा मुक्तिदा॥4॥

---

(1) सुमेरुपर्वतपश्चिमतटस्थचोलनामकह्रदोत्तरभागनिवासिना अक्षोभ्याह्वयर्षिपूजिता नीलतारा।

भैरवी

[2]शक्तिर्वर्णस्वरूपा सकलसुरनुता भैरवार्धाङ्गिनी या
सौम्या या दुःखहन्त्री भवति शुभकरी तान्त्रिकैर्यन्त्रपूज्या।
संलग्ना चोग्ररूपा भुवनविनशने दक्षिणामूर्तिरूपा
लोकानां या विधत्ते [3]भर-रम-वमनं भ्राजते भैरवी सा॥5॥

छिन्नमस्ता

वज्राख्यानाडिकायामविरतवहनाद् वज्रवैरोचनीति
संज्ञा शाक्तैः प्रयुक्ता जिनमुनियतिभिर्बौद्धधर्मानुरक्तैः।
सा देवी लोकपूज्या शमनभयहरी सर्वसौभाग्यदात्री
पूर्वोत्पत्तौ मनुष्यैः कृतदुरितदलं छिन्नमस्ता छिनत्तु॥6॥

मातङ्गी

मातङ्गी विष्णवे या वितरति विभवं श्रीमतङ्गेशशक्ति-
र्वाणी-सिद्धिं मुनिभ्यः कृतिकरकवये शब्दकोषं प्रदत्ते।
काली श्रीः शारदा या स्वविविधविधिभिः पूज्यते सर्वलोकै-
र्भक्ताभीष्टप्रदात्री जयति शिवनुता राजमातङ्गिनी सा॥7॥

कमला

या क्षीराम्बुधिलब्धदिव्यजनना पद्मासने संस्थिता
या देवी तपनीयतुल्यवदना सौभाग्यसम्पत्प्रदा।
शक्तिः सैरिभमर्दिनी विजयते भक्तैः सदा वन्दिता
सा लक्ष्मीः कमलाभिधा भगवती विष्णुप्रिया भासते॥8॥

---

(2) स्वच्छन्दोद्योत-प्रथमपटलानुसारम्– अकारादः पर्यन्ता वर्णा भैरवाः कथ्यन्ते, ककाराद् ज्ञपर्यन्ता वर्णा योनिः (भैरवी) संज्ञया प्रसिद्धाः सन्ति।

(3) परशुरामकल्पसूत्रवृत्त्यनुसारं जगतो भरणं रमणञ्च विदधति तथा प्रलयावस्थायां शङ्करोदरस्थितजगन्निर्माणकाले वमनं करोति, अतः भ+र+व इति त्रिवर्णसंयोगादेषा शक्तिः भैरवी निगद्यते।

धूमावती

कैलाशे हि यया शिवो निगलितो व्याप्तश्च धूमो हृदि
जातोऽयं निजमायया विजयते दारिद्र्यमाप्नोच्च सा।
यस्या धूमिति बीजमन्त्रजपनाद् विन्दन्ति सिद्धिं बुधाः
शक्तिः सा निजघान धूम्रमसुरं धूमावती पातु नः॥9॥

बगलामुखी

पीताभूषणमाल्यवस्त्ररुचिरा पीतस्वरूपा च या
भक्तेभ्यो वरदायिनी रिपुकुलारण्याग्निरूपा स्वयम्।
वाताघातमनाशयत् कृतयुगे श्रीविष्णुनाराधिता
देवी सा बगलामुखी भगवती वागीश्वरी पातु नः॥10॥

□

चतुर्दशमन्वन्तरावतारवन्दनम्

स्वायम्भुवे

मन्वन्तरे क्रतुफलं सुरलोकदं यः स्वायम्भुवे वितरति प्रथमे मुनिभ्यः।
इन्द्रो बभूव तपसाहुतिगर्भजातः तं यज्ञरूपमनघं रुचिपुत्रमीडे॥१॥

स्वारोचिषे

स्वारोचिषे द्युतियुते शुभदे द्वितीये मन्वन्तरे सुचरितात् तपसः प्रभावात्।
जज्ञे हि वेदशिरसस्तुषितासुगर्भे वन्दे विभुं सकलभक्तनुतं शरण्यम्॥२॥

औत्तमौ

य औत्तमावनुपमे शिवदे तृतीये मन्वन्तरेऽजनि कृती सुनृतासुकुक्षौ।
धर्मात्क्वदापि विचचाल न सत्यमार्गात् तं सत्यसेनमनघं शिरसा नमामि॥३॥

तामसे

मन्वन्तरे सपदि तामसनामधेये लब्ध्वा जनिश्च हरिमेधस औरसोऽयम्।
ग्राहाद् गजेन्द्रमनघं सममोचयत्तं लक्ष्मीपतिं सुमनसं हरिमाश्रयेऽहम्॥४॥

रैवते

मन्वन्तरे शुभदरैवतनामधेये शुभ्रात्मजो दयितया रमया प्रणुन्नः।
वैकुण्ठलोकममलं रचयाञ्चकार वैकुण्ठदेवमनिशं शिरसा नमामि॥५॥

चाक्षुषे

मन्वन्तरे विमलचाक्षुषनाम्नि षष्ठे क्षीराब्धिमन्थनविधिं कृपया चकार।
सम्भूतिकुक्षिजननं विरजस्य पुत्रं लक्ष्मीपतिं तमजितं प्रणमामि नित्यम्॥६॥

वैवस्वते

मन्वन्तरे मुनिमितेऽदितिकुक्षिजातो वैवस्वते सुतनयो मुनिकश्यपस्य।
यज्ञे बलिं त्रिचरणां वसुधां ययाचे तं वामनं सुवरदं शिरसा नमामि॥७॥

सावर्णिके

मन्वन्तरे वसुमितेऽजनि देवगुह्यात् सावर्णिके सुरपतिश्च बलिश्चकार।
देवेन्द्रभक्तिमुदितं सुरसिद्धिहेतुं तं सार्वभौममनिशं शिरसा नमामि॥८॥

दक्षसावर्णिके

मन्वन्तरे च नवमे जननी यदीया सावर्णिके समभवत्प्रथिताम्बुधारा।
आयुष्मतः सुतनयं मुनिवर्यमेनं भक्त्या भजेऽहमृषभं किल दक्षसंज्ञे॥९॥

ब्रह्मसावर्णिके

सावर्णेर्योऽजनि च दशमे श्रीमनोरन्तराख्ये
ब्रह्मोपाह्वे विविधवरदो विश्वसर्गाद् विषूच्याम्।
दैत्यान् क्रूरान् सुरहितपरो घोरशस्त्रैर्जघान
विष्वक्सेनं प्रणतशिरसा तं भजे स्वर्गपालम्॥१०॥

धर्मसावर्णिके

मन्वन्तरे शिवमिते ननु धर्मसंज्ञे सावर्णिके वरदवैधृतिगर्भजातम्।
धर्मोपदेशकुशलं सुकृतावतारं श्रीधर्मसेतुमहमार्यसुतं नमामि॥११॥

रुद्रसावर्णिके

मन्वन्तरे रविमिते किल रुद्रसंज्ञे, सावर्णिके सुचरितस्तपसां निधानात्।
सत्यान्मुनेरजनि यः खलु सूनृतायां वन्दे स्वधामनियतं पुरुषावतारम्॥१२॥

रौच्यदैवसाविर्णके

दिव्ये त्रयोदशमिते परमप्रशान्तः सावर्णिकेऽथ शुभदे रुचिदेवसंज्ञे।
श्रीदेवहोत्रमुनितोऽजनि यो बृहत्यां योगेश्वरश्च शिरसा प्रणमाम्यहं तम्॥१३॥

इन्द्रसावर्णिके

सावर्णेर्यः श्रुतिदशमिते श्रीमनोरन्तराख्ये
इन्द्रोपाह्वे विविधवरदो लोककल्याणकामः।
वैतानीये जननमुदरे प्राप सत्रायनाद् यो
भास्वन्तं तं विमलवपुषं श्रीबृहद्भानुमीडे॥१४॥

□

विष्णोश्चतुर्विंशत्यवतारस्तवः

प्रथमे स्वायम्भुव - मन्वन्तरे

मत्स्यः

सत्यव्रतायाखिलशक्तिधाम्ने दत्त्वोपदेशं श्रुतिचोरमुग्रम्।
निहत्य रक्षो विधये ददौ यो मत्स्यावतारं तमहं नमामि॥१॥

हयग्रीवः

आम्नायचोरौ मधुकैटभाख्यौ दिनोदये ब्रह्मण आदिदैत्यौ।
निहत्य वेदान् विधये ददौ यो विष्णुं हयग्रीवमहं भजे तम्॥२॥

सनत्कुमाराः

विधेरविद्याजनिदुःखिनो ये ध्यानावसाने मनसः प्रजाताः।
ज्ञानस्वरूपान् मुनिवृन्दपूज्यान् सनत्कुमाराँश्चतुरो भजे तान्॥३॥

नारदः

विध्यङ्कभागात्प्रकटीप्रभूय वैराग्यदीपं सनकाच्च लब्ध्वा।
वाल्मीकये व्यासवराय बोधं ददौ च तं नारदमाश्रयेऽहम्॥४॥

हंसः

निरुत्तरो यः सनकादिबोधे दध्यौ विधाता चिरमात्मयोनिम्।
शङ्कासमाधानपरायणं तं हंसावतारं प्रणमामि भक्त्या॥५॥

वराहः

उद्धर्तुकामो जलधौ निमग्नां धरां हिरण्याक्षवधश्चकार।
लोकेशनासाविवरात्प्रजातं वराहदेवं प्रणमामि भक्त्या॥६॥

यज्ञः

अभ्यर्थितो यो मुनिभिः समस्तैर्यज्ञेषु नित्यं प्रकटीप्रभूय।
फलं प्रदत्ते क्रतुसेवकेभ्यो यज्ञावतारं हरिमाश्रये तम्॥७॥

कपिलः

यज्ञाश्वचोरकथनात्कुपितेन येन भस्मीकृताः सगरषष्टिसहस्रपुत्राः।
तं सांख्यदर्शनविवर्धनमुख्यहेतुं वन्दे महामुनिमहं कपिलावतारम्॥८॥

नरनारायणौ

वैराग्यशिक्षणविधिं मुनिभ्यः प्रदातुं धर्मात्प्रजातमनघं ननु मूर्तिदेव्याम्।
तपोजुषं बदरिकाश्रमरम्यदेशे नारायणं नरसखं प्रणमामि नित्यम्॥९॥

दत्तात्रेयः

यस्मै शिक्षाः प्रदत्ताः श्रुतियुगगुरुभिर्लोकबोधोपलब्ध्यै
विख्यातो योऽवधूतो जगति समभवद् धूतसंसारबन्धः।
पूज्यादत्रेः प्रजातो बहुविधविषयालिप्तवर्णान् मुमोच
दत्तात्रेयं भजे तं सुरमुनिनुतं ब्रह्मविष्णवीशरूपम्॥१०॥

पृश्निगर्भः

विमातृवाक्यादतिखिन्नचित्तं तपश्चरन्तं कठिनं वने यः।
औत्तानपादिं ध्रुवमुद्दधार तं पृश्निगर्भं शिरसा नमामि॥११॥

ऋषभः

नाभेः प्रजातः शुचिमेरुदेव्यां सद्भ्यो ददौ पारमहंस्यधर्मम्।
यो ब्रह्मसौख्यं तपसा प्रलेभे तं नौमि भक्त्या ऋषभावतारम्॥१२॥

पृथुः

वेनस्य राज्ञः शवबाहुजातो राज्ञ्यार्चिषा यो सह धर्मपत्न्या।
अधर्मबन्ध्यां क्षितिमुद्दधार पृथुं समीडे प्रथितं नृपं तम्॥१३॥

षष्ठे चाक्षुषमन्वन्तरे

नृसिंहः

प्रह्लादभक्तिविभवात् परमप्रसन्नो दैत्यं हिरण्यकशिपुं नखरैर्ददार।
यो हन्ति विघ्ननिकरं सततं सुराणां पूज्यं नृसिंहमनघं प्रणमामि भक्त्या॥१४॥

कूर्मः

अम्भोधिमन्थनविधौ तलमास्पृशन्तं पृष्ठे दधार गिरिमुन्नतमन्दरं यः।
पीयूषलब्धिविषये बहुयत्नवन्तं पूज्यं हरिं कमठरूपधरं नमामि॥१५॥

धन्वन्तरिः

दिव्याम्बरो दिविषदाममरत्वसिद्ध्यै पीयूषपात्रममलं करयोर्दधानः।
प्रादुर्बभूव जलधेर्बहुमथ्यमानाद् धन्वन्तरिं सकलरोगहरं भजे तम्॥१६॥

मोहिनी

पीयूषलब्धिविषये कलहे प्रवृद्धे, या नर्तनैर्मधुरभावयुतैश्च च गीतैः।
दैत्यान् विमुह्य विबुधान् सुधयाततर्षत्, तां मोहिनीं हरितनुं शिरसा नमामि॥१७॥

सप्तमे वैवस्वत-मन्वन्तरे

वामनः

स्वर्गच्युतेन्द्रबहुदुःखविषण्णचित्तो यज्ञे बलिं त्रिचरणां वसुधां ययाचे।
प्रादात् पुनश्च हरये त्रिदिवस्य राज्यं, तं वामनं सुवरदं प्रणमाम्युपेन्द्रम्॥१८॥

परशुरामः

यो हैहयेन जमदग्निवधात्प्रमन्युर्निःक्षत्रियां वसुमतीं बहुशो व्यधत्त।
तं रैणुकेयमनघं तपसां निधानं दीर्घायुषं परशुराममहं नमामि॥१९॥

श्रीरामचन्द्रः

ताताज्ञया वनमगाच्च विमुच्य राज्यं, मारीचनीचमवधीन्मृगयँश्च सीताम्।
यो रावणं दशमुखं सकुलं जघान, तं रामचन्द्रमनघं शिरसा नमामि॥२०॥

वेदव्यासः

जातः पराशरमुनेः किल सत्यवत्यां संवीक्ष्य यः कलियुगे नरबुद्धिमान्द्यम्।
विव्यास वेदमखिलं स्मृतिधर्ममूलं, व्यासं मुनिं सकलशास्त्रनिधिं भजे तम्॥२१॥

श्रीकृष्णः

योगेश्वरं हरविधातृसुरेन्द्रवन्द्यं, नारायणं नरसखं वसुदेवपुत्रम्।
कंसादिदैत्यदलनं शरणं प्रियाणां, श्रीकृष्णचन्द्रमनघं शिरसा नमामि॥२२॥

बुद्धः

यो राक्षसान् कलियुगे मखकर्मपृक्तान्, दृष्ट्वा नृपाजनगृहे जननं प्रलभ्य।
प्राचारयज्जगति नास्तिकबौद्धधर्मं बुद्धं तथागतमहं सततं भजे तम्॥२३॥

कल्की (कल्किः)

यः शम्भलाख्यविषये जननं प्रलभ्य, नाम्ना हि विष्णुयशसो भवने प्रजातः।
म्लेच्छान् हनिष्यति तुरीययुगावसाने, तं कल्किनं ह्यसिधरं शिरसा नमामि॥२४॥

टिप्पणी– द्वितीये स्वारोचिष-मन्वन्तरे, तृतीये उत्तम-मन्वन्तरे, चतुर्थे तामस-मन्वन्तरे, पञ्चमे रैवत-मन्वन्तरे च न बभूव कोऽप्यवतारः।

□

लक्ष्मीनारायणनुतिः

कर्ता धर्ता च हर्ता त्वमसि भुवि विभो! दीननाथस्त्वमेव
भक्तानां दुःखनाशी वितरसि विभवं प्राणिनां रक्षकोऽसि।
सत्यौजा दैत्यहन्ता त्वमसि शुभकरः सत्यनारायणस्त्वं
लक्ष्मीनारायणस्त्वं प्रचुरजपकृते मुक्तिदाता त्वमेव॥१॥

पादाङ्गुष्ठात्प्रसूता सकलमपि जगद् यस्य गङ्गा पुनाति
ग्राहग्रस्तं गजेन्द्रं कलितकरुणया सत्वरं यो ररक्ष।
शङ्खं चक्रं गदाम्भोजमपि युगकरैरुद्वहन्तं मुरारिं
वन्दे विष्णुं रमेशं भवजभयभिदं तं विना नास्ति गोप्ता॥२॥

साध्वाचारो मनीषी सकलहितकरो मायिनां प्राणहर्ता
हे विष्णो! मोक्षदातः! यतिमुनिनुतो बन्धुवर्गस्त्वमेव।
वेदस्तुत्यो निधीशस्त्वमसि शरणदः सर्वदेवप्रवन्द्यो
वर्णात्मा वर्णरूपस्त्वमवसि भुवनं विश्वकल्याणकारी॥३॥

शौरे! सुदर्शनगदाम्बुजशङ्खपाणे!
हे श्रीनिवास! मधुसूदन! कैटभारे!।
चाणूरमल्लनिजमातुलकंसनाशिन्!
कृष्ण! त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो!॥४॥

नमाम्यहं त्वं वसुदेवसूनुं
सर्वेश्वरं चन्द्रकुलावतंसम्।
साङ्गं सशक्तिं परिवारयुक्तं
कृष्णं सदा भक्तजनैकगम्यम्॥५॥

□

महालक्ष्मीस्तवनम्

हत्वा रावणमाहवे रघुवरः प्रत्यागतः सीतया
सौमित्रेण समं स्वकीयनगरं हर्षाप्लुतैर्मानवैः।
तेषां स्वागतहेतवे निजगृहं दीपैर्मुदा द्योतितं
तस्मादेव समस्तलोकनिवहैर्दीपावली पूज्यते॥१॥

लक्ष्मीर्लावण्यलीला लघुलभसलता लालसा लक्षपानां
लोकालङ्कारलौल्या लगडकलगिता लोपयन्ती लुलायम्।
लक्षण्या लाभलक्ष्या ललितलयलया लावनी लोलुभानां
लाक्षालेपैर्ललामा लघयतु लघुतां लोहिनी लेखलभ्या॥२॥

लोकस्याधारभूता त्वमसि शरणदे! भूमिरूपा त्वमेव-
एका त्वं तोयरूपा सकलमपि जगत् पासि नित्यं पयोदैः।
तेजोरूपा त्वमेका रविशशिभगता त्वं हि विद्युत्स्वरूपा
त्वं वाताकाशरूपा समवसि भुवनं प्राणशब्दस्वरूपा॥३॥

ये त्वामर्चन्ति लोकाः स्वजनपरिवृताः कार्तिके कृष्णपक्षे
भक्त्या रात्रावमायां समुचितविधिना नैकवस्तुप्रदानैः।
तुष्टा तेभ्यो मनोज्ञं वितरसि भवनं सर्वसम्पत्प्रपूर्णं
ते दासोऽहं प्रणत्या समपचितिविधिं निर्धनः पूरयामि॥४॥

भुङ्क्ते भोजयते स्वबान्धवगणो भोज्यञ्च नानाविधं
रात्रौ जागरणं सुगीतिसहितं कुर्वन्ति लक्ष्मीप्रियाः।
विस्फोटैर्निशि वह्निचूर्णरचितैः क्रीडन्ति बाला मुदा
द्यूते दुष्टजनाः परार्थहरणं कुर्वन्ति पापे रताः॥५॥

विद्यावान् विप्रवर्यस्तव पदकृपया जायते लोकमातः
सङ्ग्रामे राजपुत्रो जयति रिपुदलं जायते राज्यपालः।
वाणिज्ये वैश्यवर्यः पणविपणवशाज्जायते लाभयुक्तः
शूद्रः कर्मानुसारं धनमपि लभते सर्वसेवाप्रभावात्॥६॥

अब्धेर्जाता मनोज्ञा सरसिजवदना पद्मपत्रायताक्षी
पूज्या पद्मासनस्था दनुजदवदवा सैरिभप्राणहर्त्री।
तेजोरूपा सुराणां दितदितिजदला सर्वशस्त्रास्त्रधर्त्री
लक्ष्मीः सौभाग्यदात्री वितरतु सततं वैभवं सेवकेभ्यः॥७॥

विष्णुपत्न्यै महालक्ष्म्यै दायिन्यै सर्वसम्पदाम्।
पाण्डेयमोहनेनायं पद्याञ्जलिः समर्प्यते॥८॥

□

नवग्रहस्तवः

(नवग्रहगत्यनुसारं परिवर्तते ब्रह्माण्डगतिः। आजननान्मरणपर्यन्तं सर्वेऽपि प्राणिन एतेषाङ्गहाणां शुभाशुभफलदायिकाभिर्दशाभिः कदाचित् सुखसमृद्धि-भवनकलत्रपुत्रादिकं लभन्ते, जातु दारिद्र्यवनवासाल्पायुष्यपरिवाररराहित्यादिकं प्राप्नुवन्ति। एतेषां प्रभावेणैव क्वचिदतिवृष्टिः, कुत्रचिदल्पवृष्टिः, कस्मिंश्चित् स्थाने खण्डवृष्टिः, क्वचित् भूकम्पः, कुत्रापि वह्नियोगः, राष्ट्रेषु परस्परं युद्धप्रसङ्गः, कुत्रचित्सत्तापरिवर्तनञ्च जाजायते। ग्रहा एव राज्यं प्रयच्छन्ति, त एव पुनर्हरन्ति, एषः क्रमः सर्वदैव प्रचलति, सचराचरञ्जगदिदङ्गहैरेव व्यापितम्। सर्वेषु माङ्गलिककार्येषु शुभफलप्राप्त्यर्थमेषामर्चना विधीयते साधकभक्तवृन्दैः। सर्वे ग्रहाः स्वाभीष्टफलदायिनः स्युरेतदेवाधारीकृत्य कविना तेषां स्तवः प्रस्तुतः।)

नमाम्यहङ्काश्यपगोत्रवन्तङ्कलिङ्गदेशेश्वरमब्जहस्तम् ।
रक्ताम्बरं पाटलवर्णदेहं सप्ताश्वयानं द्विभुजन्दिनेशम्॥१॥
नमाम्यहं त्वां विधुमौषधीशं शुक्लाम्बरन्त्वां स्फटिकाभगात्रम्।
पूज्यं समुद्रोद्भवमत्रिगोत्रं. दशाश्वयानं यजने मदीये॥२॥
नमाम्यहं शोणितमेषवाहमङ्गारकं यज्ञमहे ग्रहाणाम्।
आवन्तिकं लोहितगात्रकान्तिं रक्तस्रजं भूमिसुतङ्कुमारम्॥३॥
नमाम्यहन्त्वामवधेशितारं पीतस्रजङ्कुङ्कुमवर्णदेहम् ।
सिंहाधिरूढं शुभशेमुषीदं बुधं सुधांश्वात्मजमत्रिगोत्रम्॥४॥
नमाम्यहं भूषणभूषिताङ्गं समस्तविद्याधिपतिं महान्तम्।
चतुर्भुजं चाङ्गिरसं द्विपस्थं पीतप्रभं देवगुरुं सुधीशम्॥५॥
नमाम्यहं भोजकटेशितारं शुक्लस्रजं सैन्धवपीठसंस्थम्।
भृगोरपत्यं रजतप्रभाढ्यं चतुर्भुजं दैत्यगुरुं महान्तम्॥६॥
नमाम्यहं काश्यपगोत्रवन्तं सौराष्ट्रजातं शुभगृध्रपत्रम्।
भानोरपत्यं जलदाङ्गकान्तिं शनैश्चरञ्चापशरौ दधानम्॥७॥
नमाम्यहं नीरदतुल्यगात्रं गोमेदरत्नैरतिभूषिताङ्गम्।
कौण्डिन्यपुत्रं हरिवाहनं त्वां पैठीनसं राहुमहं सहर्षम्॥८॥
नमाम्यहं जैमिनिगोत्रवन्तङ्कपोतपत्रं मलयाद्रिजातम्।
वैदूर्यरत्नैरतिभूषिताङ्गङ्केतुङ्कतौ मे शुभधूम्रवर्णम्॥९॥

□

अरुन्धतीसहितसप्तर्षिसंस्तवनम्

("ऋषि गतौ" इति धातोरिन् प्रत्यये कृते ऋषिशब्दो निष्पद्यते। ऋषन्ति=जानन्ति इति ऋषयः। अर्थात् ये वेदमन्त्रनिहितगूढज्ञानं ब्रह्मतत्त्वञ्च विदन्ति त एव सत्यवचसः कथ्यन्ते ऋषयः। अत एव "ऋषयो मन्त्रद्रष्टारो न तु कर्तारः, यस्य निःश्वसितं वेदः" इति प्रसिद्धिः। विश्वस्मिन् विश्वे समेऽपि प्राणिनः ऋषिभ्य एव समुत्पन्नाः, यथा हि ब्रह्मणः पुत्रो मरीचिः, तस्य पुत्रः कश्यपः। सृष्टिकार्ये वेविद्यते कश्यपस्य महद् योगदानम्। अदित्यान्तेन द्वादशादित्याः समुत्पादिताः दित्याश्च दैत्याः, एवमेव दक्षस्यान्यासु कन्यासु मानवाः, पशवः, पक्षिणः, राक्षसाः, अप्सरसः, सरिसृपाः, चन्द्रलोकस्य नक्षत्रनिकराः, अन्येऽपि जीवधारिणः समुत्पादितास्तेन। विश्वहिताय तपः कुर्वाणा इमे सप्तर्षयः सप्त राष्ट्राणां निर्माणञ्चक्रुः, तेषु निवसन्तः समेऽपि प्राणिनस्तेषामेव वंशे प्रादुर्भूताः स्वराष्ट्रोन्नतिं विदधाना दरीदृश्यन्ते।)

कश्यपः

मरीचेः सूनुन्त्वामदितिदितिकान्तं ककुलजम्,
कुकाकाशोत्थानाञ्जनकमसुराणां क्रतुभुजाम्।
क्रतूनाङ्कर्तारङ्करकलितकुण्डीङ्कुशलकम् ,
कवेऽहं भक्तानाङ्क्लुषकदनङ्कश्यपमुनिम्॥१॥

भरद्वाजः

भरण्यौ भावाटं भरथभरणं भातभविकम्,
भरण्यं भक्तानां भजनभवनं भारतभवम्।
भविष्णुं भ्रान्तिघ्नं भसितभरमालं भवभिदम्,
भरद्वाजं भव्यं भजत भगवन्तं भयभयम्॥२॥

गोतमः

गिरागोष्ठीगुण्यं गुरुगदितगीतं गिरिगुणम्,
गभीरं गण्यानां गगनगतगम्यं गृधुगदम्।

गृहग्रावग्रस्तं गिरिशगुणगाथं गगणकम्,
गरिष्ठं गैर्वाण्या गणयत गिरा गोतमगुरुम्॥३॥

अत्रिः

निलिम्पैः सन्नुत्यं द्रुहिणनयनोत्थन्नयनिधिम्,
निराकारे लीनन्निगमनिपुणं रामनिरतम्।
निराकाङ्क्षन्नित्यं निजनयनजातोन्नतिपरम्,
नमाम्यत्रिं सौम्यं सततमनुसूयापतिमहम्॥४॥

जमदग्निः

जितात्मानञ्जैत्रञ्जगति जनताजाड्यजरकम्,
जघन्यानाञ्जघ्नुञ्जपजनितजूतिञ्जवजयम् ।
जुहूजुष्टज्वालञ्जनितजनिजायञ्जयजनिम् ,
जटाजूटञ्जीर्णञ्जपत जमदग्निञ्जपजुषम्॥५॥

वशिष्ठः

वदान्यं ब्रह्मण्यं बहुवृजिनवेधं विभुविभम्
वितानव्यासक्तं विधिविधिविदं वल्कलवृतम्।
विविक्तं ब्रह्मिष्ठं व्रतविधिवरेण्यं विनयनम्
वशिष्ठं वन्दध्वं विबुधबुधवन्द्यं बुधवरम्॥६॥

विश्वामित्रः

विरक्तं व्यामोहाद् व्रतविहितविघ्नाद् विधिवशाद्
बलाविद्याबीजं विदितबुधवाचं वनवसिम्।
विशुद्धं ब्रह्मर्षिं व्ययितबहुवाजं विधिविदम्
वृणे विश्वामित्रं विफलनवितानं विजननम्॥७॥

अरुन्धती

सतीनां सर्वासां भवभयभिदौ भक्तवरदौ
सुराणां सेन्द्राणां विधिहरिहराणां शुभकरौ।
दयापारावारौ कमलमृदुलौ मङ्गलकरौ
अरुन्धत्याः पादौ सततमहमीडे मुनिनुतौ॥८॥

□

चतुर्विंशतिगुरुस्तवनम्

(सच्चरित्रनिर्माणार्थमस्माभिः शिक्षाग्रहणक्षेत्रं सङ्कीर्णन्नो विधातव्यम्। मानवदेहधारिगुरुभ्य एव शिक्षाग्रहणन्न पर्याप्तमपितु कीटपतङ्गादिभ्योऽपि शिक्षामादाय तेऽपि गुरुस्वरूपे प्रतिष्ठापनीयाः। भारतीयसंस्कृतेरेतदेव वैशिष्ट्यं यदात्मविकासाय विभिन्नशिक्षोपलब्धये स्थावरजङ्गमात्मका नैके गुरवः स्वीकृताः। गुरुशब्दस्य निष्पत्तिरपि विलोकनीया यथा हि-गृ = सेचने (भ्वादि.) गरति= सिञ्चति कर्णयोर्ज्ञानमिति गुरुः, गृ=निगरणे (तुदादि.) गिरति=निगरति शिष्यस्याज्ञानान्धकारमिति गुरुः, गृ=शब्दे (क्र्यादि.) गृणाति=उपदिशति धर्मादिरहस्यमिति गुरुः, गृ=विज्ञाने (चुरादि.) गारयते= विज्ञापयति शास्त्ररहस्यमिति गुरुः। प्रस्तुतेऽस्मिन् लेखे कविनामुना दत्तात्रेयसम्मानितानां पृथिव्यादिचतुर्विंशतिगुरूणां स्तवने चतुर्विंशतिपद्यानि प्रणीतानि।)

पृथिवी

शैलेभ्यो भूरुहेभ्यो विपदि च कठिने शत्रुसङ्घर्षकाले
धैर्यं क्षेमं दमत्वं परहितकरणं शिक्षणीयं सदैव।
दीनेभ्यो वित्तदानं क्षुधितजनकृते भोजनन्देयमित्थं
शिक्षां या हि प्रदत्ते प्रथमगुरुतनुन्तां धरान्नौमि नित्यम्॥१॥

वायुः

अन्तस्थः प्राणवायुर्यमितपरिमितङ्काङ्क्षते भोजनं यत्
तद्वद् गात्रस्य गुप्त्यै स्वशनमपि नरैः सीमितं कार्यमेतत्।
बाह्यो वातो यथास्मिन् चरति च भुवने तत्र नासक्तिमेति
तद्वत् स्वात्मैव चिन्त्यः समुपदिशति यस्तङ्गुरुन्नौमि वायुम्॥२॥

आकाशम्

सूक्ष्मे स्थूले शरीरेऽचलचलविषये चेतनाचेतनेषु
सर्वत्रात्मस्वरूपे विचरति सततं ब्रह्म चैव त्रिलोके।
भिन्ने हेतौ प्रतीते घटमठविषये त्वेकमेवान्तरिक्षं
विश्वे व्याप्तङ्गुरुन्तं सकलपदगुणं तत्त्वमाकाशमीडे॥३॥

आपः

स्वच्छं स्निग्धं स्वभावान्मधुरमपि जलं तीर्थरूपं पुनाति
लोकानामात्मतृप्त्यै भवति च सततं विश्वलोके यथाहि।
तद्वत् सभ्यो निसर्गान्मृदुतमवचसा पावयेत्सर्वलोकान्-
आद्यां सृष्टिं विधातुः सलिलमयतनुं शिक्षिकान्तान्नमामः॥४॥

अग्निः

स्वादास्वादानभिज्ञो हुतमपि सुहविर्वस्तुजातञ्च दुष्टम्
भुङ्क्ते सर्वाश्रयाशः पुनरपि कथितः सोऽपि निर्लिप्त एव।
तद्वत् संसारवासी भवतु च सततन्नामरूपादिशून्य-
स्तेजस्वी स्याद् यशस्वी समुपदिशति यस्तङ्गुरुन्नौमि वह्निम्॥५॥

चन्द्रमाः

प्रक्षीणो वर्धमानोऽसितसितदलयोर्जायतेऽयङ्कलाभिः
कालस्यैव प्रभावात् पुनरपि च विधुर्नात्मना क्षीण एषः।
तद्वद् देहस्य नित्यञ्जनुरपि मरणं दृश्यते नात्मनश्च
तस्मात् स्वात्मैव चिन्त्यः समुपदिशति यस्तङ्गुरुन्नौमि चन्द्रम्॥६॥

रविः

आदत्ते यन्मयूखै रविरपि ददते वृष्टिकाले तदम्भो
भिन्ने पात्रेऽपि भिन्नः शुचिजलभरिते दृश्यते त्वेकरूपः।
तद्वद् योगी स्वबोधं वितरति सततं सञ्चितं योगदृष्ट्या-
आत्मा सर्वत्र चिन्त्यः समुपदिशति यस्तङ्गुरुन्नौमि सूर्यम्॥७॥

कपोतः

आसक्तिर्नैव कार्या बहुधनतनयागारदारेषु पुम्भि-
स्तेषां धीरन्यथा स्यात् सुतप्रभृतिरता कुण्ठिता दैन्ययुक्ता।
त्रातुं पुत्रान् कलत्रं स्वयमपि पतितो व्याधजाले कपोतः
शिक्षां यो हि प्रदत्ते गगनगतिगुरुन्तं भजेऽहङ्कपोतम्॥८॥

अजगरः

लोके कर्मानुसारं सुखमपि च तथा जायते दुःखवृन्दम्
भोग्यं प्रारब्धकार्यं विधिविधिवशान्नोद्यमं तत्र कुर्यात्।
भोक्तव्यं दैवदत्तं मधुररसयुतं भोजनं नीरसम्वा-
इत्थं शिक्षां प्रदत्ते तमहमजगरन्निष्क्रियन्नौमि नित्यम्॥९॥

सिन्धुः

वर्षतौ वर्धते नो ह्रसति च न पुनर्ग्रीष्मकाले सदा यो
धीरो वीरो गभीरो विपदि भवति यो निश्चलः शान्तदेहः।
वस्तुप्राप्त्या प्रसन्नो न च तदपगमान्नो भवेत् खिन्नचित्त
इत्थं शिक्षां प्रदत्ते हरिपदरसिकं सागरन्तन्नमामः॥१०॥

पतङ्गः

रूपासक्तो निजासून् त्यजति च शलभो दीपवह्निं प्रविश्य
तस्मात्पश्चेन्द्रियाणां विषयपरवशैः प्राणिभिर्नैव भाव्यम्।
नारीणां हावभावैरजितकरणको लोभितात्मा विनश्ये-
इत्थं शिक्षां प्रदत्ते तमहमविरतन्नौमि भक्त्या पतङ्गम्॥११॥

मधुकृत्

ह्रस्वेभ्यो वा महद्भ्यो विदधति मधुनः सङ्ग्रहं याः सुमेभ्यः
प्राणान्मुञ्चन्ति तस्मिन्मधुमयपटले मक्षिकास्ता विनष्टे।
सारो ग्राह्यः समेभ्यः पुनरपि पुरुषैः सङ्ग्रहो नो विधेयः
सर्वे नश्यन्ति लोभादिति हितवचनं शिक्षणीयं हि ताभ्यः॥१२॥

गजः

दन्ती दन्तावलानां सपदि मृगयुभिर्गृह्यते माध्यमेन-
आत्मानं सोऽपि मोहान्निजपरिकरकृते बन्धयुक्तं विधत्ते।
अङ्गस्पर्शात् करिण्याः प्रचुरबलयुतैर्हन्यते वारणैः सः-
तस्मान्मोहो न कार्यः समुपदिशति यो दन्तिनन्तन्नमामः॥१३॥

मधुहा

क्षौद्रङ्गृह्णाति सर्वं प्रयतितमधुहा मक्षिकाभक्षणात् प्राक्
द्रव्यन्दत्वा च तस्मै भुवि धनिकजना भुञ्जते माक्षिकन्तत्।
नो दत्ते नैव भुङ्क्ते कृपणतमजनः सञ्चितं यो हि वित्तम्
तन्नाशो निश्चितं स्यादिति दिशति च नः क्षौद्रहारी प्रशस्यः॥१४॥

हरिणः

बध्यन्ते वागुराभिः सपदि मृगयुभिर्गीतमुग्धाः कुरङ्गाः
श्रोतव्यन्नैव गानं श्रवणसुखकरं वासनाजन्मबीजम्।
द्रष्टव्यन्नैव नृत्यं युवतिजनकृतङ्कामरागाभिवृद्ध्यै
नो वाद्यं वादनीयं समुपदिशति यो नौम्यहन्तङ्कुरङ्गम्॥१५॥

मीनः

प्राणान्मुञ्चन्ति मत्स्या बडिशमुखयुजो मांसखण्डस्य लोभात्
तद्वज्जिह्वाभिभूता विपदमिह परां स्वादलुब्धा लभन्ते।
तस्मान्निघ्ना विधेया विविधरसपरैः सर्वलोकै रसज्ञा-
इत्थं शिक्षां नरेभ्यो ददति हितकरीन्ते हि मीनाः प्रवन्द्याः॥१६॥

पिङ्गला

आसीदेका धनाशा प्रचुरगुणवती पिङ्गला नाम वेश्या
सर्वा रात्रिर्व्यतीता पुनरपि धनिनो नागतास्तत्प्रकोष्ठम्।
आशाभङ्गात्तदा सा प्रभुपदरसिका स्वीयरूपं विनिन्द्य
वैराग्यं प्राप सद्यः परमसुखकरञ्चास्ति नैराश्यमेव॥१७॥

कुररः

नीत्वा मांसस्य खण्डन्निजमुखविवरे डीयते यः स्वतन्त्रो
हन्तुन्तं पक्षिणोऽन्ये नभसि च कुररं व्यापृता मांसलोभात्।
तेन क्षिप्तन्तमत्तुं भुवि विहगगणास्ते गतास्तञ्च हित्वा
त्यागः कल्याणकारी समुपदिशति यः सैष नम्यो विहङ्गः॥१८॥

अर्भकः

तुल्यौ मानापमानावहितहितकरौ शत्रुमित्रे समौ स्तः-
तुल्ये निन्दास्तुती स्तो निजपरविषये नास्ति भेदो हि यस्य।
चिन्ताहीनः स बालो विचरति सततन्निष्क्रियो ब्रह्मरूपः
आदर्शा यस्य वृत्तिर्भवति यतिकृते सैष बालो हि धन्यः॥१९॥

कुमारी

याते क्वापि स्वताते वरणकरजनानागतान्तान् विलोक्य
धान्यानां कुट्टने या बहुनिनदकृतः कङ्कणान्तान् बभञ्ज।
एकावासे बहूनां भवति च कलहस्तत्र वार्ता द्वयोश्च
श्रेयानेकान्तवासः समुपदिशति या सा हि धन्या कुमारी॥२०॥

शरकृत्

नो सन्दृष्टा विशाला पथि निजनिकटाद् राजयात्रा व्रजन्ती
भेरीनादः श्रुतो नो नियमितमनसा बाणनिर्माणकर्त्रा।
वैराग्याभ्यासयोगाच्चपलतममनः साधकः साधयित्वा
प्राप्नोति स्वीयलक्ष्यं समुपदिशति यो रोपकृत् सैष धन्यः॥२१॥

सर्पः

एकाकी संयतात्मा जगति च विचरेन्मण्डलीन्नैव कुर्यात्
प्रासादानां मठानां रुचिरवसतये निर्मितिन्नो विदध्यात्।
स्वाचारैः स्यादलक्ष्यो मितहितवचनं भाषतां सत्यपूतम्
स्याद्योगी ब्रह्मलीनः समुपदिशति यस्तङ्गुरुन्नौमि सर्पम्॥२२॥

ऊर्णनाभिः

कर्ता धर्ता च हर्ता स भवति जगतां विश्वनाथो यथा हि
तद्वल्लोके च लूता स्वहृदयविवराज्जालमास्येन सूते।
कृत्वा तस्मिन् विहारं सपदि गिलति तत् सर्वकीटादियुक्तम्
नैपुण्यं विश्वकर्तुः समुपदिशति या सा हि लूता प्रशस्या॥२३॥

सुपेशकृत्

भृङ्गी कीटङ्गृहीत्वा निजवसतिगृहे वन्दिनं यं विधत्ते
नित्यं ध्यायन्तमेव प्रचुरभयवशात् सोऽपि तद्रूपमेति।
स्नेहाद् द्वेषाद् भयाद्वा भवति नरमनो यत्र लग्नं तथा तत्
तस्माच्चिन्त्यः परात्मा समुपदिशति यः सोऽपि भृङ्गी प्रशस्यः॥२४॥

दत्तात्रेयः

यस्मै शिक्षाः प्रदत्ताः श्रुतियुगगुरुभिर्लोकबोधोपलब्ध्यै
विख्यातो योऽवधूतो जगति समभवद् धूतसंसारबन्धः।
पूज्यादत्रेः प्रजातो बहुविधविषयालिप्तवर्णान् मुमोच
दत्तात्रेयं भजे तं सुरमुनिनृनुतं ब्रह्मविष्ण्वीशरूपम्॥२५॥

□

श्रीराम-परिवारः

अयोध्या–

स्वर्गङ्गातुल्यतोया प्रवहति सरयूः कोशले रम्यदेशे
योधायोध्या मनोज्ञा मणिचयजटिता यत्र सौधा विशालाः।
राज्यश्चक्रुश्च यस्यां प्रथितनृपतयो देवमित्राणि वीरा
धन्याऽयोध्या पुरी सा जगति विजयते मोक्षदा रामवासा॥१॥

दशरथः

देवानां मित्रवर्य्यो दशरथनृपतिः सूर्यवंशावतंसः
पुत्रेष्टिं यो हि कृत्या श्रुतिमनुपठनैः प्राप रामादिपुत्रान्।
कैकेयीदुर्वचोभिर्गहनतमवनं प्रेषयामास रामं
पश्चात्सूनोर्वियोगे सुरनगरमगाद् रामनामप्रभावात्॥२॥

कौशल्या

कौशल्या ज्येष्ठपत्नी दशरथनृपते राममाता मनोज्ञा
पित्रादेशात् कठोराद् वनगमनदिने सीतया लक्ष्मणेन।
सार्धं रामे प्रयाते परमविधिवशाद् रावणान्तं विदित्वा
स्वाशीर्वादं ददौ सा प्रमुदितवदना स्वागतेभ्यश्च तेभ्यः॥३॥

सुमित्रा

आसीत् पत्नी सुमित्रा दशरथनृपतेर्वल्लभा या द्वितीया
शत्रुघ्नं लक्ष्मणं या रिपुदलदमने सक्षमं या सुषाव।
सेवार्थं स्वीयपुत्रं विपिनमगमयल्लक्ष्मणं रामभक्तं
स्वाशीर्वादं ददौ या विकसितवदना सा हि धन्या सुमाता॥४॥

कैकेयी

कैकेयी नाम राज्ञी दशरथनृपतेः सुन्दरी या तृतीया
द्वे वाक्ये तं ययाचे कुटिलतमहृदा मन्थरामन्त्रणाभिः।
रामायारण्यवासं सुतभरतकृते राज्यसिंहासनञ्च–
आयाते राघवे सा प्रमुदितवदना तस्य राज्याभिषेके॥५॥

रामः

रामो राजाधिराजो दशरथतनयश्चक्रवर्ती प्रतापी
धीरो वीरो गभीरो गहनवनगतो राक्षसान् यो जघान।
लङ्कायां दुश्चरित्रं दशमुखमवधीच्छम्भुशक्तिप्रसादात्
सोऽयं सर्वैः प्रपूज्यो जगति विजयते जानकीजानिरेकः ॥६॥

सीता

सीता रामस्य पत्नी जनकनृपसुता भूमिजाता सती या
आखेटार्थञ्च रामे हरिणमनुगते लक्ष्मणेऽपि प्रयाते।
कुट्या एकाकिनी या दशवदनहृता वह्निपूता पुनर्या
राज्यान्निर्वासिता सा लवकुशजननी भूगता पातु लोकान्॥७॥

लक्ष्मणः

योऽभूच्छेषावतारो दशरथतनयो लक्ष्मणो रामभक्तो
लङ्कायां मूर्च्छितो यः प्रहरणविषये मेघनादस्य शक्त्या।
सञ्जीवन्याप्तसंज्ञः पुनरपि समरे राक्षसान् यो जघान
सौमित्रः शौर्यशाली जगति विजयतामुर्मिलाजानिरेकः॥८॥

भरतः

रामस्यारण्यवासं दशरथमरणं स्वीयराज्याभिषेकम्
आकर्ण्यैतस्य हेतुं किल निजजननीं मन्थरां धिक् चकार।
नन्दिग्रामे वसन् यो रघुपतिपदयोः पादुकामाध्यमेन
राज्यञ्चक्रे यशस्वी स जयति भरतो माण्डवीजानिरेकः॥९॥

शत्रुघ्नः

नन्दिग्रामे च गत्वा स भरतनिकटं राज्यकार्यं निवेद्य
तस्यादेशानुसारं सपदि समकरोत् कार्यजातं प्रजानाम्।
कृत्वा सर्वां व्यवस्थां दशरथभवने मातृवर्गं ररक्ष
शत्रुघ्नः शत्रुहन्ता जगति विजयते रामभक्तः प्रतापी॥१०॥

□

स्तुतिप्रकीर्णकम्

गणेशः

गणानान्त्वा मध्ये गणपतिमहं शम्भुतनयं
प्रियाणान्त्वा मध्ये प्रियपतिममुं भालशशिनम्।
निधीनान्त्वा मध्ये निधिपतिवरं मोदकमुदं
स्थितं मुक्ताशैले द्विरदवदनं नौमि वरदम्॥१॥

आद्यशक्तिः

मध्वादीनां वधार्थं विधिवरवदनैः कालिकां कीर्त्यमानां
लक्ष्मीं लावण्यलीलां सरसिजसदनां नाशयन्तीं लुलायम्।
शुम्भादीनां निहन्त्रीं सुरमुनिनृनुतां शारदां शास्त्रसारां
दुर्गाभिः सेव्यमानां बहुविधवरदामाद्यशक्तिं नमामः॥२॥

श्रीहनुमान्

सिन्दूरालिप्तगात्रं दितदितिजदलं पूजितं निर्मलेन
सञ्जीवन्यादियुक्तं पृथुलकरतले द्रोणशैलं वहन्तम्।
रम्ये सौमित्रशैले प्रगुणिनरवरस्याश्रमे राजमानं
हृद्ये खोळप्रदेशे जयपुरनगरे श्रीहनुमन्तमीडे॥३॥

भैरवः

मान्यः सतामुत्पलनीलगात्रो
नृमुण्डखड्गौ करयोर्दधानः।
यो हन्ति विघ्नान् समसाधकानां
स भैरवो मे भवताच्छुभाय॥४॥

राधागोविन्दः

मौलौ दिव्यं किरीटं मलयजतिलकं कुण्डले कर्णयुग्मे
नासाग्रे श्रेष्ठमुक्तां सरसिजनयनं पद्महस्ते च वेणुम्।

बिभ्राणं पीतवस्त्रं सकलसुरनुतं कृष्णमाराध्यदेवं
राधागोविन्दमीडे जयपुरनगरे राजमानं वरेण्यम्॥५॥

धन्वन्तरिः

पात्रं पीयूषपूर्णं दधदतिविमलं प्रादुरासीत् पुराब्धे-
स्तत् पीत्वा निर्जरास्ते सततममरतां प्रापुरन्यैर्दुरापाम्।
काशीराजश्च योऽभूत् सकलगदहरः श्रीदिवोदाससंज्ञः
पूज्यं धन्वन्तरिं तं सुरमुनिनुतं वैद्यमाद्यं नमामः॥६॥

गौतमबुद्धः

संसारवासनां दृष्ट्वा वैराग्यं समुपाश्रितः।
मिथ्याज्ञाननिरासाय गौतमो बुद्ध ईड्यताम्॥७॥

चतुर्वेदस्तवः

ऋग्वेदं रासभास्यं यजनहुतभुजां स्तोत्रपाठेषु पृक्तम्
छागास्यं याजुषन्तं सकलमखविधिं बोधयन्तं महान्तम्।
अश्वास्यं सामवेदं प्रभुगुणगणकं गेयमन्त्रैः समस्तै-
र्वन्दे चाथर्वणन्तं विहितमविहितं वीक्षमाणं प्लवास्यम्॥८॥

वेदव्यासः

वेदं विव्यास दिव्यं कुरुचरितमहाभारते सद्विकासो
न्यासो पौराणवर्गः स्मृतिहितवचनं सभ्यतायाः प्रकाशः।
ब्राह्मं वेदान्तभाष्यं कलिमलहरणं पापबन्धाय पाशो
वेदव्यासो महात्मा जगति विजयते शारदायाः सुहासः॥९॥

ऋषिप्रज्ञा

श्रुतीनां तत्त्वज्ञा स्मृतिनिवहबोधातिकुशला
पुराणार्थासक्ता यमनियमशुद्धा नयविभा।
तपस्याभिर्दीप्ता जनहितपरा ब्रह्मविषया
ऋषिप्रज्ञा दिव्या हरतु जनताजाड्यनिकरम्॥१०॥

□

प्रशस्तिका

सेव्यतां देववाणी

होतृणां सूक्तमन्त्रैः सकलमखविधौ स्तूयते देववर्गः-
अध्वर्यूणां प्रपाठैर्घृततिलहविर्हूयते दीप्तवह्नौ।
गीयन्ते यत्र देवाः सुमधुरनिनदैः सामगानां सुगीतै-
रथर्वाणां प्रयोगैः सकलगदहरा सेव्यतां वेदवाणी॥१॥
आद्यं काव्यं कवीनामनुकरणविधौ यत्र जातं प्रमाणम्
यत्रोत्पत्तिः सुतानां दशरथभवने यज्ञदेवप्रसादात्।
संहारो राक्षसानां प्रकृतिजनमनोरञ्जनार्थं प्रियाया-
स्त्यागो रामेण लोके जयतु जयतु सा दिव्यवाल्मीकिवाणी॥२॥
गहनतमरहस्यं कूटपद्येषु गूढं
गणपतिमतिगम्यं या विधातुं समर्था।
दुरधिगमफलं या सक्षमा सम्प्रदातुं
सकलबुधनुता सा सेव्यतां व्यासवाणी॥३॥
ललितपदमनोज्ञा काव्यनाट्येषु रम्या
गहननिगमबोधे सर्वतन्त्रस्वतन्त्रा।
विविधरसविलासव्यञ्जने या समर्था
जयतु जयतु नित्यं कालिदासस्य वाणी॥४॥
सूत्रैर्बद्धा च शब्दैरतिशयरुचिरा वार्तिकैर्धातुपाठैः
प्राज्ञैर्भाष्यावगम्या प्रकृतिविकृतिजुड् शब्दसिद्ध्यातिशुद्धा।
रम्या वेदाङ्गमुख्या स्वरविधिसहिता वेदशिक्षानुकूला
भाषाणां मातृरूपा जगति विजयते पाणिनेर्दिव्यवाणी॥५॥
अर्थानां गौरवं या मधुरतमपदैः शोभते द्योतयन्ती
क्लिष्टार्था चित्रबन्धे हिमनगसुषमावर्णने या विचित्रा।
पार्थायाजौ जयार्थं मुदितपशुपतेर्दिव्यशस्त्रस्य दात्री
नानालङ्कारशोभा जयतु जयतु सा भारवेर्भव्यवाणी॥६॥

औपम्ये या प्रसिद्धा सकलगुणवती विश्रुता यार्थतत्त्वे
लालित्ये या पदानां मृदुलतमपदैर्व्यक्तमाधुर्ययुक्ता।
श्रीकृष्णश्चेदिराजं शतकपरिमिताश्लीलशब्दान् ब्रुवन्तम्
यस्यां सद्यो जघान प्रचुररसमयी सेव्यतां माघवाणी॥७॥
रम्यं गद्यं कवीनां कथयति निकषं भव्यभावैः सदा या
पात्राणां वर्णनं या त्रिजननसहितं शापबीजं विधत्ते।
पानार्थं पण्डितानां चषकपरिमिता स्थापिता मञ्जुनाथैः
सेव्या कादम्बरी सा कविकुलतिलकैर्बाणभट्टस्य वाणी॥८॥
या काव्ये नैषधाख्ये कठिनपदयुता पूर्णपाण्डित्यवेद्या
श्लेषालङ्कारयोगात् क्वचिदपि जटिला व्यङ्ग्यबोधे निगूढा।
गुप्तार्था पञ्चनल्यां पुनरपि मधुरा हंसदूतेन कथ्या
वैदर्भीरीतिसिद्धा रसमयवचना सेव्यतां हर्षवाणी॥९॥
पद्मिन्यां हृद्यगद्ये नवरसरुचिरा पात्रभाषानुबद्धा
उत्कृष्टा खण्डकाव्ये प्रहरणविषया पत्रदूते च पद्ये।
दिव्या गोष्ठ्यां कवीनां नतिततिसहिता प्रौढ़पाण्डित्यपूर्णा
प्राज्ञानां हर्षदात्री विलसति सततं मञ्जुपाण्डेयवाणी॥१०॥
विश्वैक्यं विश्वशान्तिं सकलजनहितं या विधातुं समर्था
हिंसामातङ्कवादं हरति खलभयं प्रेमभावैर्जनानाम्।
भाषाणां जन्मदात्री भुवनबुधजनैः सेव्यमाना सदैव
राष्ट्रस्योत्थानकर्त्री जयतु जयतु सा भारते देववाणी॥११॥

प्रचुरसरलमेतत्संस्कृतं भाषणीयं
ललितमधुमनोज्ञं संस्कृतं लेखनीयम्।
गहनतमरहस्यं संस्कृतं बोधनीयं
मृदुलसरसभावैः संस्कृतं वर्धनीयम्॥१२॥

□

राजन्तां कालिदासाः

श्रीवाग्देवीप्रसादाद्विमलमतिजुषः काव्यलास्ये नटेशा
आद्यालङ्कारसक्ताः कविपतिनिवहैर्वन्दिता व्यञ्जनेशाः।
वैदर्भीरीतिसिद्धा मधुरतमपदैर्व्यक्तमाधुर्यभाजो
राजन्तां कालिदासाः सुरभितकवितास्रग्धराः कीर्तिमन्तः॥१॥
नानालङ्कारनादैर्मुखरितककुभां रन्ध्रमापूरयन्तः
साहित्याम्भोधिरत्नैर्विविधरुचियुतैर्भासमानाः समानाः।
सिञ्चन्तो मानसानि प्रचुररसपुटैर्वासनातत्त्वभाजां
राजन्तां कालिदासाः सरससुमनसःस्रग्धराः कीर्तिमन्तः॥२॥
कैशोर्यं श्रीकुमारप्रथमजनिकृतौ बालकेलिप्रशस्तं
मेघे शाकुन्तले च प्रचुरतरुणता कामरागप्रवृद्धा।
वार्धक्यं श्रीरघूणां सुकुलपरिचये भाति यस्य प्रकामं
भूयो भूयः प्रणामाः कविकुलमणये कालिदासाय तस्मै॥३॥
नाट्यं काव्येषु रम्यं भुवि विदितमभूद् यस्य शाकुन्तलाख्यं
तत्राप्यङ्के तुरीये जलधिपरिमिता पद्यसंख्या प्रसिद्धा।
तातः कण्वो हि यस्याः पतिगृहगमने रुद्धकण्ठः प्रजातो
दत्वा कन्यां वराय प्रमुदितमनसा शान्तिमाप्नोति लोकः॥४॥
औपम्यं यस्य सिद्धं ललिततमपदैर्लोकशास्त्रानुकूलं
मूर्तस्यामूर्तरूपं विविधविषयकं प्राकृतं गूढतत्त्वम्।
भाषा पात्रानुकूला सगुणरसवती कल्पना यस्य दिव्या
व्यङ्ग्यार्थो यस्य वश्यः स कविकुलगुरू राजतां कालिदासः॥५॥
नाट्ये मालविकाग्निमित्ररचने शृङ्गारभावोज्ज्वलो
गम्भीरो विक्रमोर्वशीयचरिते शाकुन्तले विश्रुतः।
रम्ये षड्ऋतुवर्णनेऽतिनिपुणो नैसर्गिके चित्रणे
भाताद् भारतराष्ट्रविश्रुतकविः श्रीकालिदासो महान्॥६॥
रसध्वनिविलासाय प्रसादगुणशालिने।
कवये कालिदासाय कीर्यते सुमनोऽञ्जलिः॥७॥

□

आदिशङ्कराचार्यसंस्तवः

पुत्रप्राप्त्यै विशिष्टा[1] सह शिवगुरुणा[2] रम्यशैले वृषाद्रौ
कृत्वा तीव्रां तपस्यां सकलहितकृतश्चन्द्रमौलेः शिवस्य।
मासे वैशाखशुक्ले दिनमणिदिवसे[3] प्राप नाराचतिथ्यां[4]
तेजःपुञ्जञ्च साक्षाच्छिवसमवपुषं बालकं ब्रह्मविज्ञम्॥1॥

यस्योत्पत्तौ सहर्षं सकलसुरगणाः पुष्पवर्षा अकुर्वन्
आशाः सर्वाः प्रसेदुः सुरभितपवना मन्दगत्या ववुश्च।
लोकाः सर्वे प्रसन्ना विपिनखगमृगास्तत्यजुर्वैरभाव–
ञ्ज्योतिर्विद्भिश्च प्रोक्तं सकलगुणयुतो बालकोऽयं सुधीः स्यात्॥2॥

वर्णानामाद्यबोधं लिखितलिपियुतं यो विवेदादिवर्षे
द्वैतीयीके च वर्षे स्वजनकचरणाच्छाब्दबोधं प्रपेदे।
तार्तीयीके च वर्षे निजपितृमरणाच्छोकमग्नो बभूव
माता वैधव्यमाप्ता परमकरुणया पालनं तस्य चक्रे॥3॥

चक्रे मातोपवीतं पतिविरहवशात् पञ्चमे हायनेऽस्य
जाते यज्ञोपवीते श्रुतिमनुपठनं सस्वरं यश्चकार।
लब्धुं वेदान्तबोधं गुरुभवनमगाद् भट्टवर्यस्य[5] पार्श्वे
तत्रस्थः क्षिप्रमेव प्रखरमतियुतः प्राप्तवान् शास्त्रबोधम्॥4॥

पूर्णानद्यां निमग्नो मकरमुखगतो मातरं प्राह्वयत् स.
यस्तस्यामागतायां सपदि समवदद् गेहमुक्त्यै सहर्षम्।
आज्ञां त्वं देहि मह्यं, पुनरपि भवनं त्वच्छरीरावसाने
आयास्यामूर्ध्वकृत्यै मम वचनमिदं सर्वथा सत्यमस्ति॥5॥

---

1. विशिष्टा = शङ्कराचार्य की माता। 2. शिवगुरुः = शङ्कराचार्य के पिता।
3. दिनमणिदिवसे = रविवार के दिन
4. नाराचतिथ्याम् = पञ्चमी तिथि में। 5. भट्टवर्यस्य = कुमारिल भट्ट के।

स्मृत्वागस्त्यस्य[6] वाचं मरणविषयकामष्टमे हायने तां
प्रादात् प्रोद्विग्नचित्ता गमनविषयिणीं स्वीकृतिं सा सुताय।
विद्याप्राप्त्यै स दूरं गहनतमवने नर्मदातीरदेशं
गत्वा रम्याश्रमस्थं सकलगुणनिधिं प्राणमद् विज्ञमेकम्॥6॥

मान्याच्छेषावतारात् प्रखरमतिजुषः सर्वशास्त्रार्थवेत्तु-
र्लेभे गोविन्दपादात्[7] सकलसुखकरीं यश्च संन्यासदीक्षाम्।
ज्ञात्वा तं योगदृष्ट्या स गुरुरकथयत् शङ्करस्त्वं हि साक्षा-
आम्नायोद्धारकस्त्वं निशितमतिनिधिर्ब्रह्मवेत्ता महात्मा॥7॥

लब्ध्वा शिष्यं सुयोग्यं प्रमुदितमनसा ब्रह्मतत्त्वोपदेशं
तस्मै दत्त्वा प्रसन्नः स गुरुरखिलान् वेदवेदान्तग्रन्थान्।
सद्यस्तं बोधयित्वा प्रखरमतिजुषं संस्कृते रक्षणार्थं
पीठानां स्थापनार्थं समुचितविधिना योजयामास शिष्यम्॥8॥

वाराणस्यां गतो यः शिवजपनिरतो वेदवर्षाणि यावत्
प्रापज्जातेरभेदं श्वपचतनुशिवात् स्नानकाले च घट्टे।[8]
लेभे शक्तेर्महत्त्वं गतिरहितशवादादिशक्तेः प्रसादा-
ज्ज्ञानी भक्तो महात्मा स भुवि विजयतां शङ्कराचार्यवर्यः॥9॥

लक्ष्मीस्तोत्रं सुवर्ण[9] परमकरुणया दीनसेवां विधातुं
देवस्तोत्राणि विज्ञैः सुरमधुरगिरा निर्मितानि प्रसिद्धैः।
गीताभाष्यं प्रणीतं सुकृदुपनिषदां ब्रह्मसूत्रस्य भाष्यं
ग्रन्थानां यैर्बहूनामतिशयमधुरं निर्मितं भाष्यवृन्दम्॥10॥

6. अगस्त्यस्य वाचम् = अगस्त्य ऋषि ने इनकी आयु के विषय में इनकी माता से कहा था कि तेरे पुत्र की आयु आठ वर्ष, फिर आठ वर्ष अर्थात् 16 वर्ष की होगी, परन्तु विशेष कारण से फिर 16 वर्ष अर्थात् 32 वर्ष की होगी।
7. गोविन्दपादात् = शुकदेव के शिष्य गौडपाद के शिष्य यतिवर गोविन्दपाद से।
8. घट्टे = मणिकर्णिका घाट पर।
9. लक्ष्मीस्तोत्रं सुवर्णम् = कनक-धारा स्तोत्र को।

नैके वेदान्तसाराः प्रकरणसहिता आत्मबोधोपयुक्ता
नैके स्वात्मोपदेशा मनुजहितकरास्तत्त्वयुक्ताः प्रणीताः।
तन्त्रग्रन्था अनेके मधुरतमपदैर्निर्मिता यैर्लहर्यो
राजन्तां ते जगत्यां शिवपदरसिकाः शङ्कराचार्यवर्याः॥11॥

सर्वे शिष्या अकस्मात्च्छ्रुतिपठनपरा आगतं द्वारदेशं
तेजःपुञ्जञ्च साक्षात् पुनरपि ददृशुर्ब्राह्मणं कृष्णवर्णम्।
व्यासं नारायणांशं शिवतनुरनमच्छङ्कराचार्यवर्यः
दृष्ट्वा तद्भाष्यकार्यं द्विगुणितमकरोद् व्यासवर्यस्तदायुः॥12॥

प्राच्यां गोवर्धनाख्यो वरुणदिशि तथा शारदाख्यः प्रसिद्धो
ज्योतिःसंज्ञः प्रतीतो धनददिशि सदा शोभितः शैलशृङ्गैः।
शृङ्गेरी दक्षिणस्यां सलिलनिधितटे शङ्कराचार्यवर्यै–
श्चत्वारः संस्थापिता यैः स्थिररुचिरमठा धर्मसंस्थापनार्थम्॥13॥

ब्रह्माहं त्वञ्च तद्वै सकलमपि जगद् द्वैतमाहुस्तदन्ये
द्वैताद्वैतादिभेदो मनुजमतिकृतो विज्ञवेद्यः स्वतन्त्रः।
अष्टाङ्गैर्योगशास्त्रैर्मुनिवरकथितै[10]श्चित्तवृत्तिं निरुध्य
ब्रह्मध्यानं विदध्यादिति च सुकथितं शङ्कराचार्यवर्यैः॥14॥

यैः शिष्येभ्यः प्रदत्ताः स्मृतिविषययुता वेदवेदाङ्गशिक्षा-
स्तीर्थे तीर्थे भ्रमित्वा स्वमधुरवचनैरेधिता देशभक्ताः।
शास्त्रार्थे तर्कशक्त्या प्रचुरहठवतां खण्डिताः सर्वप्रश्नाः
शोभन्तां भारते ते शिवपदरसिकाः शङ्कराचार्यवर्याः॥15॥

पौत्रा विद्याधराणां[11] शिवगुरुतनया केरले[12] ये प्रजाता
वेदान्ताम्भोधिरत्नप्रचुरतमविभाभासमानाः समानाः।
धर्मोद्धारप्रवीणाः सकलभरतभूगौरवोत्कर्षपूक्ता
राजन्तां ते जगत्यां मनुजशुभकराः शङ्कराचार्यवर्याः॥16॥

□

---

10. मुनिवरकथितैः = बादरायण मुनि के द्वारा कहे गये।
11. विद्याधराणाम् = शङ्कराचार्य के पितामह विद्याधर।
12. केरले = केरल प्रदेश के कालटी नामक अग्रहार (ब्राह्मणों का निवास) में।

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्याणां शिष्यपरम्परा

श्रीरामानन्दाचार्यः

शान्तो दान्तस्तितिक्षुर्हरिपदरसिकः सज्जनत्राणकर्ता
त्यागी सिद्धो मनस्वी नयविनययुतो दुष्टकृत्यप्रणाशी।
साक्षाच्छ्रीरामचन्द्रः सकलजनकृते मुक्तिमन्त्रोपदेष्टा
रामानन्दो महात्मा जगति विजयते राघवानन्दशिष्यः॥१॥

महात्मा अनन्तानन्दः

सेवाभावी विरक्तः प्रतिदिनमजपत् तारकं राममन्त्रं
जातो दीक्षाप्रदाता गुरुपददयया विप्रवंशप्रदीपः।
आसीत्पूर्वं विधाता पुनरपि जननेऽनन्तदेवो मनीषी
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते रामभक्तो महात्मा॥२॥

महात्मा सुरसुरानन्दः

रागैर्दीपाः प्रदीप्ता मधुरतमपदैः श्रीमठद्वारदेशे
तान् दृष्ट्वा स्वामिवर्यः परमकरुणया दत्तवान् राममन्त्रम्।
सञ्जातो नारदो यः पुनरपि जनने गानविज्ञानदक्षः
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति सुरसुरानन्द आभाति नित्यम्॥३॥

महात्मा श्रीसुखानन्दः

जातः साक्षाच्छिवांशो निजगुरुकृपया वेदवेदाङ्गदक्षो
वाराणस्याश्च गत्वा जनहृदयहरीं दर्शयामास सिद्धिम्।
खिन्नः स्वल्पायुषा स त्वरितमथ मठे स्वामिवर्यं सिषेवे
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते श्रीसुखानन्दभक्तः॥४॥

महात्मा नरहरिः

दिव्यां दीक्षां गृहीत्वा हितकरगुरुणा शङ्खनादेन दत्तां
बालः षड्वर्षकल्पः परमसुखकरं राममन्त्रं जजाप।
पूर्वं वैधात्र आसीन्नरहरिरधुना सच्चिदानन्दरूपः.
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते ब्रह्मवंशावतंसः ॥५॥

महात्मा योगानन्दः

आम्नायप्राज्ञवर्यान्मणिप्रथमपदाच्छङ्कराद् यः प्रजातो
ब्रह्मज्ञो ब्रह्मरूपः सरसमृदुलहृन्मुक्तितत्त्वोपदेष्टा।
योगानन्दो महात्मा पुनरपि कपिलः सिद्धपुर्यामवन्त्याः.
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते रामसेवानुरागी ॥६॥

महात्मा भक्तपीपा

पत्न्यै दत्त्वा स्वराज्यं सकलवसुयुतं स्वेष्टदेवीप्रसादा-
मोक्षोपायोपलब्ध्यै परमगुरुपदं प्राप्य काश्यां प्रसन्नः।
धीरो वीरः प्रजातः पुनरपि च मनुर्गाङ्गरौनाख्यदुर्गे.
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते भक्तपीपा महीपः ॥७॥

महात्मा कबीरः

रामानन्देन यस्मै परमहितकरो राममन्त्रः प्रदत्तो,
नो जातो जातिभेदो मनसि च विमले यस्य शिक्षाप्रदाने।
हिन्दूनां मुस्लिमानां मधुरतमपदैः खण्डितो रूढिवादः.
पूज्यः प्रह्लादरूपो जगति विजयते रामभक्तः कबीरः ॥८॥

महात्मा भावानन्दः

विश्वामित्रेण सार्धं दशरथतनयौ यो हि काश्यां ददर्श.
साध्वाज्ञां पालयित्वा परमगुरुपदे श्रीमठे प्राप दीक्षाम्।
पूर्वं जातो विदेहः पुनरपि जनने पन्तवंशावतंसो.
भावानन्दो महात्मा जगति विजयते रामभक्तिप्रसन्नः ॥९॥

महात्मा सेनभक्तः

दीक्षामन्त्रं गृहीत्वा प्रतिपलमजपत् क्षौरकार्येऽपि लग्नो
रामं साक्षादपश्यत् सकलहितपरः साधुसेवी मनस्वी।
पूर्वं भीष्मः प्रजातः पुनरपि जनने नापितो रामसेनः
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते रामदासानुदासः॥१०॥

महात्मा धन्नाजाटः

शालग्रामं प्रदत्तं स्वजनकगुरुणा ठक्कुरं भोजयित्वा
प्रापत् तद्दर्शनं यः परमगुरुपदात् श्रीमठे राममन्त्रम्।
धन्नाजाटः प्रजातः पुनरपि च बलिर्विष्णुभक्तो महात्मा
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते रामपादानुरागी॥११॥

महात्मा गालवानन्दः

नाथानां येन माया त्वरितमपहृता राममन्त्रप्रभावाद्
आनीता येन गङ्गा जयपुरि गलतानामधेये च तीर्थे।
पूर्वं यः कीरदेवः पुनरपि जनने गालवानन्द एषः,
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते वैष्णवो वीतरागः॥१२॥

महात्मा श्रीरैदासः

पुण्यश्रीराममन्त्रं प्रतिपलमजपच्चर्मकार्येऽपि पृक्तो
लोकेभ्यो दत्तवान् यः सकलहितकरीं भक्तियोगस्य शिक्षाम्।
श्रीरैदासो यमांशो हरिपदरसिको लोककल्याणकारी
श्रीरामानन्दशिष्यो जगति विजयते रामदासानुदासः॥१३॥

□

श्रीनारायणदास - गौरवम्

श्रीमन्नारायणानां वरकरकमलैर्ब्रह्मपीठाधिपानां
रामानन्देति नाम्नो विबुधवरगिरो विश्वविद्यालयस्य।
जातो न्यासः शिलानां श्रुतिमनुपठनैर्भूमिपूजा च जाता
यत्रासन् राज्यपालाः प्रमुखपदजुषो मन्त्रिणः श्रेष्ठिनश्च ॥1॥

श्रीरामानन्दनाम्नः सुरमधुरगिरो विश्वविद्यालयस्य
श्रीमन्नारायणेन प्रभुपददयया सद्म निर्मापितं यत्।
तत्केन्द्रं देववाण्याः सकलहितकरं प्रौढपाण्डित्यपूर्णं
छात्राणां पण्डितानां रुचिरपरिसरे तत्र वेश्मानि भान्ति ॥2॥

वेदव्याकृति - धर्मशास्त्र - निपुणैर्नैयायिकैर्ज्यौतिषै-
र्वेदान्तादिसमस्तशास्त्रचतुरैः साहित्यविद्यार्णवैः।
विद्वद्भिः समलङ्कृतं सुरगिरः केन्द्रं प्रधानश्च यत्
सम्पूर्णे भुवने हि तद् विजयतां सम्पूर्णशिक्षाप्रदम् ॥3॥

सच्चारित्र्यस्य शिक्षां नयविनययुतां ज्ञानविज्ञानबोधं
विश्वैक्यं विश्वशान्तिं सकलजनहितं प्रेमभावञ्जनानाम्।
राष्ट्रस्योत्थानबीजं विविधविधियुतं नीतिबोधं प्रकृष्टं
सर्वेभ्यो मानवेभ्यो वितरतु सततं विश्वविद्यालयोऽयम् ॥4॥

श्रीनारायणदासाय वाक्सिद्धाय महात्मने।
परोपकारशीलाय योगीशाय नमो नमः ॥5॥

□

टिप्पणी : संस्कृतशिक्षानिदेशालयेन समायोजिते 2009 वर्षीये राज्यस्तरीय-संस्कृतदिवससमारोहे (5.8.2009) ज.रा.राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालय-भवनपरिसरनिर्माणाय पाण्डेयविरचितश्लोकात्मकं 'कृतज्ञताज्ञापनम्' पत्रं शिक्षामन्त्रिणा समर्पितम्।

समस्यासौहित्यम्

सृष्टिरेषा विचित्रा

रोद्धुं संख्याञ्जनानां दशसुतजनको भाषते यो हि नेता
आदत्ते यौतुकं यः समुपदिशति तन्मानवैर्वर्जनीयम्।
नारीणामुन्नतिः स्यात् कथयति सततं यो बलात्कारपृक्तै-
भ्रष्टाचारप्रवृत्तः स जनहितकरः सृष्टिरेषा विचित्रा॥१॥

उत्कोचं ये गृहीत्वा विदधति सततं कार्यजातन्नराणां
धन्यास्ते हि प्रवन्द्या विपुलवसुजुषः शासनोच्चासनस्थाः।
हित्वा सिद्धान्तपक्षं स्वदलविवृतये कुर्वते हिंसनं ये
नेतारस्तेऽपि धन्याः सचिवपदभृतः सृष्टिरेषा विचित्रा॥२॥

वित्तस्पर्धापरा ये प्रचुरमनुचितं कार्यजातं विधाय
दीनानां शोषणं ये विदधति सकला धर्महीना मदान्धाः।
ऊर्जास्रोतो हि येषां स्मितमपि वदने दृश्यते सर्वलोकै-
र्जातास्ते पुष्टदेहाः स्ववचनविमुखाः सृष्टिरेषा विचित्रा॥३॥

सम्पूर्णञ्जीवनं यत् समभवदधुना मानवानां समेषां
वित्तार्थं धावमानं परहितरहितं स्वार्थसिद्धिप्रवृत्तम्।
शिक्षाक्षेत्रे विशुद्धे प्रचुरधनवता प्राप्यते प्रोच्चवृत्तिः
क्रीडाक्षेत्रे कलायामनुचितविधिभिः सृष्टिरेषा विचित्रा॥४॥

अर्थज्ञाने विमूढाः प्रकृतिविरहितास्तत्त्वबोधेऽसमर्थाः
शब्दानां वाचनं ये समुचितविधिना नैव जानन्ति कर्तुम्।
दत्त्वाऽर्थं प्रेक्षकेभ्यः प्रतिलिपिकरणात् प्रोच्चशिक्षाञ्च लब्ध्वा
जाताः प्राध्यापकास्ते गुरुसमधिषणाः सृष्टिरेषा विचित्रा॥५॥

ये साधून् पीडयन्ति प्रभुपदरसिकान् क्रूरकर्माभिलिप्ता
नित्यं न्यायोपदेशं ददति च समितौ नीतिशास्त्रानभिज्ञाः।
शान्तिं वाञ्छन्ति लोके शमदमरहिताः क्रोधलोभादिसक्ता
नेतारस्ते हि जाता धनभुजबलिनः सृष्टिरेषा विचित्रा॥६॥

धान्ये पाषाणखण्डान् हविषि पशुवसामम्बु दुग्धे प्रभूतं
गाङ्गेये चारकूटं तिलजमपि घृते ये हरिद्रासु रागम्।
अन्येषूपस्करेषु प्रचुरवसुचयान् योजयित्वा नितान्तं
जाता व्यापारिणस्ते बहुविभवयुताः सृष्टिरेषा विचित्रा॥७॥

आज्यं प्राज्ये स्वराज्ये भवति न सुलभं गव्यदुग्धञ्च शुद्धं
मिष्टान्नं तैलपक्वं समजनि मिलितं यत्र पेयञ्च लेह्यम्।
भैषज्यं नापि सिद्धं वसनमपि सदा रोगकृद् धारणीयं
वाहानां गैसदोषात् समजनि विकृतिः सृष्टिरेषा विचित्रा॥८॥

□

चातुरी

शत्रूञ्जेतुमलं प्रहेतिसहितं सेनात्रयीवर्धनं
रक्षाकोषनिमित्तवित्तचयनं दानं धनागारयोः।
लोकानामवनञ्च पालनमथो राष्ट्रे समुत्पादनं
यत्र प्राणिहितार्थशासनमियं श्रीमन्त्रिणश्चातुरी॥१॥

शब्दानां पठनं विदन्ति न जना येऽर्थावबोधे जडा
व्युत्पत्तिर्विगता समाससहिता येषां सदाऽप्रत्ययां।
येऽपि स्युर्यदि शिक्षकाः प्रवचसः केनाऽपि बीजेन ते
प्रख्याताः सुखिनो भवन्ति नितरां तेषां हि तच्चातुरी॥२॥

धान्यादावुपलान् घृते पशुवसां संयोज्य दुग्धे जलं
स्वर्णे पित्तलकादिधातुनिकरं रागं हरिद्रासु ये।
यन्त्रेणान्यपदार्थमिश्रणविदो लाभं लभन्ते भृशं
येऽपि प्रापणिका वसन्ति सुखिनस्तेषां हि तच्चातुरी॥३॥

नानावैभवरागलोभनपरं दत्वा निजं भाषणं
ये संगृह्य मतानि मानवततेर्निर्वाचने यत्नतः।
सिद्धिं प्राप्य भवन्ति बोधरहिताः स्वार्थप्रवृत्ताश्च ये
नेतारः सहसा भवन्ति धनिनस्तेषां हि तच्चातुरी॥४॥

हृत्वा मादकद्रव्यभारमथवा सौवर्णवैस्कूटक-
माग्नेयास्त्रयुतं सुवाहनधरं विस्फोटचूर्णान्वितम्।
अन्यं लाभकरं सुवस्तुनिचयं विक्रीय देशान्तरे
वित्ताढ्या यदि तस्कराः स्मगलरास्तेषां हि तच्चातुरी॥५॥

□

दक्षिणा

प्रेभ्यस्यागमनं निशम्य सहसा यः प्राक् पुरो धावति
दृष्ट्वा सद्यजमानपुत्रमधुना नानाविधं याचते।
दाता तद्भवनं चिराय निवसन् भार्यामनैषीद् गृहात्
पण्डावंशविभूषणाग्रजनुषो हा हा हता दक्षिणा॥१॥
संस्कारे कचकर्त्तनं हि भविता गोमूत्रपानं कटु
वह्नौ नेत्रगदो घृतादिहवने भिक्षाटनं दूषणम्।
इत्थं नूतनविप्रराजतनयो नाभ्येति सूत्रं तदा
दीनस्यास्य पुरोहितस्य विपुला हा हा हता दक्षिणा॥२॥
यज्ञार्थञ्जनतागृहीतमखिलं लक्षाधिकं द्रव्यकं
नीत्वा साधुरयं सुदूरमगमच्छिश्यैः समं तत्स्थलात्।
श्रुत्वा ग्रामनिवासिनोऽपि सहसा चक्रुः समाप्तिं क्रतो-
र्होतॄणां यजने वृताग्रजनुषां हा हा हता दक्षिणा॥३॥
प्रक्षाल्याङ्घ्रियुगं भवार्तिशमनं संस्थाप्य शुभ्रासने
मिष्टान्नानि विशुद्धवस्तुरचितान्यादाय पात्रे मुदा।
पत्न्या सार्धमसौ सुधार्मिकममुं संवीज्य सच्चामरै-
र्विप्रं भोजयतीति दूषणवशाद् देया कथं दक्षिणा?॥४॥
पित्रोः शिष्टिमपास्य रूढिविकलां स्वीयञ्च धर्मं मुदा-
अर्वाचीनमवाप्य ज्ञानमखिलं बाला स्वतन्त्रा यदा।
कम्रोऽप्याशु तदैव तद्गृहगतस्तेने नवं प्रेम वै
शीघ्रोद्वाहविधानदक्षगुरवे देया भृशं दक्षिणा॥५॥
दक्षिणस्य वशिष्ठस्य गां सम्पूज्य विचक्षणा।
प्रदक्षिणाप्रभवाद्धि रघुं लेभे सुदक्षिणा॥६॥

□

मान्यो न होलोत्सवः

दुर्भिक्षे समुपागतेऽत्र बहुषु प्रान्तेषु राज्येषु च
संशुष्काः सलिलाशयाः समभवन् वापीतडागादयः।
गोधूमाश्चणका यवा न सुलभा घासोऽपि नो गोचरे
आर्ता कोट्यधिका जनाश्च पशवो मान्यो न होलोत्सवः॥१॥

दुर्भिक्षे विवृताननेन कृषकानत्तुं समुज्जृम्भिते
नो दुग्धं न घृतं न चापि मधुरं तक्रं दधि प्राप्यते।
दुष्पूरे जठरेऽर्धनग्नवपुषि प्राप्ते जरामक्रमात्
स्वार्थान्धे जननायके सति भृशं मान्यो न होलोत्सवः॥२॥

हन्तुं मानवतां सदा शमयितुं शान्तिं परां भारते
पाकिस्तानप्रदत्तशस्त्रविभवा आतङ्कवादे रताः।
दुष्टाः शोणितवर्षणैकनिरता आग्नेयगोलैर्मुदा
हिन्दून् घ्नन्ति निरागसो हि सततं मान्यो न होलोत्सवः॥३॥

धूलीधूसरितेऽन्नपानविकले भूमौ शयाने सदा
तारुण्येऽपि गतस्मिते च मनुजे भग्नेप्सिते भारते।
नित्यं दुर्वहगेहभारवहनात् सुप्ते प्रियाविभ्रमे
दैन्ये नृत्यति मूल्यवृद्धिसमये मान्यो न होलोत्सवः॥४॥

केचिच्चौरास्तथान्ये ह्यपहरणकृतो ये बलात्कारपृक्ता
अर्थार्थं धावमानाः स्थविरयुवशिशून् मारयन्ति प्रकामम्।
ते साधून् पीडयन्ति प्रचुरधनकृते स्वार्थसिद्ध्यै मदान्धाः
कीदृग् होलोत्सवः स्यात् परहितमनसां भारते तत्प्रभावे॥५॥

□

साधना

जप्त्वा ब्रह्म सनातनं द्विजगणा मुक्तिं लभन्ते यया
राष्ट्रोत्थानपरायणाः कविवरा निर्मान्ति काव्यं यया।
युद्धे वीरवराः स्वकीयविजयं वाञ्छन्ति नित्यं यया
सर्वेषां हितकारिणी जगति सा राराज्यते साधना॥१॥

सच्छात्रा गुरुपादपद्मदयया विन्दन्ति विद्यां यया
ध्यानैकाग्रधियः समेऽपि यतयः सिद्धिं लभन्ते यया।
राजानो नृपनीतिशास्त्रनिपुणाः कुर्वन्ति राज्यं यया
सच्छात्रैर्यतिभिर्नृपैश्च विहिता सा शोभते साधना॥२॥

व्यापारे क्रयविक्रयोन्नतिपरा वैश्याः समृद्धा यया
सङ्गीतेऽभिनये च चित्रपटले दक्षा लभन्ते यशः।
स्पर्धायाश्च क्रिकेटखेलनपरा लक्ष्यं लभन्ते यया
सर्वेभ्यो धनदायिनी जगति सा शोशुभ्यते साधना॥३॥

नानायन्त्रविमाननिर्मितिपरा वैज्ञानिका विश्रुता
आकाशे विचरद्ग्रहादिविषये प्रान्वेषणं कुर्वते।
शस्त्रास्त्रे परमाणुशक्तिसहिते प्रोद्योगवृद्ध्यै यया
राष्ट्राणां हितसाधिका भवतु सा तेषां भृशं साधना॥४॥

रत्नानां परिशोधनेऽतिनिपुणा देशे विदेशेषु ये
श्रेष्ठा वैकटिकाः सुरत्नजटितान् विक्रीय भूषाचयान्।
जायन्ते व्यवसायकर्मनिरताः ख्याता धनाढ्या यया
व्यापारे धनदायिनी विजयते तेषां हि सा साधना॥५॥

मनोज्ञमुरलीस्वनश्रवणमोहिता गोपिकाः
प्रमुच्य गृहकर्म कृष्णनिकटं निकुञ्जे ययुः।
चिरं नटवरेण तेन सह रासलीलां व्यधु-
र्मुकुन्दरतिदायिनी जयति तत्कृता साधना॥६॥

मारणे मोहने चाटने मूर्च्छने
तामसास्तान्त्रिका इन्द्रजाले रताः।
हिंसनं कुर्वते वित्तलोभाद् यया
वैकृती तैः कृता सोच्यते साधना॥७॥

प्रोच्चदुर्गश्च सौधं सुहर्म्यं तथा
सिद्धहस्ता विचित्रं सुचित्रं यया।
शिल्पिनश्चित्रकाराश्च निर्मान्ति ये
श्लाघनीयास्ति तेषां हि सा साधना॥८॥

क्रिकेट - हाकी - फुटबाल - टेनिसा –
द्यनेकखेलासु सुलब्धकीर्तयः।
यया लभन्ते विजयं धनञ्च
प्रशोभते तैर्विहिता हि साधना॥९॥

कथाः सुकाव्यं रचयन्ति नाटकं
पुराणवृत्तं कवयो मनीषिणः।
ददाति तेभ्यो विपुलं यशोधनं
सरस्वतीपूजन – लग्नसाधना ॥१०॥

निर्मातुं रम्यकाव्यानि रसपूर्णानि सर्वदा।
पाण्डेयमोहनेनापि क्रियते शिवसाधना॥११॥

□

समस्यापूर्तयः

राजलीला—

वासार्थं यत्र सौधं सुललितवनिता कामकेलिप्रपूर्त्यै
भोक्तुं भोज्यं गरिष्ठं विविधफलरसा वारुणी यत्र पातुम्।
यातायातप्रबन्धे द्रुततरगमनं हेलिकोप्ट्रादियानं
नेतॄणां तस्कराणामसितधनवतां राजभिद् राजलीला॥१॥

कर्मणे—

प्राबल्यात् परकामिनीसुरमणं जायेत नो नर्मणे
देशस्यास्य हितैषिणे नतिरियं वीराय सद्वर्मणे।
भ्रष्टाचारनिरोधनं हि भवताद् राष्ट्रे सदा शर्मणे
वर्धन्तां सकला जनाः श्रमरताः श्रीभारते कर्मणे॥२॥

राजतामेकताभावना मानसे
वर्ततां जन्मभूगौरवं श्रेयसे।
भ्राजतां भारते भारती वैबुधी
लीयतां मानसे स्रग्विणी मोहिनी॥३॥
मोदतां सभ्यता मानदा मानवी
द्योततां विद्यया कर्मजा विद्युतिः।
जायतां संस्कृतं संस्कृतिः शर्मणे
वर्धतां वर्धतां कर्मवित् कर्मणे॥४॥

लोकतन्त्राधिकारः—

यस्मिन् व्यक्तेर्महत्त्वं स्वमतवितरणाच्छासनं लोकनिघ्नं
यस्मिन् शिक्षाप्रलब्धिः शिशुयुवजरतां पाठशालाप्रसारात्।
उद्योगानां विकासो रणविषमविधौ शान्तिमार्गोपदेशः
सोऽयं लोकोपकारी जगति विजयतां लोकतन्त्राधिकारः॥५॥

भाविनी शताब्दी—

प्रतिगृहं तडिद्योगाद् दूरदर्शनयन्त्रस्य प्रबन्धात्
कृत्रिमशिरसो भावाद् भविता यस्यां कार्यपूर्तिः।

प्रसिद्धसौरतेजसां यस्यामन्नपाकादिव्यवस्था
भवितेन्दुलोकवासो धनवतां सा भाविशताब्दी॥६॥

कस्य नाभ्यर्थनीयाः—

रम्यं हर्म्यं प्रमुक्तं सुखमपि सकलं पुत्रदारोद्गतं यै-
र्बन्धुत्वं यैश्च हीनं स्वजननवसुधागौरवोत्कर्षहेतोः।
त्यक्ताः प्राणाः प्रिया यैः समरभुवि मुदा धैर्यमालब्य चित्ते
पूज्यास्ते देशभक्ताः परहितरसिकाः कस्य नाभ्यर्थनीयाः॥७॥

मन्त्रिणः—

दीनानां प्रहितैषिणः सुमनसो धीरा महासङ्कटे
राष्ट्रोत्थानपरायणाः नयविदो गम्भीरभावोज्ज्वलाः।
धन्या भारतभूविकासकुशला वीरा महात्यागिनो
मान्याः श्रीलजवाहरप्रभृतयो नम्याः महामन्त्रिणः॥८॥

गीर्वाणवाणी—

यस्यां वेदोपदेशः सकलहितकरो भाति बोधप्रदीपो
यस्याश्चारित्र्यशिक्षा बहुविनययुता सर्वराष्ट्रप्रधाना।
ऐक्यं पुंसामजस्रं प्रणुदति सकलान् देशरक्षां विधातुं
भाषाणां यास्ति माता जगति विजयतां सा हि गीर्वाणवाणी॥९॥

राष्ट्रहिताय भूयात्—

उद्योगवृद्धिः समता समाना निष्पक्षमैत्री परराष्ट्रबद्धा।
शान्तिप्रशिष्टिः समुदारभावः सर्वञ्च नो राष्ट्रहिताय भूयात्॥१०॥

राजताम्—

राष्ट्राणां समितौ प्रशान्तिपदवीप्रस्थापनाघोषको
निर्भीको युवकः सुनीतिनिपुणो देशे विदेशे महान्।
देशाद्धोरपरायणः स्वजननीसंयोजनापोषको
राजीवः सचिवाग्रगण्ययुवको मन्त्री चिरं राजताम्॥११॥

अग्रेसरः केसरी—

न्यायारण्यचरः कुतर्ककरिणः कुम्भस्थलोत्पाटक
आतङ्काजिनयोनिनाशनिपुणः प्रद्विट्पशुत्रासकः।
पञ्जाबासमदेशदुर्गमपथं शान्त्यङ्घ्रिभिः शोधयन्
राजीवः शुभभारते नयवतामग्रेसरः केसरी॥१२॥

विलासः—

दोषज्ञानामशुद्धौ मणिनिचयवतां रत्नशोधे प्रकृष्टे
भूपानां शत्रुपक्षे नयविनयजुषां न्यायशास्त्र-प्रतर्के।
नेतॄणां राजकार्येऽभिनयरुचिमतां दूरदर्शावलोके
लावण्ये सुन्दरीणां तरुणतनुमतां राजते दृग्विलासः॥१३॥

माधुरी—

द्राक्षाया मधुरत्वमेतदपरं भिन्नं सितायास्ततो
माधुर्यं पयसोऽतिभिन्नमपरं मिष्टान्नजातेस्ततः।
वामाया अधरे परा मधुरता भिन्ना सुधायास्ततो
विष्णोर्मे हृदये परैव रमतां श्रीमोहिनी माधुरी॥१४॥

सम्मेलनम्—

यस्मिन् भान्ति समस्तशास्त्रनिपुणा एकत्रिताः पण्डिता
नेतारः कविकर्मपाठरसिकाः शास्त्रार्थतत्त्वप्रियाः।
भद्रं तज्जयपत्तने विजयतां प्राज्ञैः समायोजितं
राजस्थानविभूषणं सुरवचः साहित्यसम्मेलनम्॥१५॥

सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते—

आम्राङ्कुरं कोकिलशब्दगीतिः पुष्पासवे लोलुपभृङ्गघोषः।
विशेषस्ते च समागमे मे सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते॥१६॥

□

टिप्पणी :

५तः७ मई १९८६ वर्षे राजस्थानसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनस्य महाधिवेशने 'अखिलभारतीय-कविसम्मेलन-समस्यापूर्ति'– प्रसङ्गे रचितानि पद्यानि 'संस्कृतोन्मेष'– सम्मेलनपत्रिकायां प्रकाशितानि च।

समस्यासौहित्यम्

कीदृशी देशभक्तिः

उत्कोचादानपृक्तः परधनहरणे विद्यते यस्य वृत्तिः
भ्रष्टाचाराभिषङ्गः परहितकरणे नैव यस्य प्रवृत्तिः।
कामात् क्रोधाच्च मोहान्मदविकृतिजुषो नैव जाता निवृत्तिः
दुर्वृत्तः सोऽपि मन्त्री यदि भवति तदा कीदृशी देशभक्तिः?॥१॥
मनसि वचसि कार्ये भिन्नतायाः प्रसारात्
व्यवहरति न नीतिं दीनदुःखं निहन्तुम्।
स्वकुलभरणयुक्तिः कामकोपाभिषक्तिः
स भवति यदि नेता कीदृशी देशभक्तिः?॥२॥
सेवाभावो विनष्टः समधिगतधनाच्छाशनस्याधिकारात्
सौहार्दश्चातिदूरङ्गतमिह मनसश्छद्मतायाः प्रसारात्।
चेतोवृत्तिर्हि यस्य प्रभवति सततं वैभवोत्कर्षकार्ये
सर्वैर्निन्द्यः स नेता यदि भवति तदा कीदृशी देशभक्तिः? ॥३॥

शोभते देशभक्तिः

मनसि वचसि कार्ये चैकतायाः प्रभावाद्
व्यवहरति सुनीतिं क्षेत्रदुःखं निहन्तुम्।
सकलजनहितार्थं विद्यते यस्य वृत्तिः
स भवति यदि नेता शोभते देशभक्तिः॥४॥

भारतश्रीः

तुङ्गः प्रालेयशैलो रजतमुकुटवद् राजते मूर्ध्नि यस्या
लोकैर्वन्द्यं यदीयं पदकमलयुगं क्षाल्यते सागरेण।
पीतश्चण्डातकं कुर्भजटितगगनं नीलवर्णा च शाटी
चन्द्रार्कौ लोचने च प्रमुदितवदना भ्राजते भारतश्रीः॥५॥

श्रौतैः स्मार्तैर्यजनविधिभिः पूजिता विप्रवृन्दैः
पाकाक्रान्ता रणभुवि सदा रक्षिता वीरवर्गैः।
स्वर्णाभूषाच्छुरितमणिभिर्भूषिता वैश्यवारैः
सर्वैः सेव्या भरतभुविजैर्भ्राजते भारतश्रीः॥६॥

धन्याऽस्मदीया धरा

श्रौतस्मार्तमखैः पवित्रनिलया सौहार्दसम्पादिका-
अध्यात्मोद्भवभासुरा गुणवती चारित्र्यरत्नोज्ज्वला।
नानापक्षिमृगाञ्चिता रसमयी गङ्गादितीर्थैः सदा
देवानामपि दुर्लभा विजयते धन्याऽस्मदीया धरा॥७॥
यस्यां काव्यकलाकलापनिपुणा वाल्मीकिमुख्या बभु-
र्यस्यां व्यासपतञ्जलिप्रभृतयो वेदान्तबोधं ददुः।
यस्यां संस्कृतभारती बुधगणैरद्याऽपि सन्धार्यते
क्षेमं विश्वजनीनमुन्नयति सा धन्याऽस्मदीया धरा॥८॥

राजस्थली राजते

विद्वद्वृन्दधरा सुरालयवरा सौभाग्यसम्पत्करा
मृत्स्नाकूटधरा जलाशयभरा कुल्याभिषिक्तस्थिरा।
अम्भोनिर्मलनिर्झरातिमधुरा प्रोद्यानचेतोहरा
प्राणोत्सर्गपरम्परातिरुचिरा राजस्थली राजते॥९॥
शौर्यौदार्यधुरन्धरैर्भटवरैर्या रक्षिता सर्वदा
नानोद्योगपरम्पराभिरभितो वाणिज्यवल्लीस्थली।
अध्यात्मोत्सवपावनी सुमनसां चारित्र्यरत्नाञ्चिता
शान्तिस्नेहपरोपकारजननी राजस्थली राजते॥१०॥

नैव शत्रुर्हि सह्यः

धर्मोद्भूताध्वरापैः क्षितिपतिनिवहैरर्चितः पावनात्मा
श्रीकृष्णश्चेदिराजं परमपरिमिताश्लीलशब्दान् ब्रुवन्तम्।
दुर्दण्डं दुश्चरित्रं स्वजनकभगिनीसूनुमेवातिशीघ्रम्
सद्वृत्तत्राणहेतोः शिरसि च हतवान् नैव शत्रुर्हि सह्यः॥११॥
श्रीरामो विप्रवर्यं रणभुवि हतवान् रावणं दुश्चरित्रं
श्रीकृष्णः सञ्जघान स्वजनकजननीपीडकं दुष्टकंसम्।

स्वभ्रातॄन् पाण्डुपुत्राः कुरुपतितनयान् मारयामासुरेव
हन्तव्याः पाकसैन्या विकटभटवरैर्नैव शत्रुर्हि सह्यः॥१२॥

नारी नराणां खनिः

ब्रह्माणीव समस्तलोकजननी पद्मेव या पालिका
रुद्राणीव समस्तसृष्टिशमनी वाणीव या शिक्षिका।
सावित्रीव सती विशुद्धचरिता सीतेव या पद्मिनी
पूज्या सा सुरलोकवन्द्यचरणा नारी नराणां खनिः॥१३॥
वेदव्याकरणादिशास्त्रनिपुणा विज्ञा ययोत्पादिता
यस्यामर्जुनरामकृष्णसदृशा वीराः प्रतापादयः।
भामाशाहदधीचकर्णशिबयो जाता वदान्या वराः
सा वन्द्याऽखिलनेतृवर्यजननी नारी नराणां खनिः॥१४॥

राजते राजनीतिः

अष्टौ वर्षा व्यतीताः पुनरपि सततं बाबरीमस्जिदस्य
ढाँचाध्वंसे प्रलिप्ताः सचिवपदजुषस्त्यागपत्रं हि दद्युः।
सत्तापक्षं विपक्षा अनुचितविधिभिः पीडयन्ति प्रकामं
तेषां न्यायप्रतीपा स्वदलविवृतये राजते राजनीतिः॥१५॥

खलविभवसवित्री स्वार्थसम्पादयित्री
प्रतिदिवसनवीनस्वामिगा प्रेमहन्त्री।
सपदि विषमवृत्ता वारनारीव धूर्ता
प्रकटितबहुरूपा राजते राजनीतिः॥१६॥

मन्वते मान्यमानैः

विश्वामित्रं वशिष्ठं यमनियमयुतं प्राणमद् रामचन्द्रो
द्रोणाचार्यं प्रणेमुः कुरुपतितनयाः पाण्डुपुत्राश्च कृष्णम्।
विद्वांसो राज्यपालैः कतिचनकवयः सत्कृता राष्ट्रनाथैः
स्वीयं मानं हि मान्या जगति गुरुतमैर्मन्वते मान्यमानैः॥१७॥

ज्ञानं लब्ध्वा सर्वविद्यागुरुभ्यः
शुभ्रां कीर्तिं तन्वते सप्तलोके।
पूज्यन्ते ते कोविदै राष्ट्रनाथै-
र्मान्या मानं मन्वते मान्यमानैः॥१८॥

कलया कलयामहे

श्रुतिविवेकधरां स्मृतिसारिणीं
रसमयीं सरलां मधुरां सदा।
सकलराष्ट्रहितां बुधसेवितां
सुरगवीं कलया कलयामहे॥१९॥

धन्यो धरित्रीसुतः

वर्षाशीतनिदाघकष्टसहने धीरो गभीरो महान्,
धूलीधूसरितोऽन्नपानविकलो भूमौ शयानोऽन्वहम्।
संयम्यात्ममनश्चिरं प्रकुरुते क्षेत्रेषु कार्यं सदा
सन्तोषी स परिश्रमी हलधरो धन्यो धरित्रीसुतः॥२०॥

शिखरिणी

रसं मृद्वीकायाः सुरभिमकरन्दं सुमनसां
पिकानामुन्मादं भ्रमरगणगानं सुमधुरम्।
विलासिन्या रागं ह्यधररसनिःष्यन्दसरणीं
विधत्ते माधुर्यं सुकविकवितायाः शिखरिणी॥२१॥

युद्धादसिद्धं वचसैव सिद्धम्

क्रुद्धञ्जयेच्छान्तिगिरा विवादे
दानेन लुब्धं विनयेन विज्ञम्।
छन्दोऽनुवृत्तेन जयेच्च मुग्धं
युद्धादसिद्धं वचसैव सिद्धम्॥२२॥

सुधाकरेणाऽपि सुधाकरेण

अङ्गानि यस्या घनसारलेपो
ज्वालेव वह्नेर्दहति प्रकामम्।
न शान्तिमाप्नोति वियोगिनी सा
सुधाकरेणाऽपि सुधाकरेण॥२३॥

मान्यो हि मान्यागमः

श्रद्धां साधुषु वर्धयन्नतितरां प्रीतिं समुल्लासयन्,
हिंसामाशु निवारयन्निरुपमां मैत्रीं जनेषून्नयन्।
गाढध्वान्तसमाकुलस्य जगतस्त्रासं निरस्यन् सदा,
कल्याणं कुरुते समस्तजगतां मान्यो हि मान्यागमः॥२४॥

नो विस्मयो न स्मयः

श्रीविष्णुः कुरुते कृपां यदि परां विश्वम्भरः श्रीपति-
दीनो गच्छति भूपतित्वमतुलं मूर्खोऽपि विज्ञायते।
पीयूषत्वमुपैति घोरगरलं शत्रुः सुमित्रायते-
अन्धः पश्यति संशृणोति बधिरो नो विस्मयो न स्मयः॥२५॥

सूचना-प्रौद्योगिकी

दूरभाष[1]-तडित्पत्र[2]-वैद्युततान[3]-प्रतिलिपिमुद्रकैश्च[4]।
अन्तस्तन्त्र[5]-पत्रैश्च[6] भाति सूचनाप्रौद्योगिकी ॥२६॥

---

१. टेलीफोन, २. तार, ३. ई.मेल, ४. फैक्स, ५. इन्टरनेट, ६. समाचार-पत्र।

□

टिप्पणी :

मार्चमासे २००१ वर्षे राजस्थानसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनद्वारा समायोजितस्य राष्ट्रियसंस्कृतसम्मेलनस्यावसरे अखिलभारतीयसमस्यापूर्तिस्पर्धायां प्रथमपुरस्कारः प्राप्तः।

राष्ट्रियम्

श्रीयोगिराजोऽरविन्दः

प्रोद्यद्गौराङ्गवर्गैः क्षितिपतिनिवहाः पातिताः शासनेभ्य-
स्त्रातुं नेशा यदासन् जनपदमपि च स्वां तनुं मद्यजीर्णाम्।
केचिद् वीरास्तदानीं भयविकलजनान् संस्कृतिं त्रातुकामा-
श्चक्रुः संघं नराणां स्वजननवसुधागौरवोत्कर्षबीजम्॥१॥

नीचाः केचित्तदन्ये विपुलधनपदप्राप्तिहेतोः स्वकीयां
त्यक्त्वा भाषां प्रतिष्ठां सुवसनमशनं देशजातञ्च सर्वम्।
अङ्गीकृत्याँग्लभाषां विविधविधिविधां मद्यमांसादिभोज्यं
स्वीचक्रुर्दासभावं स्वमहिमपतिता जन्मभूमेः सपत्नाः॥२॥

वारेष्वष्टेन्दुवर्षे[1] विरलभटकृतं भारते यत्र तत्र
स्वल्पं स्वातन्त्र्ययुद्धं समभवदफलं त्वैक्यशून्यं नृपाणाम्।
सद्युद्धाब्धौ मृतानामसुकरनिकरैः सूर्यलोकस्थितानां
स्फोटं प्रापारविन्दो[2] जनहितसुरभिः कालिकादेशसिन्धौ[3]॥३॥

पित्राज्ञप्तः समग्रां कविसमययुतां लन्दने ग्रीकभाषां
साहित्यं लैटिनाख्यं समयलघुतयाऽधीतवान्यः समन्तात्।
आंग्लानां भेदभावात् समजनि हृदये तस्य विद्रोहभाव-
स्तत्रैवाब्जासिधेनुं[4] मृदुतरकठिनां स्थापयामास संस्थाम्॥४॥

पश्चात्तिष्ठन्बडौदानरपतिभवने देवभाषां प्रपठ्य
[5]ब्रह्मानन्दोपदेशादवयवसहितां योगविद्यां प्रपेदे।
दीनेभ्यो दत्तवान्यः स्वभवनविभवं देशभक्तो दयालुः
स त्यागी स्वाभिमानी जगति विजयतामीश्वरासक्तचेताः॥५॥

बङ्गक्रान्त्यग्रदूतः[६] शरखनवविधौ[७] वत्सरे कर्मयोगी
धर्माख्यं[८] प्रोच्चभावं सकलजनकृते कर्मयोगीतिपत्रम्[९]।
प्रोट्टङ्कीकृत्य[१०] वीरान् विषमनिजदशां बोधयन् क्रान्तिबीजा-
जागर्त्या योगशक्त्या मनसि समभवद् राजनीतेर्विरक्तः ॥६॥

श्रीकृष्णोत्पत्तिदेशे[११] मनुजतनुगतं कृष्णरूपं ददर्श
पाण्डेचेर्यां[१२] पठित्वा सततमुपनिषज्ज्ञानहेतुप्रपाठम्।
योगाभ्यासप्रतत्त्वप्रमुखविषयकं ग्रन्थरत्नं प्रकाश्य
योगेनान्ते विशुद्धः सकलगुणनिधिर्ब्रह्मसायुज्यमाप ॥७॥

त्यागिने देशभक्ताय योगिनेऽक्षरवेदिने[१३]।
[१४]श्लोकमालारविन्दाय रोचतां शब्दगुम्फिता ॥८॥

□

---

१. १८५७ खिष्टाब्दे
२. पुरुषनामधेयत्वात् पुँस्त्वम्
३. कलकत्तानगरे
४. कमलकटारनाम्नीं संस्थाम्
५. अरविन्दस्य गुरोर्नाम
६. बङ्गभङ्गान्दोलनाग्रणीः
७. १९०५ खिष्टाब्दे
८. बङ्गभाषापत्रिका
९. आंग्लभाषापत्रिका
१०. मुद्रयित्वा
११. कारागृहे
१२. पाण्डेचेरीस्थितयोगाश्रमे
१३. ब्रह्मज्ञात्रे
१४. प्रशंसास्रक्

बङ्गजनमुक्तिः

जायामायात्रियामाततातिमिरततिः क्षिप्यते येन दूरम्
यस्मिन् शूराब्जवक्त्रं विकसति सततं मित्रपादैः[१] प्रदीप्तैः।
यत् सर्वस्वापहारि त्रिगुणगुणगणलोकसंहारकारि
शौर्योत्कर्षं भटानां जगति विजयते तद्धि जन्यं सुधन्यम्॥१॥

कलत्रहीनाः सकलत्रयुक्ताः[२]
क्रोधाग्निदग्धा अकृशानुभावाः[३]।
यत्राप्युदात्ताः[४] स्वरिता[५] हिः योधा
मैत्रीं पुरं[६] मैत्रभिदो[७] व्रजन्ति॥२॥

देवानां दैत्यवृन्दैर्विमलमतिजुषां प्राग्युगे घोरशस्त्रै-
र्द्वैतीयीके युगेऽभून्निशिचरपतिना रामचन्द्रस्य भीष्मम्।
तार्तीयीके युगेऽथो कुरुपतितनयैर्भारते पाण्डवानाम्
पाकस्थानां तुरीये सह समरमभूद् बाङ्गलोकैर्निरस्त्रैः॥३॥

याह्याखांपुरुषैः कृतान्तसदृशैनिर्भर्त्सिता भीलुकाः
कामं हर्म्यसुखान्यपास्य विविधान् भोगाँस्तथा देशजान्।
यात्रायां विकटान् विषह्य बहुलान् क्लेशाँश्च तान् मार्गजान्-
आयाताः शरणार्थिनो हि बहवो रक्षाप्रदे भारते॥४॥

यदा जाता[७] जाता विगतनिजतातः सुखरताः
पिता छिन्नं पुत्रं पतिरपि कलत्रं प्रियसखम्।
मृतं दृष्ट्वा कान्तं त्वरितगमनायात् सुनयना
तदा श्रीमुज्जीवो[८] विषविषमपीडामलभत॥५॥

आकाशे जलधौ स्थलेऽपि विषमे यानैर्विशालैर्मुदा
गत्वा बङ्गजसैनिकाः प्रतिभटान् योद्धुं सदा तत्परान्।
हत्वा भारतशिल्पकाररचितैरस्त्रैर्विचित्रैर्वरै
राजन्ते नितरां स्वजन्मवसुधाक्रोडस्थले शायिनः॥६॥

खांदुश्शासनपीडिता[६] विवसना कृष्णेव बङ्गाचला
कृष्णश्रीजगजीवनेन[१०] समरे प्राप्तास्त्रवस्त्रा कृता।
दुर्वृत्ते हतबान्धवेऽतिविवशे याह्यांरिपौ सीदति
कामं भारतदत्तधान्यविभवा मुक्ता हि जाताऽधुना॥७॥

कलाकलापैः कलिताकृतीनि, संगृह्य यानानि गृहोपमानि।
बङ्गस्थबन्धुः[११] खिलदेशमान्यो, जीव्याच्चिरं भारतदेशमित्रम्॥८॥

□

---

१. सूर्यकिरणैः, भारतसहायताभिश्च
२. जनरललेफ्टिनेन्टसहित्र
३. अधिकप्रभावाः
४. उन्नताः
५. स्वर्गताः
६. सूर्यमण्डलम्
७. तनयाः
८. शेखमुजीबुर्रहमानः
९. याह्या खाँ
१०. कृष्णस्वरूपः तत्कालीनभारतरक्षामन्त्री
११. शेखमुजीबुर्रहमानः

कश्मीरं भारताङ्गम्

कश्मीरं भारताङ्गं कथमपि ललितं नो वयं सन्त्यजेम
यान्तु प्राणा यथेष्टं पुनरपि बहवो भारतीया युवानः।
सिक्त्वा तं स्वीयरक्तैरमृतकणसमैर्जीवयिष्यन्ति योधान्
ते नेष्यन्ति प्रकामं स्वजननवसुधागौरवोत्कर्षवृद्धिम्॥१॥

देशोऽयं शारदायाः सुरमुनिवसतिः कश्यपस्य प्रमार्गी
बारामूलो यदीयः स्मरति बहुतरं पूज्यदेवं वराहम्।
दिव्यावासो दधीचेः कविकुलतिलकः कल्हणो यत्र जातो
गोनन्दः पूर्वराजश्चरमनरपतिः सिंहसिंहः प्रतापी॥२॥

पश्चाच्छ्रीशाहमीरो यवनयुवपतिर्द्रोहपूर्वं शशास,
शान्ते मौग्लाधिपत्ये विकटभटवरा आफगानाः शशासुः।
पश्चात् हिन्दुप्रजेशा बहुलबलयुता अत्र राज्यं हि चक्रु-
र्देशे जाते विभक्ते समजनि विलयो भारते चास्य सम्यक्॥३॥

जम्मूलद्दाखघाटीत्रितयजनपदक्षेत्रमस्मिन् सुराज्ये
पाकिस्तानेन किञ्चित् प्रखरमतिमता क्षेत्रमस्माच्च जह्रे।
दत्तं चीनाय किञ्चिद् गिलगितमपरं चीननिघ्नं हि किञ्चित्,
कश्मीरो न्यायनिघ्नः शुभवहविधिना भारतस्यैव चाङ्गम्॥४॥

आंग्लानां कूटनीत्या मुगलविधिसभापारिताभिः क्रियाभि-
र्ब्दुल्लाशेखवर्यो नयविधिनिपुणो नेहरूप्राप्तपक्षः।
पञ्चत्रिंशत्समा वै यवनहितकरं राज्यमेतच्छशास
बन्दीभूतं प्रदोषात् पुनरपि दयया श्रीन्दिराऽमोचयत्तम्॥५॥

तस्मिन्कालेऽतिघोरैर्यवनयुवबलैर्ध्वंसिता हिन्दुगेहा
भुक्तास्तैर्हिन्दुपत्न्यः शिशुयुवजरठा हिन्दवो मारिताश्च।
क्रूरातङ्कप्रवादैः प्रबलभययुजो यापिता हिन्दवोऽन्ये
ध्वस्ता देवालयास्तैः प्रभुवरशरणा मस्जिदा निर्मिताश्च॥६॥

रम्ये डोडाप्रदेशे भृतकभटवरा आफगानास्तथान्ये
पाकिस्तानेन नुन्ना दहनकणचयान् यत्र तत्राभ्यवर्षन्।
तस्मिन्नैके मनुष्या भवनविरहिताः प्राणशून्यास्तथाऽन्ये
जाता जाता विताताः प्रियपतिरहिताः शून्यचित्ताश्च कान्ताः॥७॥

संयुक्ते राष्ट्रसंङ्घे कथयति सततं पाकमंत्रीशरीफः
कश्मीरे मानवानामधिकृतिहननं कार्यते भारतेन।
इत्थं सोऽत्र स्वदोषान् क्षिपति च वितथः सर्व एष प्रचारो
राष्ट्राध्यक्षा विवादे नयविनययुताः सन्ति सर्वे तटस्थाः॥८॥

सीमारक्षा दृढ़ा स्यात् प्रबलरिपुबलं चात्र नायातु कामं
पाकिस्तानेन सार्धं पुनरपि शिमलासन्धिना भारतेन।
शान्त्या नीतेः प्रयोगादधिकृतविषयः शोधनीयो विवादो
युद्धाभावश्च भूयाद् विहितजनहितं राज्यमेतच्च भायाद्॥९॥

□

करगिल-विजयः

कश्मीरं भारताङ्गं कथमपि ललितं नो वयं सन्त्यजेम
यान्तु प्राणा यथेष्टं पुनरपि बहवो भारतीया युवानः।
सिक्त्वा तं स्वीयरक्तैरमृतकणसमैर्जीवयिष्यन्ति योधान्
ते नेष्यन्ति प्रकामं स्वजननवसुधागौरवोत्कर्षवृद्धिम्॥१॥

पञ्चाशद्वर्षमध्ये गुणमितसमरे योद्धुकामेन तेन
कश्मीरो भूमिनाको सुरमुनिविषयो नैव लब्धो नितान्तम्।
तस्मात् खिन्नो हि पाकः कपटविधिपटुः शान्तिसौहार्दसन्धिं
हित्वा लाहौरपुर्यां कृतमपि कृतवान् घोरविश्वासघातम्॥२॥

प्राप्तुं तं केचिदुग्रा हजरतबलके मस्जिदे विद्यमानाः
पूर्वं नव्यास्त्रशस्त्रा भृतकभटवरा आफगानास्तथाऽन्ये।
पाकिस्तानेन नुन्ना दहनकणचयान् यत्र तत्राभ्यवर्षन्
मुक्तास्ते भारतेन प्रचुरशमवता निर्ग्लहं शान्तिसिद्ध्यै॥३॥

प्रालेयाच्छन्नशैले करगिलविषये तुङ्गमुश्कोहघाट्याम्
क्षेत्रे बाटालिके टाइगरशिखरके शैलकूटे दराजे।
पाकिस्तानं स्वसैन्यान् विकटभटवरान् चोग्रवादिप्रशिष्यान्
सम्प्रेष्य क्रीतदासान् भरतभुवि पुनः स्थापयामास युद्धम्॥४॥

ग्रीष्मे याते द्रवत्वं करगिलशिखरे लङ्घयित्वा स्वसीम्नो
रेखां निर्धारितां तामनुचितविधिना प्रावसन् पाकसैन्याः।
तेषां निस्सारणार्थं प्रहरणपटलैः साकमारुह्य शैलं
सेनाध्यक्षस्य शिष्ट्या युयुधरतिचिरं भारतीयाः प्रवीराः॥५॥

प्रोड्डीनैर्वातयानैर्दहनकणमुचो वह्निचूर्णप्रपिण्डाः
प्रक्षिप्ता भारतीयैर्विकटभटवरैः शैलकूटेषु तत्र।

तैर्नष्टाः पाकसैन्या गिरिकुहरगताः सायुधा योद्धुकामाः
पश्चादारुह्य शैलान् पदगभटवराः प्राहरन् शत्रुसैन्यान्॥६॥

तस्मिन्युद्धे कराले रणविधिनिपुणा भारतीया युवानो
राजस्थानस्य वीरा यवनरिपुभटान् मारयित्वाऽमरा ये।
तेषां जाता विताताः प्रियपतिरहिता गर्वयुक्ताश्च कान्ताः
पुत्रैर्हीना जनन्यो बहुतरमभवन् भ्रातृहीना भगिन्यः॥७॥

घोरे युद्धे हि तस्मिन् रिपुबलनिहता घोरचीत्कारभाजश्च
छिन्नाङ्गाः केऽपि दीना गदहरणपदं प्रापिता रक्षिवर्गैः।
स्वस्था जातास्तथाऽन्ये रविसुतसदनं प्राप्नुवन् यत्र पौरा-
स्तत्साहाय्यं विधेयं तनुहृदयधनैः सर्वकारैश्च लोकैः॥८॥

नीतिज्ञा राष्ट्रनाथा उचितमकथयन् भारतीयश्च पक्ष-
श्चीनाच्चामेरिकाया रणसमयवतीं प्राप्य वार्तां शरीफः।
प्रत्यागन्तुश्चचक्षे निजभटसहितानुग्रवादिप्रवीरान्
प्रत्यायाताश्च केचित् कतिपयकुभटा द्राविता भारतीयैः॥९॥

पाकिस्तानेन नुन्नाः कुटिलमतिभृतो मस्जिदे विद्यमानाः
क्रूरा नव्यास्त्रशस्त्रा भृतकभटवरा आफगानास्तथाऽन्ये।
लब्धुं कश्मीरदेशं दहनकणचयान् वर्षयन्ति प्रकामम्
राष्ट्राध्यक्षा विवादे नयविनययुताः सन्ति सर्वे तटस्थाः॥१०॥

कविरटलविहारी वाजपेयी प्रमन्त्री
रुचिरशिखरवार्तामागरायां विधातुम्।
जनरलपरवेजं पाकराष्ट्रस्य नाथम्
सचिवसमितियुक्तं प्राह्वयद् भारते सः॥११॥

तत्रायातेन तेन प्रथममभिहितङ्कटनीत्याश्रयेण
साध्यः कश्मीरवादस्तदनु च विषयाः साधनीयास्तथाऽन्ये।
अस्माकं मन्त्रिणोक्तं रहसि सुमनसा नो विवादोऽत्र कश्चिद्
देशे जाते विभक्ते समजनि विलयो भारते चास्य सम्यक्॥१२॥

विश्वव्यापारकेन्द्रं सकलहितकरं सैन्यरक्षाप्रकेन्द्रम्-
आक्रान्तं वातयानैरलनियमदलैर्मुख्यलादेनशिष्यैः।[1]
वित्ताढ्यामेरिकायाः प्रमुखपदजुषा जार्जडब्ल्यूबुशेन-
आदिष्टैर्वीरयोधैर्विविधबमचयैर्नाशितं तालिबानम्॥१३॥

संसद्गेहञ्च दिल्ल्यां विधिगृहमपरं रम्यकश्मीरदेशे,
श्रुत्वाऽऽक्रान्तं हि सर्वे विहितमनुचितं निन्दितं कार्यमेतत्।
क्रूरातङ्किप्रवर्गे प्रमुखपदजुषां लश्करे-जैश-संज्ञे-
आदिष्टा निग्रहार्थं निजबलप्रमुखाः पाकराष्ट्राधिपेन॥१४॥

प्रावोचद् गेहमन्त्री नयविनययुतो लालकृष्णाऽऽडवाणी,
स्वोद्घोषः पालनीयो निजनयकृतिना पाकराष्ट्राधिपेन।
उग्राः प्रत्यर्पणीया विविधदलजुषो ये त्वया निर्गृहीता
रोद्धव्यस्तत्प्रवेशो भरतभुवि सदा सीमपारान्नितान्तम्॥१५॥

नष्टाः स्यादुग्रशिक्षा प्रहरणनिचया नाशनीयाश्च तेषां
सीमारक्षा दृढा स्यात् प्रबलरिपुबलश्चात्र नायातु कामम्।
पाकिस्तानेन सार्धं पुनरपि शिमलासन्धिना भारतेन
शान्त्या नीतेः प्रयोगादधिकृतविषयः शोधनीयो विवादः॥१६॥

रक्षार्थञ्जन्मभूमेर्ये हुतात्मानो दिवङ्गताः।
तेभ्यो भारतवीरेभ्यः श्रद्धाञ्जलिः समर्प्यते॥१७॥

कविरटलबिहारी शान्तिमार्गप्रचारी
बहुजनहितकारी सर्वधर्मप्रसारी।
रिपुकृतभयदारी राष्ट्रनिर्माणकारी
जयतु जयतु नित्यं मन्त्रिरूपेऽवतारी॥१८॥

□

राजस्थान - गौरवम्

विद्यादानपराम्परातिरुचिरा सौभाग्यसम्पत्करा
मृत्स्नाकूटधरा जलाशयभरा कुल्याभिषिक्तस्थिरा।
अम्भोनिर्मलनिर्झरातिमधुरा प्रोद्यानचेतोहरा
राजस्थानधरा सुरालयवरा राराज्यते स्ववरा॥१॥

वीरो राणाप्रतापो रिपुदलदमने स्मर्यते वीरसैन्यै-
र्भामाशाहो वदान्यो नुदति च धनिकान् दानदानाय यस्याः।
हल्दीघाट्याश्च मृत्स्ना मलयजसदृशा धार्यते देशभक्तैः.
सा राजस्थानभूमिर्जगति विजयते लोकवन्द्या सदैव॥२॥

देवानां मन्दिरेषु प्रभुपदरसिकैर्यत्र गीतं सुगीतं
मीरादादूप्रणीतैर्मधुरतमपदैः सारिता भक्तिधारा।
वन्दन्ते पापनाशं व्रतियतिमुनयः पुष्करं तीर्थराजं
तीर्थस्थानं पवित्रं पुनरपि गलतानामधेयं प्रसिद्धम्॥३॥

राजस्थाने विशाले खगपशुपटलैः शोभमाने सुराज्ये
रम्यो गोडावनाख्यो विहगततिनृपो राजते राज्यपक्षी।
चिङ्कारानामधेयः पशुनिकरवरो भ्राजते भव्यरूपः
शम्याख्यो राज्यवृक्षो बहुविधवरदः पूज्यते सर्वलोकैः॥४॥

निधानं धातूनां मणिचयवितानं द्युतिधरम्
पिधानं दोषाणां गुणिगणविधानं नयभरम्।
प्रधानं राज्यानां प्रथितबहुमानं धरवरम्-
इदं राजस्थानं कविमधुरगानं विजयते॥५॥

उद्योगानां प्रवृद्धिर्भवतु च सततं शान्तिसौहार्दसिद्धि-
रैक्यं भूयान्नराणामपसरतु सदा सर्वधर्मप्रवादः।
राजस्थानस्य वीराः स्वजननवसुधागौरवं वर्धयेयु-
र्हिन्दूतुर्कादिलोकाः सकलहितकरा भ्रातृवत्संवसेयुः॥६॥

वेदव्याकृतिधर्मशास्त्रनिपुणैर्नैयायिकैर्ज्योतिषै-
र्वेदान्तादिसमस्तदर्शनचणैः साहित्यविद्यार्णवैः।
विद्वद्भिः समलङ्कृतेयमपरा काशीतिलब्धाभिधा
राजस्थानविभूषिता जयपुरी विद्वत्स्थली राजते॥७॥

जयपत्तनमेतद्धि राजस्थानस्य गौरवम्।
सर्ववर्णैः सदा सेव्यं राजते पेरिसोपमम्॥८॥

□

मास्तु विस्फोटकाण्डम्

मुम्बय्यां रेलगन्त्रीस्थगनपरिसरे पूतकाशीप्रदेशे
जम्मूलद्दाखघाटीत्रितयजनपदे रामजन्मालये च।
रक्ते दुर्गे च दिल्यामसमजनपदे भारते वर्धमानं
प्रोग्रैरातङ्ककारैः पुनरपि विहितं मास्तु विस्फोटकाण्डम्॥१॥

क्रूरातङ्कप्रवादं गृहवसुशमनं यन्त्रशालाविनाशि
विद्युत्तन्त्रप्रणाशि प्रचुरभयकरं ध्वस्तकारादिवाहम्।
दूरश्रव्यावनादं खलजनरचितं वह्निचूर्णप्रपिण्डै-
र्निर्दोषप्राणनाशं प्रभुपददयया मास्तु विस्फोटकाण्डम्॥२॥

यस्मिन्नैके मनुष्या भवनविरहिताः प्राणशून्यास्तथाऽन्ये
जाता जाता विताताः प्रियपतिरहिताः शून्यचित्ताश्च कान्ताः।
पुत्रैर्हीना विनाथा अतिशयमरुदन्मातरो मुक्तकण्ठम्
तत्सर्वस्वापहारि प्रभुपददयया मास्तु विस्फोटकाण्डम्॥३॥

यस्मिन् केचिन्मनुष्याः शिशुयुवतियुता घोरचीत्कारभाजः
प्लुष्टाः पञ्चत्वमापन् दहनकणचयैर्व्यङ्गकायास्तथाऽन्ये।
बाला नष्टा वराका गृहछदिपतितस्थूलपाषाणखण्डै-
स्तद् राष्ट्रैक्यापहारि प्रभुपददयया मास्तु विस्फोटकाण्डम्॥४॥

छिन्नाङ्गाः केऽपि दीना गदहरणपदं प्रापिता रक्षिवर्गैः
स्वस्था जातास्तथाऽन्ये रविसुतसदनं प्राप्नुवन् यत्र पौराः।
नाश्यन्ते येन तूर्णं मनुजहितकराः शान्तिभावाः समेषां
तत् सौहार्दापहारि प्रभुपददयया मास्तु विस्फोटकाण्डम्॥५॥

यद् ध्वस्तोद्योगकार्यैर्विषमभयवशैर्निन्दितं पौरवर्गै-
स्त्वाराध्यक्षप्रमृग्यं समसचिवयुतैर्गर्हितं राष्ट्रनाथैः।
न्यायाध्यक्षैर्विचिन्त्यं कविकुलतिलकैर्धिक्कृतं प्राज्ञवर्यै-
स्तत् सौभाग्यप्रणाशि प्रभुपददयया मास्तु विस्फोटकाण्डम्॥६॥

सैन्यान् नेतॄन् न हन्यात् प्रमुखपदजुषो दुष्टवर्गो हि यावत्
तावत् क्षिप्रं समस्तैरुपकरणयुतैः सावधानैर्हि भाव्यम्।
सोद्योगैर्भारतीयैः शमपदगतिकै रक्षियुक्तैर्महद्भिः
शान्त्येदं नाशनीयं सकलहितहरं प्रोच्चविस्फोटकाण्डम्॥७॥

जम्मू क्षेत्रे च दिल्ल्यामसमजनपदे भारते वर्धमानं
पाकिस्तानस्य गुप्तैः सहचरनिकरैः सार्धमेभिर्नृशंसैः।
प्रोच्चातङ्कप्रवादिप्रखरतमदलैरुग्रवादिप्रचण्डैः
कर्तुं खण्डामखण्डां भरतभुवमहो मास्तु विस्फोटकाण्डम्॥८॥

□

बेअन्तोऽप्यन्तयुक्तः

रम्ये पञ्चाम्बुदेशे गुरुवरपदके शिष्य-(सिक्ख) संघाधिवासे
संमान्यो मुख्यमन्त्री मनुजहितपरः शान्तचित्तो यतात्मा।
बेअन्तोऽप्यन्तयुक्तः सपदि समभवद् वह्निचूर्णप्रपिण्ड-
विस्फोटध्वस्तपुंसा ह्यवनदलयुतस्तत्र चान्ये प्रदग्धाः॥१॥

प्रोच्चातङ्कप्रवादि-प्रखरतमदलैर्बब्बरैः खालसाख्यैः
पाकिस्तानस्य गुप्तैः सहचरनिकरैः सार्धमेभिर्नृशंसैः।
चण्डीदुर्गेऽतिदीप्ते विनयनययुतो मुख्यमन्त्री मनस्वी
मान्यो "बेअन्तसिंहो" यमनगरपदं यापितोऽग्निप्रपिण्डैः॥२॥

कर्तुं खण्डामखण्डां भरतभुवमहो निर्दयैर्दुष्टचित्तैः
खालिस्तानस्य हेतोर्नरपशुबधवासिंहतुल्यैः कुशिष्यैः।
सम्भूयातङ्किसंघे प्रमुखपदगते प्रोग्रवादप्रचण्डे
मान्यो बेअन्तसिंहो दहनकणचयैरन्तयुक्तो हि चक्रे॥३॥

येनातङ्कस्य नाशः प्रखरमतिमता शान्तिदूतेन चक्रे
सोऽयं बेअन्तसिंहः सकलदलहितस्तस्य निघ्नो हि जातः।
जाल्मानां कृत्यमेतत् सचिववरयुतैर्मन्त्रिभी राष्ट्रनाथैः
प्रोक्तं कातर्यपूर्णं कविकुलतिलकैर्निन्द्यते निन्द्यमेतत्॥४॥

सर्वकारेण दुष्टास्ते मारणीया यथार्थतः।
नैव कुर्युस्तथा चान्ये कुत्सितं कार्यमीदृशम्॥५॥

□

टिप्पणी :

पञ्चाम्बुप्रदेशस्य मुख्यमन्त्रि-बेअन्तसिंहनिधनमाश्रित्य ३१.८.९५ दिनाङ्के रचितानि पद्यानि।

महामोष-काण्डम् (घोटालाकाण्डम्)

ये शोभन्ते वसन्ते प्रहसितवदनास्ते हि सन्तः कियन्तः?
आरामा नाभिरामा विरलतरुजुषो नीरसाः स्वल्पसूनाः।
पश्वाहारो विहारे तृणचयसहितश्चर्वितो मन्त्रिगोभि-
स्तत्रत्यो मुख्यमन्त्री विचरति सततं निस्त्रपः पुष्टषण्डः॥१॥

चन्द्रास्वामी प्रकामी बहुविधविषयेऽस्मिन्महामोषकाण्डे
कृष्णस्योत्पत्तिभूमौ बहुदिनमवसत् कोटिमुद्रापहारी।
सार्धं श्रीमातृभ्रात्रा सह नरहरिणा न्यायमूर्तेः समक्षं
वारम्वारं विमुक्तः पुनरपि सततं गृह्यते रक्षिवर्गैः॥२॥

शीलाकौला गृहीता हृतधनसहिता राष्ट्रियावासकाण्डे
श्रीशर्मा शर्मरामो बहुभवनपतिर्दूरसञ्चारकाण्डे।
कांग्रेसाध्यक्षरावः सकलनरहरिः सांसदोत्कोचकाण्डे-
अन्ये बोफोर्सकाण्डे बहुदलपतयः श्रीहवालाप्रकाण्डे॥३॥

कालिन्द्या देवनद्याः सलिलमभवद् दूषितं यन्त्रनीरै-
र्वाराणस्याश्च दिल्ल्यां बहुवसुनिचयैः शोधितं नापि शुद्धम्।
नग्नो जातो हिमाद्रिस्तरुपदहरणाद् दुर्जनैर्द्रव्यलुब्धै-
र्लुप्तप्राया अभूवन् बहुविधपशवस्तत्र चाष्टापदाद्याः॥४॥

भ्रष्टाचारस्य रोधो जगति भवतान्नो बलात्कारकाण्डं
सर्वेषामेकता स्याद् हितकरवचनैः प्रेमभावोऽस्तु नित्यम्।
उद्योगानां समृद्धिर्भवतु च सततं धान्यवृद्धिः सुवृष्ट्या
तेन स्यादत्र भव्यं सकलसुखकरं श्रीश्वरं शं प्रयाचे॥५॥

□

जगद्गुरवः श्रीनिरञ्जनदेवाचार्याः

पूज्याः प्राचार्यवर्या जयनगरमहासंस्कृतागारदीपाः
पश्चात् पुर्यां स्थिता ये प्रखरमतिजुषः शङ्कराचार्यपीठे।
काशीतः किन्नु याताः? सुरमधुरगिरा भाषितुं देववृन्दै-
र्वन्द्यास्ते देवतीर्था विबुधपदपदं स्वामिवर्याः कृतार्थाः ॥१॥

अधीतसद्व्याकृतिमोदभाजां व्याख्यानदानेऽपि विचक्षाणानाम्।
प्राज्ञेश्वराणां तपसां निधीनां निरञ्जनानाञ्चरणौ स्मरामः ॥२॥

वेदान्त-सिद्धान्त-निरूपकाणां ब्रह्मात्मनां शङ्करसेवकानाम्।
अद्वैतमार्गप्रतिपादकानां निरञ्जनानाञ्चरणौ स्मरामः ॥३॥

निर्भीरुकाणां श्रुतिसारभाजां गोत्राणहेतोर्जन-चेतकानाम्।
हिन्दुत्वरक्षाव्रतधारकाणां निरञ्जनानाञ्चरणौ स्मरामः ॥४॥

श्रीशङ्कराचार्य–जगद्गुरूणां पुरीस्थसिंहासनशोभितानाम्।
दण्डीश्वराणाञ्च यतीश्वराणां निरञ्जनानाञ्चरणौ स्मरामः ॥५॥

भवतां विरहे सभाऽप्यसौ विरसाऽभूद् गुणिविज्ञमण्डली।
वदने स्थिरतां न याति वाक् परिपूर्णे नयनेऽश्रुभिश्च मे ॥६॥

उपचारपदं गतं वचो मधुरोक्तिर्विरहे न रोचते।
विधिना कठिनेन पातितं हृदये दुःखमसह्यवेदनम् ॥७॥

निरञ्जनाय देवाय तीर्थाय च महात्मने।
शङ्कराचार्यवर्याय पद्यमालेयमर्प्यते ॥८॥

□

टिप्पणी :

२०.९.१९९६ दिनाङ्के राजस्थानसंस्कृत-अकादम्या समायोजितायां श्रद्धाञ्जलिसभायां स्वर्गताय श्रीशङ्कराचार्यनिरञ्जनदेवतीर्थाय काव्यमालेयं समर्पिता।

जगद्गुरवः 'श्रीजी' महाराजाः

राधासर्वेश्वराङ्घ्रिप्रचुरतमविभाभासमानाः समानाः
द्वैताद्वैतानुयायिप्रखरमतिमतामग्रगण्याः सुधीन्द्राः।
प्रख्याता गीतकारा नवकवनचणाः कीर्तिमन्तो रसज्ञा
निम्बार्काचार्यवर्या हरिपदरसिका भान्ति भक्तिप्रबोधाः॥१॥

हिन्द्यां गीर्वाणवाण्यां व्रजगिरि रचिता नैककाव्यप्रबन्धा
नैके विद्यालया यैः श्रुतिविबुधगिरां स्थापिता बोधलब्ध्यै।
ग्रन्थानां ज्ञानलब्ध्यै श्रुतविषयजुषां पुस्तकागारमेकं
पुस्तानां मुद्रणार्थं परिकरसहितं स्थापितं यन्त्रमेकम्॥२॥

पत्रं सर्वेश्वराख्यं विविधविषयकं वाचनार्थञ्जनानां
पत्रं निम्बार्कसंज्ञं द्वयमपि क्रमशो मासिकं पाक्षिकञ्च।
वृत्तान्तानामवाप्त्यै मनुजहितकरं वाचनागारमेकं
खातं निम्बार्कतीर्थं नृपशुखगहितं स्वर्णदीतुल्यतोयम्॥३॥

श्रीराधामाधवाख्या घृतदधिपयसां प्राप्तये धेनुशाला
दीनानां रोगशान्त्यै गदहरणपदं श्रीहरिव्याससंज्ञम्।
राधासर्वेश्वराख्यः सुगमवसतये स्थापितश्छात्रवासो
दिव्यं निम्बार्कसंज्ञं शिशुनिकरकृते निर्मितं मन्दिरं यैः॥४॥

तीर्थे कुम्भेऽर्धकुम्भे व्यरचि नगरकं पूज्यनिम्बार्कसंज्ञं
यस्मिन् सर्वा व्यवस्था उपकरणयुताश्चालिता भक्तवृन्दैः।
यात्रा धाम्नां चतुर्णां बहुसुकृतजुषां मोक्षदानां पुरीणां
भक्तैः सार्धं कृता यैः प्रवचनपटवो भान्ति भक्त्युज्ज्वलास्ते॥५॥

श्रीसर्वेश्वरभक्तिशुद्धमनसः सौहार्दसम्पादका
अध्यात्मोद्भवभासुराः कविवराश्चारित्र्यरत्नोज्ज्वलाः।
नानापक्षिदयापराः सहृदया निःस्वार्थसेवाकराः
शान्तिस्नेहपरोपकारनिरता भावाञ्चिता भान्ति ते॥६॥

श्रीसर्वेश्वरपादपद्ममधुपा राधासमाराधका
गीताविष्णुसहस्रनामरसिकास्तापत्रयोन्मूलकाः ।
श्रीमद्भागवतस्य पाठनिरता वेदान्तबोधप्रदा
राजन्तां नितरां पवित्रमनसः 'श्रीजी'तिसंज्ञा बुधाः॥७॥

□

टिप्पणी :

नवम्बर २००४ जगद्गुरुनिम्बार्काचार्यजयन्ती– (५१००) महोत्सवे 'श्रीजी'महाराजानामभिनन्दनम्।

राजवैद्याः श्रीकृष्णरामभट्टाः

त्रेताद्वापरविद्यमानभगवद्द्वैतस्वरूपं कला-
वद्वैतं समवाप्य यः समभवच्छ्रीकृष्णरामः स्वयम्।
श्रीमन्माधवभूपपण्डितसभामूर्धन्यरत्नं कविः
सोऽयं पाटलपत्तनं समकरोत् प्रज्ञाप्रभाभास्वरम्॥१॥

नाराचाम्बरनन्दभूपरिमिते सम्वत्सरे वैक्रमे
मासे प्रौष्ठपदेऽसिते वसुतिथौ श्रीकृष्णचन्द्रोऽपरः।
प्रादुर्भूय समस्तरोगहरणश्चक्रे सुधावृष्टिभिः
सोऽयं विप्रपतिः समौषधपतिः प्राणप्रदो राजताम्॥२॥

साहित्यं यैरधीतं कवनविधियुतञ्जीवनाथात्कवीशा-
छन्दःशास्त्रं प्रलब्धं सगणितनियमश्चन्दनाद् विज्ञवर्यात्।
आयुर्विद्या गृहीता निजजनकपदात्कुन्दनाद् वैद्यवर्यात्
राजन्तां राजवैद्याः कविकुलतिलकाः कृष्णरामाः सुभट्टाः॥३॥

श्रीलक्ष्मीरामभट्टो जनकगुरुगुरुर्वैद्यवर्यो मनीषी
श्रीलल्लूरामभट्टः पितृवरजनकः सूतशास्त्रस्य वेत्ता।
श्रीभट्टः कुन्दनाख्यः पितृवरचरणः काव्यविद्वैद्यवर्यो
राजन्तां कीर्तिशेषाः प्रभुपदरसिकाः पूर्वजा यस्य विज्ञाः॥४॥

प्रत्नप्राज्ञानुकूलं शिरसि च विमले रक्तमुष्णीषपट्टं
भव्ये भाले विशाले मलयजतिलकं संस्कृतं कण्ठमध्ये।
रम्यं हारश्च कण्ठे शुचिपदयुगले धौतमङ्गेऽङ्गरक्षं
बिभ्राणा कार्ष्णरामी जगति विजयते प्रौढपाण्डित्यमूर्तिः॥५॥

यैः काव्यं कच्छवंशं कविसमयुतन्निर्मितं वीरवृत्तं
मुक्ताली मुक्तकानां बहुविषययुता गुम्फिता सप्तसर्गैः।
सिद्धे भैषज्यमाल्ये वसुविकृतिपरा सूतसिद्धिर्निबद्धा.
भट्टाः श्रीकृष्णरामा गदहरकुशलाः कस्य नाभ्यर्थनीयाः॥६॥

त्रिवेणीं काव्यानां गुणशतकयुक्तां रचितवान्
तथा काव्यं दिव्यञ्जयपुरविलासं सुरुचिरम्।
स्वयं पाण्डुग्रस्तः पुनरपि पलाण्डुं गुणखनिं,
सिषेवे नो विप्रो गुरुवरनिदेशात्कविवरः॥७॥

ग्रन्थाश्चैकित्सका यैः सुरगुरुसदृशैः पाठिताः प्रौढरीत्या
श्रीलक्ष्मीरामतुल्याः सकलगुणयुता विश्रुता यस्य शिष्याः।
वैद्या रामप्रकाशास्तदनुपदजुषः साम्प्रतं कीर्तिभाजो
वैद्या देवेन्द्रभट्टाः प्रखरमतिजुषः कृष्णरामप्रपौत्राः॥८॥

राजस्थाने सुराज्ये जयपुरनगरे चन्द्रपोलाख्यहट्टे
कोषाध्यक्षस्य मार्गे विहितवसतिना गौडविप्रान्वयेन।
रम्या श्रीमोहनेन प्रचुररसमयी गुम्फिता पद्यपुष्पै-
र्भट्टानां पादपद्मे नतिततिसहिता कीर्यते काव्यमाला॥९॥

रससिद्धकवीन्द्राय माधुर्यगुणशालिने।
श्रीकृष्णरामभट्टाय श्रद्धाञ्जलिः समर्प्यते॥१०॥

□

टिप्पणी :

राजवैद्यश्रीश्रीकृष्णरामभट्टमहोदयानां सार्धशताब्दीजयन्तीमहोत्सवे पठिता काव्यमाला।

आशुकविश्रीनित्यानन्दशास्त्रिप्रशस्तिः

श्रीरामो विष्णुरूपो दशरथतनयो यज्ञदेवप्रसादा-
नित्यं यो राजनीतिं प्रहरणविषयां प्राप शिक्षां वशिष्ठात्।
त्यागी वीरो यशस्वी नयविनययुतो विश्ववन्द्यो महात्माऽऽ-
नन्दावासः प्रतापी दशमुखकदनः कौशलेयोऽवतान्नः॥१॥

दक्षो मुक्तिप्रदाने सकलगुणनिधिः सर्वसौभाग्यदाता
शास्ता शास्त्रार्थवेत्ता मनुजहितकरः सूर्यवंशावतंसः।
स्त्रीरत्नं यस्य सीता नृपजनकसुता भूमिजाता कुलीना
जन्ये स्थायिस्वभावा कुशलवजननी वह्निपूता सती सा॥२॥

यत्नाद् गूढस्वसत्त्वा दशवदनगृहे पीडिता राक्षसीभि-
तुर्ये रामाभिलीना जयतु जयतु सा रामपत्नी प्रवन्द्या।
तत्त्वज्ञो लक्ष्मणोऽयं भरतरिपुहणौ रामभक्ता जयन्तु
रां बीजं यस्य जप्यं सह कपिनिकरैर्हन्तु हत्नून् हनूमान्॥३॥

श्रीसीतायुक्तमेतद् रघुवरचरितं सिन्धुरत्नप्रदीप्रम्
रामश्चास्त्यत्र नेता नृपजनकसुता नायिका चात्र सीता।
मग्नो मोहे दशास्यः सुरमनुजरिपुर्नायकोऽत्र प्रतीप-
श्चङ्गा रत्नाङ्कसर्गाः प्रतिपदमनुगं मूलरामायणीयम्॥४॥

रिष्यन्ते नात्र शब्दाः प्रकृतिविवरणे छन्दसां सम्प्रयोगै-
तादात्म्यं लब्धुकामा नवपदरचने सन्ति कोषा महान्तोऽ-
ब्धिर्यत्रास्ते विशालः पुनरपि हरिभिस्तत्र सेतुर्निबद्धो
रत्नं शाणाभिलीढं नवरससहितं प्रत्नकाव्यं पुनर्नू- ॥५॥

त्नं काव्यं भातिचित्रं जगति विजयते राममाहात्म्यमेत-
मन्दाक्रान्तादिवृत्तैः फलनमुपसरत् काव्यरीतीश्च पुष्यत् ।
हार्दं यच्छत् प्रकृष्टं गुणरससहितं मञ्जुलङ्कारशोभ-
चित्रं शब्दार्थचित्रं ध्वनिविवृतियुतं काव्यमेतद् विना कोऽ- ॥६॥

त्र त्राणार्थं समर्थो विकटरिपुबले निर्बलं दीनसत्त्व-
काव्यस्यास्योत्तमत्वं हरिगुणकथनात् साधितं विज्ञवर्यैः ।
व्यङ्ग्यार्थैः शोभितं तत् प्रभुपदरसिका भक्तिचित्ताः पठन्तु
प्राज्ञः **श्रीमोहनो**ऽत्र प्रतरलमसृणा रत्नभासो व्यतानीत् ॥७॥

रामो राजाधिराजो जयति रघुवरो नौमि **रामं** परेशम्
सीता **रामेण** सार्धं निवसति सततं स्वस्ति **रामाय** भूयात् ।
रामाद् अन्यो न शक्तस्त्रिभुवनविजये चास्मि **रामस्य** दासो
रामे भक्तिर्भवेन्मे भवजलधिगतं **राम**! मां पाहि नित्यम् ॥८॥

□

पीयूषपाणयः स्वामिलक्ष्मीरामाः

अब्धेर्नीतं निदाघे वितरति मिहिरो वृष्टिकाले यथाम्भो
दीनेभ्यो दत्तवान् यो नृपधनिकधनं रोगनाशोपलब्धम्।
धन्यो मान्यो वदान्यो गदहरकुशलो वैद्यशास्त्रप्रवीणो
लक्ष्मीरामो मनीषी जगति विजयते कृष्णरामस्य शिष्यः॥१॥

ग्रामे मांग्याससंज्ञे जयपुरनिकटे श्रावणे कृष्णपक्षे
षष्ठ्यां तिथ्याश्च शून्यत्रिग्रहविधुमिते वत्सरे वैक्रमीये।
उत्पत्तिर्येन लब्धा विमलमतिमता गौड़विप्रान्वये च
तस्मिन् मासे च पक्षे रसरसवयसि ब्रह्मसायुज्यमापि॥२॥

त्यक्त्वा देशानुरागात् प्रचुरधनयुतं पाठनं येन काश्यां
कालेजे संस्कृते श्रीजयपुरपतिना स्थापिते ज्ञानकेन्द्रे।
ग्रन्थाश्चैकित्सिका वै प्रखरमतिमता पाठिताः प्रौढरीत्या
लक्ष्मीरामः स वैद्यः सुरगुरुसदृशो नम्यते योग्यशिष्यैः॥३॥

अध्यक्षत्वं विधत्ते नयविनययुतो भाजपा-वीरनेता
ऊर्जाभागस्य मन्त्री प्रवचननिपुणः श्रीघनश्यामशर्मा।
डङ्का श्रीसिद्धराजः सकलहितपरः सर्वमाङ्गल्यकर्त्ता
वैशिष्ट्यातिथ्यभोक्ता विलसति नितरां योजिते सुक्षणेऽस्मिन्॥४॥

□

टिप्पणी :

१७.७.१९९८ दिनाङ्के स्वामिलक्ष्मीरामपीठतत्त्वावधाने समायोजिते पीयूषपाणिस्वामिलक्ष्मीराम- निर्वाणदिवसस्य ५९तमे श्रद्धाञ्जलिसमारोहे प्रस्तुतानि पद्यानि।

महामहोपाध्यायाः श्रीगिरिधरशर्मचतुर्वेदाः

धन्यो गोकुलचन्द्रशर्मबिबुधो धन्या च तस्याङ्गना
याभ्यां सूनुरवापि विष्णुरपरो भक्तिप्रभावात् प्रभोः।
चातुर्वेदशिरोमणिर्गिरिधरो विद्याधरः श्रीधरः
शब्दात्मा विनयोन्नतो बुधमणिस्तीर्थातितृप्तो महान्॥१॥

कॉलेजे संस्कृते यैर्जयपुरि पठितं पाठितं शब्दशास्त्रं
स्वीये सम्पादकत्वे सुरमधुरगिरापूरि रत्नाकरश्रीः।
आम्नायाभिज्ञमुख्यान् स्मृतिनिवहविदो दक्षिणामूर्तिभक्तान्
पूज्यान् प्राचार्यवर्यान् गिरिधरधिषणान् तान् नमामः कवीन्द्रान्॥२॥

प्रत्नप्राज्ञानुकूलं शिरसि च विमलं पीतमुष्णीषपट्टं
भव्ये भाले विशाले मलयजतिलकं संस्कृतं कण्ठमध्ये।
स्कन्धे दिव्यं दुकूलं चरणकमलयोर्धौतमङ्गेऽङ्गरक्षं
विभ्राणः सौम्यरूपो जयति गिरिधरः सत्कृतो राष्ट्रनाथैः॥३॥

मन्त्रित्वेऽखिलभारतीय - सुरवाक्साहित्यसम्मेलनं
संस्थाप्याखिलदेशकेन्द्रविदुषां दूरीकृता दुर्दशा।
व्याख्या - भाष्य - निबन्धलेखनपटुर्दक्षस्तथा भाषणे
नानाग्रन्थपुराणविद् गिरिधरः साहित्यवाचस्पतिः॥४॥

वाराणस्यां प्रसिद्धैर्बुधवरनिकरैरर्चितान् देववाण्या
गम्भीरार्थप्रयोक्तॄन् प्रखरमतिमतो न्यायशास्त्रप्रवीणान्
वेदान्तागारदीपान् कविकुलतिलकान् ब्रह्मरूपान् रसज्ञान्
स्वर्गस्थान् भूमिदेवान् गिरिधरधिषणान् सर्वशिष्या नमामः॥५॥

मधुसूदनपादाब्ज-चञ्चरीकाय धीमते।
गिरिधराय शान्ताय काव्यमालेयमर्प्यते॥६॥

□

टिप्पणी : ११.१.१९९५ दिनाङ्के राजस्थानसंस्कृत-अकादमी–जयपुरस्य श्रीगिरिधर-चतुर्वेदशोधसंस्थानसंयुक्ततत्त्वावधाने समायोजितश्रद्धाञ्जलिसमारोहे जयपुरस्थमहाराजसंस्कृतकालेजे पठिता काव्यमालेयम्।

कविवरमथुरानाथभट्टाः

दोषज्ञा अप्यदोषा गुणगणनिधयो लक्षणज्ञा विलक्षा
वैदर्भीरीतिसिद्धा रसितनवरसा वृत्तिमन्तः सुवृत्ताः।
नानालङ्कारनादैर्मुखरितककुभो दिव्यकाव्यस्वरूपाः
स्मर्यन्ते देववन्द्याः कविवरमथुरानाथभट्टा बुधेन्द्राः॥१॥

श्रीवाग्देवीप्रसादाद् विमलमतिजुषः काव्यलास्ये नटेशाः
साहित्याम्भोधिरत्नप्रचुरतमविभाभासमानाः समानाः।
सिञ्चन्तो मानसं ते रसमयवचनैर्वासनातत्त्वभाजां
स्मर्यन्ते विज्ञवर्य्याः कविवरमथुरानाथभट्टाः सुधीन्द्राः॥२॥

प्रत्नप्राज्ञानुकूलं स्वशिरसि विमलं रक्तमुष्णीषपट्टं
भव्ये भाले विशाले मलयजतिलकं संस्कृतं कण्ठमध्ये।
स्कन्धे दिव्यं दुकूलं चरणकमलयोर्धौतमङ्गेऽङ्गरक्षं
बिभ्राणाः सौम्यरूपाः स्मृतिविषयगता मञ्जुनाथाः कवीन्द्राः॥३॥

पेया कादम्बरी यैश्चषकपरिमिता तृप्तये पण्डितानां
कव्वाली देववाण्यां रुचिकरगजला निर्मिता यैर्मनोज्ञाः।
हृद्ये गद्ये च पद्ये सुरगिरि रचिता नैककाव्यप्रबन्धाः
स्वर्गस्था दिव्यरूपाः कविवरमथुरानाथभट्टा विभान्ति॥४॥

कॉलेजे संस्कृते यैर्गुरुसमधिषणैः पाठितं छात्रवृन्दं
सम्माना यैरवाप्ताः प्रचुरवसुजुषो राजकीयास्तथाऽन्ये।
मान्याः सम्पादकास्ते कविकुलतिलकाः पत्रकाराः प्रसिद्धाः
स्वर्गस्था देववन्द्या हरिपदरसिका मञ्जुनाथा विभान्ति॥५॥

□

वेदान्तविदः श्रीपुरुषोत्तमचतुर्वेदाः

साहित्योदधिरत्नभास्वरविभाप्रद्योतमानप्रमाः
काव्यालङ्कृतिभूषिता गुणरसैर्ब्रह्मत्वमासादिताः।
चातुर्वेदकुलोद्भवाः कविवराः कृष्णप्रिया माथुराः
स्मर्यन्ते पुरुषोत्तमा बुधवरा वेदान्तविद्यार्णवाः॥१॥

धन्यास्तज्जनकाश्च मिश्रमथुरालालाश्चतुर्वेदकाः
श्रीमद्भागवतप्रवाचकचणा दक्षास्तथा ज्योतिषे।
न्याये व्याकरणे पुराणपठने ख्याताः श्रुतौ धार्मिकास्
तेषाङ्गेहमभूद् यदीयजनुषा जाज्वल्यमानं महत्॥२॥

बाणेषुनन्दवसुधामितवैक्रमाब्दे
भाद्रेऽसिते शुभदले सबुधे नवम्याम्।
टोडाभिधे सुनगरे नृपरायसिंहे
प्रापज्जनिं स पुरुषोत्तम एव साक्षात्॥३॥

जाते यज्ञोपवीते प्रखरमतिजुषः शैशवे स्वीयगेहे
साहित्यं व्याकृतिं ये भनिकरविषयं तातपादात्पठित्वा।
ग्रामे पार्श्वस्थदेशे नरपतितनयान् विप्रपुत्राँश्च दीनान्
हिन्दीभाषां सुरम्यां सुरमधुरगिरं पाठयामासुरेते॥४॥

नाथद्वारं सवित्र्या सह कविरगमच्छ्रीपतेर्दर्शनार्थं
स्तोत्रं स्वेन प्रणीतं हरिनुतिपरकं श्रावयामास तत्र।
श्रुत्वा प्रोचुर्बुधास्तत् किमिति कृतिरियं वर्तते ते? ममैव-
इत्युक्ते तैः प्रदत्ता झटिति मतिमता पूरिता सा समस्या॥५॥

अध्येतुं यदि वाञ्छसीह नितरां विद्यालये संस्कृतम्?
छात्रावासमवाप्य शास्त्रपठनञ्चाङ्कीकुरु त्वं मुदा।

अध्यक्षैरिति भाषितोऽपि सहसा मात्रा निषिद्धस्तदा,
स्वल्पत्वाद् वयसो हि दूरवसनात् प्रत्यागमद् यो गृहम् ।।६।।

पश्चाद् ब्यावरसंज्ञकं सुनगरं पित्रा समं प्राप्तवान्,
कार्यं ज्यौतिषिकं मुदा च कृतवान् दैवज्ञसाहाय्यतः।
श्रीमद्भागवतस्य पाठकरणात् प्रापद् धनं राठिनो,
नाथद्वारमगाद् विहाय जनकानध्येतुकामः पुनः ।।७।।

काव्यं नन्दकिशोरशर्मविबुधाद् [1]गट्टूपदाद् दर्शनम्,
न्यायं [2]झासविधातप्रमाणविषयं [3]बालात्तथा व्याकृतिम्।
सद्ग्रन्थानपरानधीत्य विविधानाचार्यतीर्थङ्गत-[4],
छात्रान् पाठयितुं न्ययोजि गुरुभिः प्राध्यापकत्वेन सः ।।८।।

चित्तौडे पीपलीतिप्रमुखविषयभूस्वामिपुत्रीमुवाह,
वृद्धिं याते व्ययेऽतःप्रवरगुरुपदादिष्ट एषोऽतिशीघ्रम्।
मुम्बापुर्याञ्च गत्वा हरिपदरसिकश्रेष्ठिवर्यस्य गेहे
सश्रद्धं वाचयित्वा हरिविषयकथां वित्तवस्त्रादि लेभे ।।९।।

यात्राङ्कृत्वा प्रमुखगुरुभिर्दक्षिणे भारते सः,
ख्यातिं लेभे सदसि विदुषां संस्कृते भाषणैश्च।
नाथद्वारं प्रति पुनरयञ्चागतः शत्रुभूतान्
ज्ञात्वा विज्ञान् सपदि च ततः स्वीयगेहं प्रतस्थे ।।१०।।

---

१. गट्टूलालः (भारतमार्तण्डः), २. सदानन्दझा, ३. बालशास्त्री वैयाकरणः, ४. साहित्याचार्यः, व्याकरणमध्यमा।

□

टिप्पणी :

७,८ सितम्बर १९९८ दिनाङ्के राजस्थानसंस्कृत-अकादमीद्वारा समायोजिते पण्डितप्रवराणां पुरुषोत्तमचतुर्वेदमहाभागानां शताब्दीयजयन्तीसमारोहे समर्पिता पद्यमालेयम्।

साहित्यमर्मज्ञाः श्रीनन्दकिशोरनामावलाः

साहित्यार्णवमन्थनैकनिपुणाः प्रज्ञाप्रभाभास्वरा
नानाशास्त्रविचारचारुचरिता औदार्यभावाञ्चिताः।
मान्या नन्दकिशोरशर्मसुधियो दाधीचवंशोद्भवा
स्मर्यन्ते जयपत्तने कविवरा नामावला विश्रुताः॥१॥

पृथ्वीशास्त्रग्रहेन्दुभिः परिमिते सम्वत्सरे वैक्रमे
घासीलालगृहं स्वजन्ममहसा प्रोद्भासितं यैर्मुदा।
सम्पन्ने व्रतबन्धने च विधिनाऽधीता श्रुतिर्याजुषी
वन्द्या नन्दकिशोरशर्मसुधियः स्मर्यन्त एते बुधैः॥२॥

मार्गे वैकटिकापणैः सुरुचिरे चाम्पावते मन्दिरे
श्रीमद्भागवतस्य पाठकरणे लग्नैरमीभिः सदा।
कॉलेजे जयपत्तने सुरगिरो लब्ध्वा प्रवेशं मुदा
साहित्यञ्च विहारिलालगुरुतः प्राप्तं सतत्त्वं ततः॥३॥

साहित्याचार्यवर्या नवकवनचणाः काव्यशास्त्रप्रवीणा
वाराणस्यामगच्छन् प्रखरमतिजुषः शोधबोधोपलब्ध्यै।
गोपीनाथस्य पार्श्वे विहितवसतयस्तस्य निर्देशने ये
सूचीपत्रं विशालं रुचिरमरचयन् पुस्तकानां क्रमेण॥४॥

कृत्वा ज्ञानं लिपीनामथ च नवशिलालेख-बोधं प्रलभ्य
तथ्यं नव्यं विचित्रं सकलबुधजनान् बोधयामासुरेते।
मुद्राशास्त्रप्रकारं समुचितविधिना प्राप्य सम्मानमापुः
काश्याश्चक्रुर्निवासं सरसमृदुहृदः पञ्चवर्षाणि यावत्॥५॥

ग्रन्थाः सम्पादिता यैः सुरगिरि लिखिता नैक्लेखाश्च हिन्द्याम्
मान्यैर्गीर्वाणवाण्यां रुचिरपरिचयो निर्मितो भारवेर्यैः।
चन्द्रालोकस्य टीका ह्यमृतकणमयी निर्मिता पौर्णमासी
टिप्पण्या भावबोधा नृपनलविषया दिव्यचम्पूः कृता यैः॥६॥

व्याख्यातृत्वे च काश्यां सुरमधुरगिरो विश्वविद्यालये ये
सच्छात्रान् पाठयित्वा प्रचुरवसुजुषं शोधसम्मानमाप।
प्रायश्चित्तस्य सारं दलपतिरचितं रम्यमानन्दकन्दं,
शुद्धं ये टङ्कयित्वा निजनगरमथो भूय आजग्मुरेते॥७॥

कॉलेजे संस्कृते यैर्जयपुरनगरे प्रोच्चशिक्षाप्रकेन्द्रे,
जाते सेवानिवृत्ते कविवरमथुरानाथभट्टे च तत्र।
प्राप्य प्राध्यापकत्वं रसमयवचनैः पाठिता योग्यशिष्याः,
धन्या नामावलास्ते सपदि सुरगणान् स्वर्गताः पाठनार्थम्॥८॥

रसध्वनिविलासाय, नन्दकिशोरशर्मणे
पाण्डेयमोहनेनायं, श्रद्धाञ्जलिः समर्प्यते॥९॥

□

टिप्पणी :

३ दिसम्बर २००५ दिनाङ्के जयपुरस्थसांस्कृतिकज्ञाननिर्झरसंस्थानद्वारा समायोजिते राजगुरुकथाभट्ट पं. नन्दकिशोरनामावलानां प्रथमजन्मशताब्दीसमारोहे पठितानि पद्यानि।

पद्मश्री-पट्टाभिरामशास्त्रिणः

मीमांसाचार्यवर्यान् स्वरविधिनिपुणान् वेदमन्त्रार्थविज्ञान्
प्राचार्यान् श्रौतदक्षान् जयनगरमहासंस्कृतागारदीपान्।
स्वर्गस्थान् भूमिदेवान् विबुधवरनुतान् सर्वशास्त्रार्थबोधान्
पूज्यान् पट्टाभिरामान् वयमपि विनुमः सादरं सर्वसभ्याः॥१॥

वाराणस्यां प्रसिद्धैर्बुधवरनिवहैरर्चितान् देववाण्या
इन्द्रप्रस्थे प्रकेन्द्रे सुरमधुरगिरः सत्कृतान् राष्ट्रनाथैः।
विद्वद्भिः पूजिताँस्तान् नयविनयजुषः कालिकायाः प्रदेशे
पूज्यान् पट्टाभिरामान् वयमपि विनुमः सादरं मुख्यशिष्याः॥२॥

आद्यालङ्कारसक्तान् मधुरपदवचोयोगयोग्योपदेष्टून्
गम्भीरार्थप्रयोक्तॄन् कविकुलतिलकान् ब्रह्मरूपान् रसज्ञान्।
शिक्षाकल्पादिशास्त्रप्रखरमतिमतो न्यायशास्त्रप्रवीणान्
पूज्यान् पट्टाभिरामान् वयमपि विनुमः सादरं सर्वशिष्याः॥३॥

लेखनं काष्ठपट्टे हि स्कन्धे पट्टश्च शोभनम्।
पद्मपट्टं तथा प्राप्तं पट्टः पट्टेन शोभते॥४॥

रसध्वनिविलासाय माधुर्यगुणशालिने।
अर्प्यते पद्यमालेयं पट्टाभिरामशास्त्रिणे॥५॥

□

विजयतां श्रीहरिः

आद्यालङ्कारसक्तो मधुरपदवचोयोगयोग्योपदेष्टा
गूढागूढार्थवेत्ता नवरसरुचिरो ब्रह्मरूपो रसज्ञः।
नानाकाव्यप्रणेता कविकुलतिलको व्यङ्ग्यभावाभिरामो
दाधीचो वत्सगोत्रो जगति विजयतां श्रीहरिस्तन्त्रशास्त्री॥१॥
भाषागौरववर्धनार्थमपरः शब्दस्वरूपो हरि-
र्दाधीचान्वयहीरकाद् बुधवराद् दामोदराच्छ्रीहरिः।
व्योमेषुग्रहकाश्यपीपरिमिते संवत्सरे वैक्रमे,
वैशाखेऽसितपक्षके शुभजनिं प्रापच्चतुर्थ्यां तिथौ॥२॥
मांगीलालादवाप्ता वसुविकृतियुता संहिता याजुषानां
साहित्यं येन लब्धं कविसमययुतं श्रीविहारिप्रसादात्।
शाक्ती दुर्गाप्रसादाच्छिवपदसहिता येन लब्धा च दीक्षा,
वंशे नामावलाख्ये जगति विजयतां श्रीहरिर्वेदविज्ञः॥३॥
कॉलेजे संस्कृतस्य प्रखरमतिजुषा पाठिता येन छात्राः,
प्रोच्चस्थानाधिरूढाः सुरमधुरगिरः सेवमाना विभान्ति।
लब्धं साहित्यगोष्ठ्यां ललितकवितया गौरवं विज्ञवर्गा-
आयुर्वेदस्य वेत्ता जगति विजयतां श्रीहरिः काव्यविज्ञः॥४॥
जाताः श्रीमधुसूदनप्रभृतयो वेदान्तविज्ञा बुधाः
सूक्तं यस्य विलोक्य वेदविषयं त्वाश्चर्यमग्नाश्च ये।
ते सर्वे कविभूषणं पदमदुर्यस्मै सभायां विदां
तस्मै श्रीहरिशास्त्रिशीघ्रकवये काव्याञ्जलिर्दीयते॥५॥

□

टिप्पणी :

१८.४.१९९५ दिनाङ्के आशुकविश्रीहरिशास्त्रिजन्मशताब्दीसमारोहे जयपुरस्थ-महाराजसंस्कृतकालेजे श्रीमते धीमते पं. हरिशास्त्रिकवये प्रदत्तः काव्याञ्जलिः।

साहित्यविद्यार्णवाः श्रीजगदीशशर्माणः

वेदस्यार्थविदः षडङ्गसहितुः सद्व्याकृतिं सञ्जुषः
शिक्षासारबुधो निरुक्तवचसो ज्योतिर्महाज्योतिषः।
छन्दोभिर्नवकल्पकल्पनरुचो वेदान्तसारस्पृहो
वन्दे श्रीजगदीशशर्मविबुधान् साहित्यविद्यागुरून्॥१॥

यैः प्राप्तं पाणिनीयं शिव इति पदतो दत्तशब्दोत्तरस्थात्,
श्रीमद्वीरेश्वराद् यैरधिगतमखिलं शब्दशास्त्रीयभाष्यम्।
श्रौतीशिक्षा सुलब्धा सुकृतमवगतन्दर्शनं यैश्च बुद्धम्
लक्ष्मीनाथादवाप्ता पदविकृतियुतिस्तद्-गुरून् ताँश्च नौमि॥२॥

साहित्यं यैरधीतं स्वजनकचरणाच्छ्रीविहारीतिनाम्नो
वेदान्तो यैरवाप्तो भनिकरगणनाचातुरी यैश्च लब्धा।
प्राप्ता चारित्र्यशिक्षा प्रथमजनिजुषः सोदराद् वासुदेवात्
प्रौढं पाण्डित्यमाप्तं जनकगुरुवरात्, तद्-गुरून् ताँश्च नौमि॥३॥

ताते जाते प्ररुग्णे स्वपठनसमये प्रातिनिध्येन तस्य
शास्त्रिश्रेणिस्थछात्राः प्रखरमतिमता पाठिता येन तद्वत्।
स्वर्गं याते च तस्मिन् पुनरपि गुरुणा प्रौढपाण्डित्यभाजा-
आचार्यस्थाः प्रशिष्या निजसुतसदृशाः पाठिता नम्यते सः॥४॥

प्रत्नप्राज्ञानुकूलं शिरसि च विमले पीतमुष्णीषपट्टं
भव्ये भाले विशाले मलयजतिलकं संस्कृतं कण्ठमध्ये।
स्कन्धे रम्यं दुकूलन्निजपदयुगले धौतमङ्गेऽङ्गरक्षं
विभ्राणा जागदीशी जगति विजयते प्रौढपाण्डित्यमूर्तिः॥५॥

कॉलेजे संस्कृते श्रीजयपुरपतिना स्थापिते पाठनार्थं
कक्षामाश्रित्य स्वाशीर्विनयनतिजुषे शिष्यवर्गाय प्रत्ता।
ग्रन्थाः साहित्यिका यैः सुरगुरुसदृशैः पाठिताः प्रौढरीत्या
पादास्ते जागदीशाः प्रखरमतिजुषः कस्य नाभ्यर्थनीयाः ॥६॥

सम्यक् शिक्षाप्रदानाज्जयपुर-नगरे सत्कृता राज्यपालै-
र्ये शिक्षामन्त्रिभिश्च प्रखरगुणयुताः शंसिता मानपूर्वम्।
राष्ट्राध्यक्षैश्च केन्द्रे सुरमधुरगिरामाधिपत्यात्प्रकृष्टात्
पादाँस्तान् जागदीशान् सकलबुधनुतान् नौमि बोधोपलब्ध्यै ॥७॥

वाग्देवीवरदानलब्धयशसः साहित्यविद्यार्णवाः
पीयूषाञ्चितमानसाः सुसरलाः शास्त्रीयबोधोज्ज्वलाः।
दाधीचान्वयहीरका द्युतिजुषः शिष्यौघसद्वत्सलाः
पूज्याः श्रीजगदीशशर्मगुरवः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥८॥

रसध्वनिविलासाय श्रीजगदीशशर्मणे।
गुरवे मोहनेनायङ्कीर्यते सुमनोऽञ्जलिः ॥९॥

□

विद्वच्चतुष्टयी-नुतिततिः

श्रीरामाङ्घ्रिसरोजपूतसरयूपारीणविप्रान्वये
राधाकृष्णबुधात् सनाहवसथे प्राप्ता जनिर्यैर्मुदा।
वेदव्याकृतिधर्मशास्त्रविषयास्तातादवाप्ता बुधाद्
दुर्गानन्दबुधाच्च मन्त्रविषया दीक्षा प्रलब्धा पुनः॥1॥

ग्रामात् पश्चिमभागसंस्थिततटे ग्रामे 'थरेरौ' स्थितै-
र्दुर्गाभक्तशिरोमणिः कविवर आत्तोऽत्र पुत्रः सुधीः।
मान्या आगमशास्त्रनिर्मितिचणास्तन्त्रप्रभाभास्वरा
नूयन्ते **सरयूप्रसाद**विबुधा राज्ञा प्रपूज्याः सदा॥2॥

शम्भोः पार्थिवदिव्यपूजनवशात् प्राप्तं कवित्वं मुदा
काव्यज्योतिषधर्मशास्त्रविषया ग्रन्थाः प्रणीताः सदा।
मुम्बय्यां ग्रहणादिनिर्णयविधौ जाते विवादे स्वयं
साङ्गल्यां निजनिर्णये प्रपठितं पञ्चाङ्गतत्त्वं मुदा॥3॥

दुर्गासप्तशतीरहस्यकमिदं व्यालेखि भक्त्यास्पदं
वेदव्याकृतिकाव्यशास्त्रनिपुणाः कार्तान्तिका विश्रुताः।
कॉलेजे जयपत्तने सुरगिरः प्राचार्यवर्या बुधा
नूयन्ते सरयूप्रसादतनया **दुर्गाप्रसाद**ाभिधाः॥4॥

वेदज्योतिषधर्मशास्त्रविषया ग्रन्थाश्च सम्पादिताः
काव्ये प्रागितिवृत्तवर्णितकथामाश्रित्य यैर्निर्मिते।
शास्त्रं शाकुनिकञ्च वायसरुतं पूर्ताः समस्याश्च यै-
र्हिन्द्यां संस्कृतवाचि यैर्विरचिताष्टीकाः स्मृतीनां मुदा॥5॥

ते वंशागततारकागतियुतान् ग्रन्थान् पठित्वा सदा
कॉलेजे जयपत्तने सुरगिरः प्राध्यापका विश्रुताः।
दुर्गोपासनतत्पराः कविवरा मौहूर्तिकाः पण्डिता
नूयन्ते **गिरिजाप्रसाद**विबुधा दुर्गाप्रसादात्मजाः॥6॥

कॉलेजे संस्कृते यैर्जयपुरि पठितं पाठितं काव्यशास्त्रं
नानागद्यप्रबन्धाः सुरगिरिलिखिता व्यङ्ग्ययुक्ताः सुरम्याः।
रम्यं सम्पादकत्वं विहितमविरतं पत्रिकाणां मुदा यै-
र्ग्रन्थाः पद्येऽप्यनेके रसमयवचसो निर्मिताः प्राज्ञवर्यैः॥7॥

हृद्ये गद्ये सभायां सुरमधुरगिरा भाषमाणा अजस्त्र-
माद्यालङ्कारसक्ताः कवनविधिविदस्तन्त्रमन्त्रप्रवीणाः।
साहित्याचार्यवर्याः सकलबुधनुताः सत्कृता राष्ट्रनाथैः-
र्नोनूयन्ते **द्विवेदाः** कविकुलतिलका विज्ञ**गङ्गाधरास्ते**॥8॥

□

कविवराः श्रीनवलकिशोरकाङ्कराः

साहित्याम्भोधिरत्नप्रचुरतमविभाभासमानाः समाना
नानालङ्कारभासो ललितपदवचोमाधुरीमोहयन्तः
गम्भीरार्थप्रयोगा नवरसरुचयो भावगाम्भीर्यभाजो
राराज्यन्ते रसज्ञाः कविकुलतिलकाः काङ्कराः कीर्तिमन्तः॥१॥

आम्नायाभिज्ञवर्य्या मनुविकृतिपरा मन्त्रतत्त्वार्थबोधा
ब्रह्मज्ञा ब्रह्मरूपाः पदविषयजुषः शब्दशास्त्रावतंसाः।
वेदान्तागारदीपा बुधनिकरनुता ज्ञानदानप्रदक्षा
देदीप्यन्ते रसज्ञाः कविकुलतिलकाः काङ्कराः कीर्तिमन्तः॥२॥

प्राप्तो यात्राविलासात् कविनिकषपदं गद्यसम्राडुपाधि-
र्विद्यावाचस्पतिर्यैर्गुरुसमधिषणैः शीर्षरत्नं कवीनाम्।
सम्मानं नैकवारं कविनिवहमहे भूषणं सत्कवीनां
देदीप्यन्ते रसज्ञाः कविकुलतिलकाः काङ्कराः कीर्तिमन्तः॥३॥

नैके गद्यप्रबन्धा मधुरगुणयुता व्यङ्ग्ययुक्ताः सुरम्या
ग्रन्थाः पद्येऽप्यनेके रसमयवचसो निर्मिताः प्राज्ञवर्यैः।
नैका लब्धाश्च मुद्रा 'नवलसतसई'-काव्यनिर्माणदक्षै-
र्द्योतन्ते ते रसज्ञाः कविकुलतिलकाः काङ्कराः शाङ्करास्ते॥४॥

राजस्थाने सुराज्ये जयपुरनगरे रामगञ्जस्य पार्श्वे
मार्गे कर्णे सुमेरोर्विहितवसतयो गौडविप्राः सुधन्याः।
गैर्वाणीगीर्गरिष्ठा गगनगतगुणाः सत्कृता राष्ट्रनाथै-
र्भ्राजन्ते भारते ते बुधवरनवलाः काङ्कराः कीर्तिमन्तः॥५॥

राष्ट्रियवेदनिर्मात्रे लब्धसत्कारशोभिने।
मुनीन्द्राय वरेण्याय राष्ट्ररत्नाय भास्वते ॥६॥

मधुसूदनपादाब्जचञ्चरीकाय धीमते।
बिहारीलाल-शिष्याय कवित्वे हरिशास्त्रिणः ॥७॥

रसध्वनिविलासाय माधुर्यगुणशालिने।
काङ्कराय कवीन्द्राय कीर्यते कविताञ्जलिः ॥८॥

राजस्थाने सुराज्ये जयपुरनगरे चन्द्रपोलाख्यहट्टे
कोषाध्यक्षस्य मार्गे विहितवसतिना गौडविप्रान्वयेन।
रम्या 'श्रीमोहनेन' प्रचुररसमयी गुम्फिता शब्दपुष्पैः
पादाब्जे काङ्कराणां नतिततिसहिता कीर्यते काव्यमाला ॥९॥

□

टिप्पणी :

५.८.१९९४ - दिनाङ्के जयपुरस्थराजस्थानसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनद्वारा सम्मानोजिते श्रीकाङ्कराभिनन्दनग्रन्थलोकार्पणसमारोहे कविकुलतिलकानां श्रीकाङ्कराणां चरणारविन्दयुगले प्रस्तुतः कविताञ्जलिः।

ज्योतिर्विदः कल्याणदत्तशर्माणः

मान्यश्रीगिरिजाप्रसादविबुधात् तारागतिं प्राप्तवान्
श्रीविन्ध्याचलपादपद्मदयया पञ्चाङ्गशास्त्रञ्च यः।
यन्त्रज्ञानमथो सुवेधसहितं केदारनाथाद् बुधाज्
ज्योतिःशास्त्रविशारदो विजयते कल्याणदत्तः सुधीः॥१॥
कॉलेजे संस्कृते ये गणितविधिविदः पाठनार्थन्नियुक्ता
ज्योतिःशास्त्रं प्रशिष्यान् गणितफलयुतं यन्त्रवेधानुसारम्।
होराज्ञानं समस्तं, गुरुसमधिषणाः पाठयामासुरेते
राजन्ते विज्ञवर्याः सकलबुधनुताः पूज्यकल्याणदत्ताः॥२॥
वाराणस्याञ्च दिल्ल्याञ्जयपुरनगरे ज्योतिषं बोधयन्तस्
तत्रत्या वेधशालाः समुचितविधिना शोधयन्तः पुनश्च।
यन्त्राणां कार्यबोधं परिचयसहितं सुष्ठु मुद्रापयन्तो
राजन्ते दैवविज्ञाः परहितनिरताः पूज्यकल्याणदत्ताः॥३॥
आध्यक्ष्यं येन लब्धञ्जयपुरनगरे ख्यातयन्त्रालयस्य
यन्त्राणां सूक्ष्मबोधो ग्रहगतिविषयो येन दत्तो बुधेभ्यः।
विद्यापीठे च दिल्ल्या भनिकरगतिविन्निर्मिता वेधशाला
घाटीमध्ये तथैव प्रचुरनिजधनैर्गालवर्षैः सुधाम्नः॥४॥
मान्याः संस्कृतसङ्गमेन विदुषां मानेन सम्मानिताः
प्रापन् शास्त्रशिरोमणीतिपदवीं धर्मार्थसंस्थानतः।
हारीतर्षिपुरस्कृतिन्धनयुताम्मेवाडदेशाच्च ये
राजन्ते जगतीह राष्ट्रपतिना सम्मानितास्ते बुधाः॥५॥

□

टिप्पणी :

६ अगस्त १९९९ दिनाङ्के राष्ट्रपतिसम्मानप्राप्तिमालक्ष्य जयपुरस्थमोहनबाडीस्थाने समायोजिते विद्वत्सम्मानसमारोहे श्राविताः श्लोकाः।

पद्मश्री-मण्डन-मण्डनम्

मीमांसावार्धिरत्नप्रचुरतमविभाभासमानाः समाना
आम्नायाभिज्ञवर्या विधिविषयविदो ब्रह्मतत्त्वाभिलीनाः।
आचार्याः शास्त्रदक्षाः प्रवचनपटवः सत्कृता राष्ट्रनाथै
राजन्ते कीर्तिशेषाः सरलमृदुहृदो मण्डना मिश्रवर्याः॥१॥

ग्रामे हाणूतियाख्ये स्वजननविभया भासितं तातगेहं
कन्हैयालालतातात्प्रथममधिगता वर्णविज्ञानशिक्षा।
शिक्षा प्रारम्भिकी यैरमरसरपुरे विज्ञवर्यैरवाप्ता
जाते यज्ञोपवीते स्वरविधिसहिता वेदमन्त्रा अधीताः॥२॥

पूज्यात् पट्टाभिरामान्मनुविधिसहितं शिक्षितं वेदभाष्यं
मान्याद् रामेश्वराद् यैः पदप्रकृतियुतं शब्दशास्त्रं प्रलब्धम्।
पादाब्जाज्जागदीशात् कवनविधियुतं शिक्षितं काव्यशास्त्रं
लब्धा पी.एच.डी.तिप्रमुखपदगता विश्वविद्यालयाद् यैः॥३॥

कॉलेजे संस्कृते ये जयपुरलसिते प्राप्य ये शिक्षकत्वं
व्याख्यातारश्च हिन्द्याः सपदि समभवन् शिष्यवृन्दप्रवन्द्याः।
जाताः प्रोफेसरा ये गुरुपदकृपयाऽपाठयन् राष्ट्रभाषाम्-
आयातान् सिन्धदेशादशरणमनुजान् रात्रिविद्यालयेषु॥४॥

सामाजिक्यश्च सेवा व्यधिषत सततं स्थापिता नैकसंस्था-
तासां संयोजकत्वं विहितमविरतं संस्कृतागारकेन्द्रम्।
दिल्ल्यां निर्मापितं यैः प्रमुखपदजुषां प्राप्य सम्पर्कमेभिः
स्वीयाध्यक्ष्ये च काश्यां श्रुतिमनुविषयं स्थापितं शोधकेन्द्रम्॥५॥

सम्माना यैरवाप्ताः प्रचुरवसुजुषो राष्ट्रिया राजकीया
ग्रन्थाः सम्पादिता यैः सुरमधुरगिरो वेदभाषाप्रबन्धाः।
न्यूयार्के थाइलैण्डे प्रवचनपटुभिः स्थापिता संस्कृतिर्नैः
राजन्ते मण्डनास्ते सकलसुरगणान् स्वर्गताः पाठनार्थम्॥६॥

विद्यापीठानि दिव्यान्यमरमधुगिरोऽस्थापयन् नैकदेशे
नानासम्मेलनेषु प्रमुखपदजुषः संस्कृतोत्थानपृक्ताः।
पद्मश्रीभूषिता ये सकलहितकरा मिश्रवंशावतंसा
द्योतन्ते मण्डनास्ते हरिपदरसिकाः स्वर्गताः कीर्तिशेषाः॥७॥

मीमांसाचार्यवर्याय श्रीमण्डनाय धीमते।
पाण्डेयमोहनेनायं पद्याञ्जलिः समर्प्यते॥८॥

□

विद्वन्मूर्धन्याः श्रीकालूराममहोदयाः

वाग्देवीवरदानलब्धयशसः प्राग्जन्मसंस्कारतः
काशीनाथबुधाग्रगण्यचरणौ संसेव्य श्रद्धान्विताः।
ये सिन्धौ पदकाव्यतीर्थपदवीं साहित्यविद्यामयुः
कालूराममहोदयाः सुसरलास्ते भान्ति भावोन्नताः॥१॥
हिन्दीकाव्यविशारदाः प्रगुरवः सारस्वते शैक्षणे
आचार्यप्रमुखाश्च देववचसो मीरोच्चविद्यालये।
कौमुद्याश्च सरस्वतीपरिषदो विख्यातसम्पादकाः
कालूराममहोदयाः सुसरलास्ते भान्ति भावोन्नताः॥२॥
ख्रिष्टाब्दे वसुदेवनन्दवसुधे सिन्धुप्रदेशात्पुरा
आयाता मरुनाम्नि जोधनगरे ज्ञानप्रदानाय ये।
तत्रत्ये दरबार-संस्कृत-महाविद्यालयेऽपाठयन्
कालूराममहोदयाः सुसरलास्ते भान्ति भावोन्नताः॥३॥
आंग्लानां वचसां समस्तनियमा ज्ञातास्तथा ज्ञापिता
यैर्लब्धं पदमेम० ए० मणिरथो हिन्द्यां तथा संस्कृते।
आचार्याः कविवाक्षु यैश्च रचिताः श्लोकाश्चमत्कारकाः
कालूराममहोदयाः सुसरलास्ते भान्ति भावोन्नताः॥४॥
नित्यं छात्रविबोधकर्मनिपुणाः शैल्या समुत्कृष्टया
विज्ञानाचरणस्वरूप - वचनैश्चेतःसमुत्कर्षकाः।
व्याख्यातार इमे हि साम्प्रतमहो सेवानिवृत्तास्तथा
कालूराममहोदयाः सुसरलास्ते भान्ति भावोन्नताः॥५॥

□

टिप्पणी :

२०.१२.१९७५ दिनाङ्के योधपुरस्थश्रीदरबारसंस्कृतमहाविद्यालयेऽभिनन्दनपत्रं समर्पितम्।

प्रो. रामचन्द्रद्विवेदाः

आम्नायाभिज्ञवर्यान् मनुविकृतिपटून् मन्त्रतत्त्वार्थबोधान्
ब्रह्मज्ञान् ब्रह्मरूपान् पदविषयजुषः शब्दशास्त्रावतंसान्।
नानालङ्कारसक्तान् नवकवनकृतो भावगाम्भीर्यभाजो
वेदान्तागारदीपान् वयमपि विनुमो रामचन्द्रद्विवेदान्॥१॥

सर्वप्राग् लक्ष्मणाख्ये "लखनउ-नगरे" विश्वविद्याप्रकेन्द्रे-
आचार्यान् देववाण्या बुधनिकरनुतान् छात्रबोधप्रदातॄन्।
राजस्थाने च पश्चाज्जयपुरनगरे विश्वविद्याप्रकेन्द्रे-
आचार्यान् विज्ञवन्द्यान् वयमपि विनुमो रामचन्द्रद्विवेदान्॥२॥

अर्वाचीनार्थरूपं मधुरपदयुतं निर्मितं यैः सुकाव्यं
यैर्दत्तः शोधबोधः सुगहनविषयश्छात्रवृन्दाय शश्वत्।
ये विद्वाँसः सुधीन्द्रा नयविनययुताः सत्कृता राष्ट्रनाथैः
स्वर्गस्थान् तान् प्रपूज्यान् वयमपि विनुमो रामचन्द्रद्विवेदान्॥३॥

कविता निर्मिता नैका रागवामासतीप्रथाः।
राजन्तां देवलोके ते धर्मतत्त्वप्रदर्शकाः॥४॥

द्विवेदाय द्विजेन्द्राय, शोधबोधाय धीमते।
शर्मणे रामचन्द्राय, कीर्यते सुमनोऽञ्जलिः॥५॥

□

टिप्पणी :

९.१०.१९९३ राजस्थानविश्वविद्यालयद्वारा समायोजितायां श्रद्धाञ्जलिसमर्पणसभायां प्रो.रामचन्द्रद्विवेदाय प्रदत्तः सुमनोऽञ्जलिः।

वैयाकरणशिरोमणयः श्रीगङ्गाधरभट्टाः

व्याकृत्यम्भोधिरत्नप्रचुरतमविभाभासमानाः समाना
ज्ञानालङ्कारभासो मधुरतमगिरा सस्मितं भाषमाणाः।
आचार्या माननीयाः सुरमधुरवचःसङ्गमाध्यक्षवर्याः,
नोनूयन्तेऽभिवन्द्याः सकलबुधनुता भट्टगङ्गाधरास्ते॥१॥

भट्टश्रीरामचन्द्रोदवसितमभितो भासितं जन्मदीप्त्या
जाते यज्ञोपवीते श्रुतिमनुपठनं यैः कृतं ब्रह्मसिद्ध्यै।
स्वीयात्तातादधीतं पदप्रकृतियुतं शब्दशास्त्रं सभाष्यं,
वावन्द्यन्तेऽभिरूपा बुधकुलमणयो भट्टवंशावतंसाः॥२॥

छात्रा अध्यापिता यैर्गुरुसमधिषणैर्विश्वविद्यालये च
सन्धित्सुभ्यः प्रदत्तो विविधविषयकः शोधबोधो मुदा यैः।
हिन्द्यां गौराङ्गवाण्यां सुरगिरि निपुणा लेखकाः कीर्तिभाजो,
नंनम्यन्ते सखायः सरसमृदुहृदो भट्टगङ्गाधरास्ते॥३॥

साहित्यं यैरधीतं कविसमययुतं स्वेच्छया काव्यतत्त्वम्,
हृद्ये गद्येऽनवद्ये सुरगिरि लिखिता भावपूर्णा निबन्धाः।
रम्यं सम्पादकत्वं विहितमविरतं पत्रिकाणां मुदा यैः
तोष्टूयन्ते सखायो बहुविषयविदो भट्टगङ्गाधरास्ते॥४॥

सम्माना यैरवाप्ताः प्रचुरधनयुता राष्ट्रिया राजकीयाः,
संलापा यैश्च सार्धं समजनिषत मे व्याकृतौ काव्यशास्त्रे।
स्वर्याता ये हि मन्ये सकलसुरगणान् व्याकृतेः पाठनार्थम्,
स्मर्यन्ते मित्रवर्या हरिपदरसिका भट्टगङ्गाधरास्ते॥५॥

□

प्राणाचार्याः स्वामिरामप्रकाशाः

आयुर्वेदाब्धिरत्नप्रचुरतमविभाभासमानाः समाना
दैवीवाणीविलासा मधुरतममनोभावलेखप्रशस्ताः।
सञ्जीवन्याः प्रयोगैर्विषमगदहराः प्राणसञ्चारदक्षा
वैद्या रामप्रकाशा विसृमरयशसः स्वामिवर्या विभान्ति॥१॥

लक्ष्मीरामादवाप्ता सकलहितकरी वैद्यविद्या समस्ता
पीठाचार्यत्वमाप्तं गदहररचनागाररक्षा कृता यैः।
राजस्थाने विशाले जयपुरनगरे विश्वविद्यालये यै-
रायुर्वेदप्रधानं पदकमधिगतं ते हि वैद्याः प्रबन्द्याः॥२॥

साहित्ये व्याकृतौ ये प्रखरमतिजुषः पूर्णदक्षा गुरुभ्यो
वेदान्ते धर्मशास्त्रे जगति समभवन् विश्रुताः सुश्रुतेन।
आयुःशिक्षा - प्रकेन्द्रे जयपुरनगरे पूर्व-निर्देशकास्ते
प्राणाचार्या रसज्ञा रविकिरणानिभा भान्तु रामप्रकाशाः॥३॥

आक्रान्ता नैकरोगैर्भुवि नरनिकराः श्लेष्मपित्तानिलोत्थैः
पूर्वं ज्ञात्वा निदानं हितकरमगदं ये च दत्त्वा नितान्तम्।
कुर्वन्त्येतानरोगान् सुललितवपुषः पुण्यपीयूषहस्ता
राजन्तां भारते ते गदहरकुशला रुक्प्रतीकारसिद्धाः॥४॥

आरोग्यं धर्ममूलं कथयति सततं सर्वलोकोपकारी
भैषज्यं पथ्ययुक्तं समुपदिशति यो रोगिणा सेवनीयम्।
यक्ष्मार्शःकुष्ठपामाश्वयथुवमिरुजां सर्वथा नाशकारी
श्रीदादूपन्थरत्नं जगति विजयतामेष रामप्रकाशः॥५॥

ग्रन्थाश्चैकित्सिका यैर्गुरुसमधिषणैः पाठिताः शोधरीत्या
कार्ये प्रायोगिकेऽपि प्रमुखवनरुहा वीरुधो बोधिता यैः।
येषां सर्वेऽपि शिष्या निशितमतिजुषः प्रोन्नतं स्थानमापुः
शोभन्ते स्वामिवर्याः सकलहितकरास्ते हि रामप्रकाशाः॥६॥

गद्ये पद्येऽनवद्ये नवकवनविधौ लेखने ये च दक्षा
वाराणस्यां च दिल्ल्यां गदहरभवने कालिकाख्यातदेशे।
सम्मानो यैश्च लब्धः पदधनसहितो नैकसंस्थाप्रदत्तो
द्योतन्ते भारते ते परहितपटवो वैद्यरामप्रकाशाः॥७॥

विषमगदचिकित्साचक्रवर्ती मनीषी
वितरति निजबोधं शिष्यवर्गाय शश्वत्।
कलित-करुणया यो लोकसेवां विधत्ते
स हि जयतु महात्मा वैद्यरामप्रकाशः॥८॥

पीयूषहस्ताय कवीश्वराय रोगापहाराय बुधप्रियाय।
श्रीरामभक्ताय जगद्धिताय रामप्रकाशाय नमो नमस्ते॥९॥

रामप्रकाशवैद्याय स्वामिवर्याय धीमते।
''पाण्डेय'' मोहनेनेयं काव्यमाला समर्प्यते॥१०॥

□

देवर्षि-कलानाथशास्त्रिणः

रामादेव्याः सुकुक्षौ कविवरमथुरानाथभट्टात्प्रजातो
जाते यज्ञोपवीते समुचितविधिना वेदपाठं प्रकुर्वन्।
श्रीवाग्देवीप्रसादाद् गुरुपददयया प्राप्तशास्त्रार्थसारो
देवर्षिर्भट्टवर्यो जगति विजयते श्रीकलानाथशास्त्री॥१॥

पूज्यश्रीजगदीशशर्मविबुधात् साहित्यसारस्वतं
मान्यश्रीहरिशास्त्रिकोविदमणेश्छन्दःप्रयोगं पुनः।
धर्मोद्धारधुरन्धराद् गिरिधराद् वेदान्तविद्यां मुदा-
अङ्ग्रेजीं समधीत्य यो गुरुवरात् तामेव सोऽध्यायत्॥२॥

भाषासंस्कृतयोर्निदेशकचराः साहित्यविद्यार्णवाः
व्याख्या-नाट्य-कथा-निबन्धनिपुणाः सम्पादका विश्रुताः।
पूर्वं संस्कृतसङ्गमस्य विबुधा अध्यक्षवर्या इमे
राजन्ते विनयोन्नता जयपुरे देवर्षिचन्द्रा मुदा॥३॥

संस्थानैर्यो विभिन्नैर्बहुविधपदकैः सत्कृतो नैकवारम्-
उत्कृष्टो लेखको यः सुरमधुरगिरः सत्कृतो राज्यपालैः।
गैर्वाणीगीर्गरिष्ठो नयविनययुतः सत्कृतो राष्ट्रनाथै-
र्देवर्षिर्भासतेऽसौ कविकुलतिलकः श्रीकलानाथशास्त्री॥४॥

कलानामावासो विहितमृदुहासो मधुवरो
विलासो भाषाणां खलवचनपाशो बुधवरः।
प्रकाशो लेखानां नवकवनलासः कविवरः,
कलानाथः शास्त्री कविजनविकासो विजयते॥५॥

□

याज्ञिकसम्राजः शिवदत्तजोशिनः

एकादश्यां जनित्वात् प्रथमपरिचिता ग्यारसीलालनाम्ना
पश्चाद्रुद्रानुरागाच्छिव इति पदतो दत्तशब्दोत्तरस्थाः।
नाथूलालस्य पुत्राः श्रुतिमनुपठने रम्यमाधुर्यभाजः
स्मर्यन्ते पण्डितास्ते जयपुरनगरे प्राज्ञवर्यैर्महद्भिः॥१॥
चातुर्वेदकुलोद्भवाद् गुरुवराच्छ्रीरामकृष्णाह्वयात्
नित्यं यैः पठिता स्वरैश्च सहिता शुक्ला श्रुतिर्याजुषी।
नानामण्डपकुण्डनिर्मितिविधिर्लब्धश्च शीघ्रं मुदा
स्मर्यन्ते शिवदत्तशर्मविबुधास्ते स्वर्गता याज्ञिकाः॥२॥
राजस्थाने विशाले विविधजनपदे भारतीयेऽन्यदेशे
हेरम्बोमेशविष्णुप्रभृतिमखभुजां कारिता यैश्च यज्ञाः।
शुक्ले मासे नभस्ये शुभशरतिथिके पूज्यसप्तर्षिपूजा-
यागोद्धर्षं विधाय प्रमुदितहृदयैः सत्कृताः पण्डिता यैः॥३॥
श्रौतीसंस्कृतिरक्षणाय विदुषां संघश्च यैः स्थापितः,
अन्ताराष्ट्रियवित्तवेदविदुषां सम्मेलनं कारितम्।
तस्माद् गौरवमेधितञ्जयपुरं श्रद्धास्पदं भारते,
स्मर्यन्ते शिवदत्तशर्मविबुधास्ते कीर्तिशेषाः सदा॥४॥
नानामण्डलकुण्डपात्रविविधा लेख्यान्विताऽऽदर्शिनी
नैकस्थाननियोजिता श्रुतिविदां ज्ञानाय सम्वर्धिता।
श्रीनारायणशर्मणे गुरुमुदे दत्ता च या वर्धते
स्मर्यन्ते बिडलापुरोहितवरा यज्ञादिकार्येषु ते॥५॥
गालीदानविचक्षणाः कविवरप्रह्लादशिष्या इमे
व्यायामेन सुपुष्टगात्ररुचिरा मल्लाहवे विश्रुताः।
यष्टीचालनदाक्ष्यलब्धयशसो लीलानृसिंहाः पुनः
स्मर्यन्ते शिवदत्तशर्मविबुधा नानागुणालङ्कृताः॥६॥
पूज्याय भ्रातृवर्याय शिवदत्ताय जोशिने।
धीमते मोहनेनायं स्नेहाञ्जलिः समर्प्यते॥७॥ □

टिप्पणी : श्रीजोशिनः प्रथमपुण्यतिथौ मार्चमासे १९९९ वर्षे प्रकाशितायां 'याज्ञिकसम्राट् शिवदत्तजोशी' पत्रिकायां प्रकाशितानि पद्यानि।

भाषाविशेषज्ञाः श्रीराजेन्द्रशङ्करभट्टाः

हिन्दीसाहित्यवार्धिप्रभवमणिविभाभासमानाः समानाः
हिन्दीसाहित्यसम्मेलनवरसमितेर्ये पुराध्यक्षवर्य्याः।
वृत्तान्ता बोधनीया इति सुकृतधिया लोकवाण्या प्रशस्ताः
श्रीराजेन्द्रेशभट्टाः कविवरनिवहैः सत्कृता भान्ति मञ्चे॥१॥
नैके ग्रन्थाः प्रणीता विविधविषयकाः शोधबोधोपयुक्ताः
सम्मानाश्चोपलब्धा विपुलवसुयुता नैकसंस्थाभिरेभिः।
श्रेष्ठाः सम्पादकास्ते निशितमतिजुषः पत्रकारेषु मुख्या
भाषाविद्भिः प्रपूज्या जयपुरनगरे भान्ति राजेन्द्रभट्टाः॥२॥
दीप्तित्वादेव राजा बहुतरविभवादिन्द्रशब्देन युक्तः
शङ्कर्ता शङ्करेति प्रवचननिपुणाद् भट्ट एष प्रसिद्धः।
भाषाशास्त्रप्रवीणः कवनविधिपटुः शब्दचित्रप्रणेता
श्रीमद्राजेन्द्रभट्टो जयति जयपुरे राष्ट्रभाषानुरागी॥३॥

राणाप्रताप - जयसिंह - सुभाषबोस-
सञ्जीवनीत्रयमिदं भवता प्रणीतम्।
ट्रस्टेन नेशनल-पुस्तकनामधर्त्रा
प्राकाशितं सकललोकविवेकवृद्ध्यै॥४॥
साहित्यमार्तण्ड इति प्रसिद्धः
साहित्यशास्त्रीति तथा प्रतीतः।
हिन्दीमनीषीति विभूषितोऽयं
राजेन्द्रभट्टो जयतात् सुविद्वान्॥५॥
राष्ट्रभाषाप्रसाराय येन जीवनमर्पितम्।
तस्मै राजेन्द्रभट्टाय कीर्यते सुमनोञ्जलिः॥६॥

□

वैद्यवर्याः श्रीफूलचन्द्रशर्माणः

आयुर्वेदाब्धिरत्नप्रचुरतमविभाभासमानाः समाना
लक्ष्मीरामस्य शिष्याः प्रमुखगदहराः पुण्यपीयूषहस्ताः।
ग्रन्थान् चैकित्सिकान् ये समुचितविधिनाऽपाठयन् छात्रवृन्दं
राजन्ते वैद्यवर्या जयपुरनगरे विश्रुताः फूलचन्द्राः॥१॥

बाल्ये यो भारतस्य प्रचुरमभिलषन् दासतापाशमुक्ति-
मादिष्ट्या शिक्षकस्य स्वगणपरिवृतश्चक्र आन्दोलनं सत्।
कारावासे निबद्धः पुनरपि च तथा मोचितो रक्षिवर्गैः
सम्मान्यो वैद्यवर्यो जयपुरनगरे राजते फूलचन्द्रः॥२॥

हीरालालादिमुख्यैर्जनप्रतिनिधिभिः प्रेरिताः कर्मनिष्ठाः
कुर्वन्तः सुव्यवस्थां मनुजपरिषदो ये प्रजामण्डलस्य।
देशान्निष्कासिता ये पुनरपि मिलिताश्चक्रुरान्दोलनन्ते
द्योतन्ते देशभक्ता जयपुरनगरे फूलचन्द्राः सुवैद्याः॥३॥

संस्थानाद् राष्ट्रियाद् यो गदहरभिषगाचार्यवर्यो हि जातः
पश्चात् सञ्जीवनाख्यं गदहरणपदं स्थापयामास नैजम्।
निर्माणं भेषजानां समुचितविधिना योऽकरोत् सच्चिकित्सां
श्रीमान् श्रीफूलचन्द्रो जयति जयपुरे वैद्यवर्यो मनीषी॥४॥

आयुर्वेदालये ये प्रथमपदजुषो वैद्यवर्या अभूवन्
दक्षा रोगोपचारे सुपठितचरका सुश्रुते विश्रुता ये।
सम्माना यैरवाप्ता प्रचुरवसुजुषो राष्ट्रिया राजकीयाः
शोभन्ते ते रसज्ञा जयपुरनगरे फूलचन्द्रा मनोज्ञाः॥५॥

विप्राणां खाण्डलानां सुरमधुरगिरः सर्वकारात्प्रयत्नाद्-
भूमिं विद्यालयार्थं विकसितनगरे प्राप विद्याधराख्ये।
पूर्वोपाध्यक्षवर्यः प्रमुखपरिषदः खाण्डलब्राह्मणानां
सम्मान्यो वैद्यवर्यो जयति जयपुरे फूलचन्द्रो रसज्ञः॥६॥

लेखान् पत्रकपत्रिकासु विपुलान् मुद्रापयन्तो मुदा
रोगाणां शमनं विधाय सततं स्वस्थान् जनान् कुर्वते।
श्रीमत्खाण्डलविप्ररत्न - बदरीनारायणस्यात्मजा
भ्राजन्ते बुधवन्दिता जयपुरे श्रीफूलचन्द्रा बुधाः॥७॥

वैद्यानामधिवेशनं परिषदः कुर्वन्ति ये नैकशः
आयुर्वेदविकासमार्गणपराः कोषाभिवृद्धौ रताः।
आचार्या भिषजां कुशाग्रमतयो लोकोपकारे रताः
शोभन्ते जनवन्दनीयचरणा श्रीफूलचन्द्राः सदा॥८॥

सद्वैद्याय रसज्ञाय फूलचन्द्राय धीमते।
पाण्डेयमोहनेनेदं पद्याष्टकं समर्प्यते॥९॥

□

ब्रह्मर्षयः श्रीहरिकृष्णाः (छङ्गाणी)

नन्दाष्टग्रहभूमिभिः परिमिते सम्वत्सरे वैक्रमे
मासे श्रावणसंज्ञके सितदले जातास्तृतीयातिथौ।
पित्रोर्भक्तिपरायणाः कविवराः कारुण्यभावाञ्चिताः
शोभन्ते हरिकृष्णशर्मविबुधा ब्रह्मर्षिवर्याः सदा॥१॥
मान्याः पुष्करणाग्रजन्मविदुषां वंशप्रदीपा मुदा
दैवज्ञा लटियालमातृकृपया सिद्धेश्वराः सज्जनाः।
वेदव्याकरणादिशास्त्रनिपुणा ज्योतिर्महाज्योतिषो
द्योतन्ते हरिकृष्णशर्मविबुधा ब्रह्मर्षिवर्याः सदा॥२॥
ये छात्रान् समपाठयन् सुरगिरं नैकासु संस्थासु च
लेखान् पत्रकपत्रिकासु विविधान् प्राकाशयन् संस्कृतेः।
नानाशास्त्रविचक्षणाः सुकृतिनः कार्तान्तिकाः पण्डिता
भ्राजन्ते हरिकृष्णशर्मविबुधा ब्रह्मर्षयस्ते सदा॥३॥
रेखाज्ञानविदो भविष्यकथनात् प्राप्तप्रतिष्ठाधनाः
होराबोधविचक्षणा विधिविदः सम्मानिताः सादरम्।
ज्योतिःशास्त्रसमुद्रमन्थनपरा मौहूर्तिका विश्रुता
राजन्ते हरिकृष्णशर्मविबुधा ब्रह्मर्षिवर्या इमे॥४॥
वाग्देवीदयया गुरोश्च कृपया त्रैलोक्यवार्ताविदो
नानादेशविदेशलब्धयशसः शिष्यैः प्रशिष्यैर्नुताः।
कार्याकार्यविचारचारुचरिता लोकोपकारे रता
भ्रेजन्ते हरिकृष्णशर्मविबुधा ब्रह्मर्षिवर्याः सदा॥५॥
छङ्गाणीवंशरत्नाय हरिकृष्णाय धीमते।
पाण्डेयमोहनेनेयं पद्यपुष्पस्रगर्प्यते॥६॥

□

श्रीमाधवानन्द-गौरवम्

ग्रामे टीबावसत्यां स्वजननविभया भासितं पितृगेहं
जाते यज्ञोपवीते स्वरविधिसहिता वेदमन्त्रा अधीताः।
यैः संसारादविरक्तैर्निजजनकगृहं बाल्यकाले विहाय
वाराणस्याञ्च गत्वा शिवजगुरुपदात् सर्वविद्या अवाप्ताः॥1॥

यः शास्त्राणां रहस्यं विविधविषयकं ज्ञातवान् पण्डितेभ्यो
बौद्धानां दर्शनस्य ह्यनुचितपठनान्नास्तिको यो हि जातः।
नीहाराद्रौ च पश्चाद् बहुकठिनतया योगविद्यामवाप
नाथेभ्यः सुन्दरेभ्यो हरपदकृपया प्राप मत्स्येन्द्रदीक्षाम्॥2॥

प्रादाच्चारित्र्यशिक्षां परमहितकरीं यः स्वयंसेवकेभ्यः
स्पृश्यास्पृश्यस्य भावं सकलजनहृदो लुप्तवान् यः प्रयत्नैः।
राष्ट्रस्योत्थानकर्ता स्वजननवसुधागौरवोत्कर्षहेतोः
सङ्घाध्यक्षो महात्मा जगति विजयते माधवानन्दशर्मा॥3॥

भिन्नस्थाने स्वरूपं भुवि युगपदहो दर्शितं योगसिद्ध्या
हिन्द्यां गौराङ्गवाण्यां सुरगिरि रचिता नैकशास्त्रप्रबन्धाः।
स्थाने स्थाने प्रदत्तं बहुविधविषयं भाषणं ग्रन्थसारं
सम्मान्यो योगिराजो जगति विजयते माधवानन्दशर्मा॥4॥

एतद्देशप्रसूता यवनप्रभृतयो हिन्दवस्तेऽपि सन्ति-
ऐक्यं पुंसामजस्रं भवतु रिपुबलाद् देशरक्षानिमित्तम्।
इत्थं सौहार्दमासीत् सकलजनकृते यस्य चित्ते सदैव
सोऽयं विज्ञो मनस्वी जगति विजयते माधवानन्दशर्मा॥5॥

पृथ्वीगर्तस्थवित्तं गुरुपदकृपयाऽबोधयद् दिव्यशक्त्या
सिद्धीनां यो हि वेत्ता नयविनययुतः शिष्यवर्गैः प्रणम्यः।
भक्तेभ्योऽभीष्टदाता सकलबुधनुतो गौडविप्रावतंसः
सेवाभावी यशस्वी जगति विजयते माधवानन्दशर्मा॥6॥

उद्योगवृद्धिः समता समाना निष्पक्षमैत्री परराष्ट्रबद्धा।
शान्तिः प्रशिष्टिः समुदारभावः सर्वञ्च प्रोक्तं गुरुमाधवेन॥7॥

□

यशस्वी भैरोंसिंहः

ग्रामे खाचर्यवासे शुभजनिमणिना सीकरे मण्डले च
मासे त्वक्टूबराख्येऽनलयुगलनवेलामिते चेशवीये।
दिक्पालान् द्योतमानः प्रखरमतितया प्राप्नुवन् राजनीतिं
स्वीकुर्वन् राजसेवां जगति विजयतां भैंरुसिंहो यशस्वी॥१॥
श्रीदातारामदुर्गाज्जयपुरनगरे कृष्णपोलाख्यभागाद्
देशान्माधोपुराद् यः सुविधिपरिषदो मान्यनेता सदस्यः।
राज्यान्मध्यप्रदेशान्नृपतिपरिषदो नेतृवर्य्यः सदस्य
उत्साही संस्कृतज्ञो जगति विजयतां भैंरुसिंहो मनस्वी॥२॥
राजस्थानप्रदेशे जयपुरनगरे पाटलालेख्यरम्ये
प्रारम्भो येन घुष्टः सुरमधुरगिरो विश्वविद्यालयस्य।
राजा शेखावतोऽयं नयविनययुतो भा.ज.पा-कर्णधारः
सम्मान्यो मुख्यमन्त्री जगति विजयतां भैंरुसिंहः प्रतापी॥३॥
गोहत्या येन रुद्धा प्रखरविधिबलाद् दण्ड्यते दोषिवर्गैः
येनारब्धाः सुलाभाः कृषकहितकृतो योजना नैकरूपाः।
आनीतं सूर्यपुत्र्या मधुरतमजलं राज्यभागोपयुक्तं
सोऽयं श्रीभैंरुसिंहो जगति विजयतां मुख्यमन्त्री मनीषी॥४॥
नाथूलालस्य पुत्रो ह्यपहरणकृतो मोचितो येन मिर्धा
सीमारक्षाविधाने सबलभटवरैर्यन्त्रितो दस्युवर्गः।
येनातङ्कस्य नाशः सपदि विरचितो नीतिमार्गेण सम्यक्
तेजस्वी मुख्यमन्त्री जगति विजयतां भैंरुसिंहो नृसिंहः॥५॥

□

टिप्पणी :

७.१०.१९९८ वर्षे सीकरमण्डलान्तर्गते रलावतास्थाने रावशेखाजीप्रतिमाप्रतिष्ठामहोत्सवस्य शुभावसरे श्रीभैरोंसिंहमहोदयानां पञ्चसप्ततिवर्षीयजन्मदिवसमुपलक्ष्य हीरकजयन्तीसमारोहे प्रस्तुतानि पद्यानि।

प्रतापी भैरोंसिंहः

खाचर्यावाससंज्ञे रुचिरजनपदे मण्डले सीकराख्ये
मासे त्वक्टूबराख्ये गुणयुगलनवेलामिते चेशवीये।
दिक्पालान् द्योतमानो निजजनिविभया क्षात्रवंशप्रदीपो
राजा शेखावतोऽयं स्वजनकभवने भासयामास बन्धून्॥१॥
श्रीवाग्देवीप्रसादाद् गुरुपदकृपया राजनीतिं प्रलभ्य
राजस्थानस्य योऽभूत् सकलहितकरो मुख्यमन्त्री त्रिवारम्।
मान्यः शेखावतोऽयं नयविनययुतो भा.ज.पा. कर्णधारः
भैरोंसिंहः प्रतापी जगति विजयते राष्ट्रनेता मनस्वी॥२॥
गोहत्या येन रुद्धा समुचितविधिना दण्डितो दोषिवर्ग
आनीतं सूर्यपुत्र्या मधुरतमजलं राज्यभागोपयुक्तम्।
येनारब्धाः सुलाभाः कृषकहितकरा योजना नैकरूपा
भैरोंसिंहः प्रतापी जगति विजयते राष्ट्रनेता यशस्वी॥३॥
राजस्थानप्रदेशे जयपुरनगरे पाटलालेख्यरम्ये
राज्यस्योत्थानकर्त्रा सुरमधुरगिरो विश्वविद्यालयश्च।
येनोर्दूसङ्गमोऽपि प्रखरमतिमता स्थापितो वक्फबोर्डे
भैरोंसिंहः प्रतापी जगति विजयते मुख्यमन्त्री मनस्वी॥४॥
राष्ट्रोत्थानपरायणा नयविदः कर्तव्यनिष्ठाः सदा
कार्याकार्यविचारसारचतुरा दाक्षिण्यभावाञ्चिताः।
श्रीमन्तः प्रथितोपराष्ट्रपतयः सम्मानिता नेतृभी
राजन्ते नितरां कुशाग्रमतयः शेखावता भारते॥५॥
श्रीरामानन्दनाम्नः सुरमधुरगिरो विश्वविद्यालयस्य
श्रीमन्नारायणेन प्रभुपददयया सद्म निर्मापितं यत्।
साधूनां पण्डितानां प्रमुखधनवतां मन्त्रिणां मेलनेऽस्मिन्
भैरोंसिंहो विधत्ते सकलहितकृते तस्य लोकार्पणं सत्॥६॥ □

टिप्पणी : भारतदेशस्य उपराष्ट्रपति-श्रीभैरोसिंहशेखावतस्य अशीतिवर्षपूर्तेरमृतमहोत्सवावसरे २३.१०.२००३ अभिनन्दनग्रन्थे प्रकाशनाय प्रेषितानि पद्यानि

विभातु कैलाशपतिर्मनीषी

श्रद्धां साधुषु वर्धयन्नतितरां प्रीतिं समुल्लासयन्
हिंसामाशु निवारयन्निरुपमां मैत्रीञ्जनेषून्नयन्।
गाढध्वान्तसमाकुलस्य जगतस्त्रासं निरस्यन् सदा
श्रीकैलाशपतिर्विभातु मतिमान् श्रीराज्यपालो मुदा॥१॥

सौख्यं सर्वविधं विहाय विपदामाडम्बरं धारयन्
तन्वानो निजदेशगौरवभरं सर्वास्ववस्थास्वपि।
राष्ट्रोत्थानविकासकार्यनिरतो गीर्वाणवाणीप्रियः
श्रीकैलाशपतिर्विभातु नयवान् श्रीराज्यपालो मुदा॥२॥

जात्या ब्राह्मणयोग्यकार्यनिरतो वृत्त्या तु राजन्यवद्
राज्यं पालयतीह नीतिनिपुणो दाक्षिण्यभावोज्ज्वलः।
कार्याकार्यविचारसारचतुरो लोकोपकारे रतः
श्रीकैलाशपतिर्विभातु गुणवान् श्रीराज्यपालो मुदा॥३॥

सच्छास्त्रसन्मार्गविचारशीलो न्यायप्रवीणो बुधवृन्दवन्द्यः।
श्रीराज्यपालो जयपत्तनेऽस्मिन् विभातु कैलाशपतिर्मनीषी॥४॥

प्रहीयते चेदिह दिव्यदृष्टि-र्महीयते रम्यमिदं द्वयं वै।
सा भारती भारतभूकवीनां विभाति कैलाशपतिर्हि मिश्रः॥५॥

आप्टे-विशेषाङ्कमिमं द्वितीयं लोकाय मुञ्चन्निह भारतीयम्।
उदारचेता जनपालकोऽयं विभाति कैलाशपतिर्हि मिश्रः॥६॥

□

टिप्पणी :

'भारती' संस्कृतपत्रिकायाः आप्टेजन्मशताब्दीविशेषाङ्कस्य द्वितीयखण्डस्य गुर्जर-राजस्थानराज्यपालैः म.म. श्रीकैलाशपतिमिश्रैः लोकार्पणावसरे श्राविताः श्लोकाः।

न्यायपालाः श्रीवेदपालत्यागिनः

आधारा धर्मभानोर्नयसलिलयुताः सिन्धवः सत्यरक्ता
धैर्याधिष्ठातृदेवाः स्वजननवसुधागौरवोत्कर्षभाजः।
प्रद्योतन्ते प्रमेधाप्रमहिममहिताः कर्मयोगिप्रतीता
न्यायाधीशा गिरीशा विविधविधिविदस्त्यागिनो वेदपालाः॥१॥

ज्ञात्वा सम्यङ् नराणामुचितमनुचितं कर्म वाग्मिप्रवादै-
र्ये सन्न्यायं गृहीत्वा विदधति सततं निर्णयं स्वच्छमत्या।
भ्राजन्ते तेऽत्र लोके बुधजनगुरवः स्वर्गलोकात्प्रपन्ना
न्यायाधीशा गिरीशा विविधविधिविदस्त्यागिनो वेदपालाः॥२॥

निष्पक्षत्वाद् दरिद्रे विपुलधनयुते मित्रवर्गे रिपौ वा
निन्द्यन्ते येन सद्भिर्विमलमतिजुषः कीर्तिभाजो भवन्ति।
राजन्तां ते स्वलक्ष्यादविचलितपदाः प्रोच्चभावाः सदैव
न्यायाधीशा गिरीशा विविधविधिविदस्त्यागिनो वेदपालाः॥३॥

राजस्थाने विशाले विविधजनपदे न्यायरत्नञ्च येषा-
अन्यायध्वान्तपूर्णे नरमनसि सदा द्योतवर्षं तनोति।
तेऽत्रागत्याद्य भान्ति प्रखरगुणगिरा प्रीणयन्तो हि सर्वान्
न्यायाधीशा गिरीशा विविधविधिविदस्त्यागिनो वेदपालाः॥४॥

कुलकमलविकाशे नीतिरत्नं प्रभास्वत्
कपटतिमिरनाशे जायतां सूर्यतुल्यम्।
गुणिजन-महितानां श्रीमतामुत्सवेऽस्मिन्
वयमिह वितरामः स्वागतं छात्रसंघे॥५॥

□

टिप्पणी :

४.१२.७२ दिनाङ्के योधपुरस्थसंस्कृतमहाविद्यालये छात्रसंघसमारोहे अभिनन्दनपत्रं समर्पितम्।

न शोको नामधेये

न शोको नामधेये सुकृतकृतिपथे नास्ति शोकस्य वार्ता.
शोको यातोऽधुना वै विनतिपरवशान् भा.ज.पा. कार्यकर्तॄन्।
नास्ते शोकाभिभूतः सकलजनपदो यस्य राज्ये विशाले
जाता लोका अशोकाः स जयति सततं मुख्यमन्त्री ह्यशोकः॥१॥

भाण्डागारे निगूढो विविधवसुचयो वित्तलोभाद् वणिग्भिः
र्येनोच्चायुक्तवर्गैर्दलबलसहितैः कारितो राज्यनिघ्नः।
योऽकार्षीद् द्वयब्दहीनां तरुणजनकृते राज्यसेवां हि सद्यो
मान्यो नीतिप्रवीणः स जयति सततं मुख्यमन्त्री ह्यशोकः॥२॥

योग्या निर्वाचिता ये रुचिकरविषये मन्त्रिणस्ते नियुक्ताः
क्षेत्राणां सेचनार्थं खयुगलघटिका येन दत्ता च विद्युत्।
एकस्मिन्नाडशोकस्तु समरकरणात् प्राप शोकं महान्तं
सत्याहिंसानुरक्तः प्रथमपरवशस्त्वं हि साक्षादशोकः॥३॥

□

शिक्षामन्त्री श्रीघनश्यामतिवाडी

धन्यो मान्यो वदान्यः स्वकुलदिनमणिर्विप्रवंशावतंसो
व्याख्याने चातिदक्षो नयविनययुतो राजनीतिप्रवीणः।
धीरो वीरो गभीरः सरसमृदुलहृत् संस्कृतोत्थानकर्ता
शिक्षामन्त्री तिवाडी जयति जयपुरे श्रीघनश्यामशर्मा॥१॥

वैधव्यं याभिराप्तं ह्यनुचितविधिना याश्च मुक्ताः स्वकान्तै
ताभ्यो दत्त्वा नियुक्तिं सकलहितकरः पुण्यमापन्मनस्वी।
शिक्षायाः प्राथमिक्याः खखशरकुमिता विद्यमानाश्च पूर्वं
आसन् विद्यालया ये सुरमधुरगिरः प्रोन्नतास्ते प्रयत्नैः॥२॥

शिक्षाक्षेत्रे नियुक्ता बहुविषयविदः शिक्षकाः शिक्षिकाश्च
लक्ष्यश्चाध्यापकानां शरखकुनवयुग् वत्सरेऽस्मिन्नियुक्तेः।
शिक्षायाः सङ्कुलेऽस्मिन्नतिथिगृहकृते योजना निर्मिताश्च
छात्राणां पाठनार्थं सपदि परिषदः स्थापना शिक्षकाणाम्॥३॥

दत्तं यैः शतकोटिरूप्यकमितं गीर्वाणवाण्यै धनम्
प्रत्तं संस्कृतसङ्गमाय विपुलं नैजं धनं स्वेच्छया।
हिन्दूसंस्कृतिधर्मरक्षणपराः शिक्षाप्रसारे रताः
शिक्षामन्त्रिमहोदयाः सुमतयस्तेभान्ति भावोज्ज्वलाः॥४॥

दत्तं वित्तं यथेष्टं सुरमधुरगवीविश्वविद्यालयाय
राज्यं जातं प्रयत्नैः प्रथमपदधरं सर्वशिक्षाभियाने।
ज्ञानार्थं पाठनीयं सकलगुरुवरैः संस्कृतं संस्कृतेन
निर्देशोऽयं प्रदत्तो निशितमतिमता सर्वविद्यालयेभ्यः॥५॥

घनश्यामं समीहन्ते सस्यसम्पत्तिवृद्धये।
कृषकाः पण्डिताश्छात्राः शिक्षायै वृत्तये सदा॥६॥

शिक्षासंस्कृतिनिष्ठाय सीकरावाप्तजन्मने।
राजनीतिप्रवीणाय महिलोत्थानकारिणे॥७॥

पुत्रपौत्रादिभिः साकं सुखमाप्नोतु सर्वदा।
दीर्घायुष्यं समीहेऽहं श्रीमतां जन्मवासरे॥८॥

सर्वशिक्षाप्रसाराय श्रीघनश्यामशर्मणे।
पाण्डेयमोहनेनायं स्वाशीर्वादः प्रदीयते॥९॥

□□□

टिप्पणी :

मङ्गलवारः १९ दिसम्बर २००६ वर्षे श्रीतिवाडीमहोदस्य जन्मदिवसमुपलक्ष्य 'आरामगृहे' (Farm-House) समायोजिते समारोहे अभिनन्दनपत्रं प्रदाय पठिता आशिषः श्लोकाः।

पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'

राष्ट्रपतिसम्मानित, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजित

पितृमातृनाम – श्री दुर्गालाल शर्मा पाण्डेय,
माता- श्रीमती सूरज देवी

जन्म – 23 सितम्बर, 1934 ई., जयपुर (राज.)

योग्यता – साहित्याचार्य 1964, महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर (राज.)

कार्यक्षेत्र – प्राचार्यचर, संस्कृत शिक्षा, राजस्थान सरकार
उपाध्यक्षचर, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
अध्यक्ष, अखिलभारतीय वेदवेदाङ्गज्योतिष स्वाध्याय संस्थान, जयपुर
अध्यक्ष, श्री वैदिक संस्कृति प्रचारक संघ, जयपुर

कृतित्व – **पद्मिनी**– 'श्रीवाणी अलंकरण', वाचस्पति-पुरस्कार' एवं अखिल भारतीय पुरस्कार' योग्यतापारितोषिक प्राप्त ऐतिहासिक संस्कृत उपन्यास।
पत्रदूतम्– माघ-पुरस्कार प्राप्त खण्डकाव्य। विश्वप्रसिद्ध ईराक के खाड़ी युद्ध की घटना पर आधारित।
नतिततति – वर्णैकप्रधान मुक्तकचित्रकाव्य। विभिन्न देवों की स्तुति।
रसकपूरम् – ऐतिहासिक संस्कृत उपन्यास (अनूदित)। जयपुर रियासत से सम्बद्ध।
श्रीरामचरिताब्धिरत्नम्– महाचित्रकाव्य (आशुकवि पं. नित्यानन्द शास्त्री विरचित) की 'रत्नप्रभा' हिन्दी अनुवाद।
अन्य– संस्कार सोपान, 'श्रीहनुमत्पूजा-पद्धतिः', 'श्रीरामपूजा-पद्धतिः', 'श्रीगणेशपूजा-पद्धतिः', 'श्रीकृष्णपूजा-पद्धतिः', 'श्रीशिवपूजा-पद्धतिः', श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः'।

पुरस्कारः – 'राष्ट्रपतिसम्मान', 'श्रीवाणी अलंकरण', 'वाचस्पति-पुरस्कार', 'हारीतऋषिसम्मान', 'अखिल भारतीय पुरस्कार', अखिलभारतस्तरीय-विद्वत्सम्माननम्', 'प्रथम पुरस्कार-अखिल भारतीय समस्यापूर्ति स्पर्धा', 'माघ पुरस्कार', 'राज्यस्तरीय विद्वत्सम्मान एवं पुरस्कार', 'भट्ट मथुरानाथशास्त्रिसाहित्यसम्मान'

सम्मानोपाधियाँ – 'शास्त्रमहोदधि उपाधि', 'विद्यासागर'

निवास-सङ्केत – 2381, 'पाण्डेय भवन', खजाने वालों का रास्ता, जयपुर (राज.)
दूरभाष– 0141-2321151

राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर

Ideal Computer Centre, Jaipur

पं. मोहनलाल शर्मा 'पाण्डेय'

राष्ट्रपतिसम्मानित, वाचस्पतिपुरस्कारसभाजित

पितृमातृनाम – श्री दुर्गालाल शर्मा पाण्डेय,
माता- श्रीमती सूरज देवी

जन्म – 23 सितम्बर, 1934 ई., जयपुर (राज.)

योग्यता – साहित्याचार्य 1964, महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर (राज.)

कार्यक्षेत्र – प्राचार्यचर, संस्कृत शिक्षा, राजस्थान सरकार
उपाध्यक्षचर, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
अध्यक्ष, अखिलभारतीय वेदवेदाङ्गज्योतिष स्वाध्याय संस्थान, जयपुर
अध्यक्ष, श्री वैदिक संस्कृति प्रचारक संघ, जयपुर

कृतित्व – **पद्मिनी**– 'श्रीवाणी अलंकरण', वाचस्पति-पुरस्कार' एवं अखिल भारतीय पुरस्कार' योग्यतापारितोषिक प्राप्त ऐतिहासिक संस्कृत उपन्यास।
पत्रदूतम्– माघ-पुरस्कार प्राप्त खण्डकाव्य। विश्वप्रसिद्ध ईराक के खाड़ी युद्ध की घटना पर आधारित।
नतितति – वर्णैकप्रधान मुक्तकचित्रकाव्य। विभिन्न देवों की स्तुति।
रसकपूरम् – ऐतिहासिक संस्कृत उपन्यास (अनूदित)। जयपुर रियासत से सम्बद्ध।
श्रीरामचरिताब्धिरत्नम्– महाचित्रकाव्य (आशुकवि पं. नित्यानन्द शास्त्री विरचित) की 'रत्नप्रभा' हिन्दी अनुवाद।
अन्य– संस्कार सोपान, 'श्रीहनुमत्पूजा-पद्धतिः','श्रीरामपूजा-पद्धतिः', 'श्रीगणेशपूजा-पद्धतिः', 'श्रीकृष्णपूजा-पद्धतिः', 'श्रीशिवपूजा-पद्धतिः', श्रीदुर्गापूजा-पद्धतिः'।

पुरस्कारः – 'राष्ट्रपतिसम्मान', 'श्रीवाणी अलंकरण', 'वाचस्पति-पुरस्कार', 'हारीतऋषिसम्मान', 'अखिल भारतीय पुरस्कार', अखिलभारतस्तरीय-विद्वत्सम्माननम्', 'प्रथम पुरस्कार-अखिल भारतीय समस्यापूर्ति स्पर्धा', 'माघ पुरस्कार', 'राज्यस्तरीय विद्वत्सम्मान एवं पुरस्कार', 'भट्ट मथुरानाथशास्त्रिसाहित्यसम्मान'

सम्मानोपाधियाँ – 'शास्त्रमहोदधि उपाधि', 'विद्यासागर'

निवास-सङ्केत – 2381, 'पाण्डेय भवन', खजाने वालों का रास्ता, जयपुर (राज.)
दूरभाष– 0141-2321151

राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर

Ideal Computer Centre, Jaipur